दलित अस्मिता और हिन्दी साहित्य

Course Code: M23HD05DE

Discipline Specific Elective Course
Postgraduate Programme in
Hindi Language and Literature

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University of Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

SGOU

दलित अस्मिता और हिन्दी साहित्य

Course Code: M23HD05DE

Semester-IV

Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

(With Model Question Paper Sets)

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

दलित अस्मिता और हिन्दी साहित्य

Course Code: M23HD05DE
Semester- IV
Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

Academic Committee

Prof. Dr. K. Ajitha
Dr. Jayachandran R.
Dr. R. Sethunath
Dr. Sunitha GopalaKrishnan
Dr. Herman P.J.
Dr. T. A. Anand
Dr. Praneetha P.
Dr. P.G. Sasikala
Dr. C. Balasubramanian

Development of Content

Dr. Indu G. Das

Review and Edit

Dr. Veena J.

Linguistics

Prof. N. Vijayakumar

Scrutiny

Dr. Indu G. Das
Dr. Sudha T.
Christina Sherin Rose K.J.
Dr. Krishna Preethy A.R.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
October 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open University 2025

ISBN 978-81-990686-5-0
9 788199 068650

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.m

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the PG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,

Dr. Jagathy Raj V. P. 01-10-2025

SGOU

Contents

BLOCK 01	दलित साहित्य स्वरूप और लक्ष्य	01
	इकाई 1 दलित कौन है?	02
	इकाई 2 दलित साहित्य और अंबेडकरवाद	13
	इकाई 3 दलित साहित्य और मार्क्सवाद	21
	इकाई 4 दलित साहित्य और अमेरिकन नीग्रो साहित्य	32
	इकाई 5 दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र	39
BLOCK 02	दलित कहानियाँ	47
	इकाई 1 घुसपैठिये, सलाम, Detailed Study - ओमप्रकाश वाल्मीकि	48
	इकाई 2 नो बार - जयप्रकाश कर्दम	58
	इकाई 3 आवाज़ें - मोहनदास नैमिशराय	64
	इकाई 4 दलित-ब्राह्मण - सत्यप्रकाश	70
BLOCK 03	दलित कविताएँ	76
	इकाई 1 'सच यही है', 'झाड़ू और कलम' - मोहनदास नैमिशराय	77
	इकाई 2 'गूँगा नहीं था मैं', 'ठाकुर का कुआँ' - जयप्रकाश कर्दम	90
	इकाई 3 लड़की ने डरना छोड़ दिया - श्योराजसिंह बेचैन	96
	इकाई 4 बस्स! बहुत हो चुका - ओमप्रकाश वाल्मीकि	102
BLOCK 04	दलित आत्मकथा	107
	इकाई 1 हिन्दी दलित आत्मकथाएँ - संक्षिप्त परिचय	108
	इकाई 2 ओमप्रकाश वाल्मीकि - सामान्य परिचय	118
	इकाई 3 जूठन - ओमप्रकाश वाल्मीकि	123
	इकाई 4 दलित जीवन का दस्तावेज़ - जूठन - कथानक, जूठन के नामकरण की यथार्थता	130
	Model Question Papers	137

SGOU

BLOCK 01

दलित साहित्य स्वरूप और लक्ष्य

Unit 1: दलित कौन है?

Unit 2: दलित साहित्य और अंबेडकरवाद

Unit 3: दलित साहित्य और मार्कसवाद

Unit 4: दलित साहित्य और अमेरिकन नीग्रो साहित्य

Unit 5: दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र

SGOU

इकाई 1

दलित कौन है?

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- दलित साहित्य के बारे में जानता है
- दलित साहित्य की समीक्षा में सवर्ण समीक्षकों की भूमिका से अवगत होता है
- समीक्षा करते समय किन-किन बातों को नज़रअंदाज़ किया गया- यह समझ सकता है
- दलित साहित्य की सामाजिक मूल्यों को पहचानता है
- एक अच्छी और निष्पक्ष साहित्यिक समीक्षा कैसे होनी चाहिए- इसका ज्ञान मिलता है

Background / पृष्ठभूमि

दलित साहित्य वह साहित्य है जो शोषित, पीड़ित और समाज के हाशिए पर रखे गए लोगों के अनुभवों और संघर्षों को व्यक्त करता है। यह साहित्य जातिवाद और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाता है। जब दलित साहित्य का उदय हुआ, तब से ही सवर्ण या दलितेतर समीक्षकों ने इसकी समीक्षा करनी शुरू की। उन्होंने इसे सराहा भी, लेकिन कई बार उनका दृष्टिकोण सीमित, पूर्वाग्रही या 'साहाय्यकारी' रहा।

दलित लेखक मानते हैं कि उनकी रचनाओं की गहराई, दर्द और सामाजिक सच्चाइयों को दलितेतर समीक्षक पूरी तरह नहीं समझ पाते। दूसरी ओर, दलित लेखक भी अक्सर एक-दूसरे की कृतियों पर टिप्पणी नहीं करते, जिससे आपसी संवाद और आलोचना की प्रक्रिया कमजोर होती है। इस स्थिति में दलित साहित्य की सच्ची, वस्तुनिष्ठ और संवेदनशील समीक्षा की ज़रूरत है जो इसे समाज में सही जगह दिला सके।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आत्मचरित्रात्मक पुस्तक, आत्मबलिदान, दलितेतर समीक्षक, वस्तुनिष्ठ समीक्षा

SGOU

Discussion / चर्चा

1.1.1 दलित शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ

‘दलित’ शब्द का प्रयोग हिंदी में विशेष रूप से सामाजिक संदर्भ में प्रयोग होता है। यह शब्द सामान्यतः उन व्यक्तियों या समुदायों को संदर्भित करता है, जिन्हें भारतीय समाज में सदियों से उत्पीड़ित और निचला समझा गया है, विशेष रूप से जातिवाद के कारण। इस शब्द का प्रयोग पहले समाज के निचले तबके के लोगों को दर्शाने के लिए किया जाता था, जिन्हें ‘अस्पृश्य’ (Untouchables) या बाद में ‘हरिजन’ (Harijan) जैसे शब्दों से संदर्भित किया जाता था, लेकिन समय के साथ ‘दलित’ शब्द ने एक नया आयाम ग्रहण किया है।

▶ भारतीय समाज में सदियों से उत्पीड़ित और निचला समझा गया

1.1.1.1 दलित शब्द की व्युत्पत्ति

‘दलित’ शब्द संस्कृत शब्द ‘दल’ (dal) से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है ‘टूटना’, ‘चूर होना’, या ‘बिखरना’। जब इसे विशेषण के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो यह किसी के ‘विभाजन’, ‘टूटने’ या ‘शोषण’ की स्थिति को दर्शाता है। ‘दलित’ का अर्थ होता है ‘वह जिसे तोड़ा गया हो’, ‘वह जिसे दबाया गया हो’, या ‘वह जिसे उत्पीड़ित किया गया हो’। इसका एक संकेत यह भी है कि यह व्यक्ति या समुदाय समाज में कमजोर या शोषित स्थिति में है। जिसे निरंतर दबाया गया हो ।

▶ व्यक्ति या समुदाय समाज में कमजोर या शोषित स्थिति में है

हिंदी में ‘दलित’ शब्द ने सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में एक नया रूप लिया। यह शब्द उन लोगों को संदर्भित करता है जिनके साथ जातिवाद, उत्पीड़न, सामाजिक असमानता और शोषण का इतिहास जुड़ा हुआ है। इसे ‘अस्पृश्य’, ‘नीच जाति’, या ‘चमार’ जैसे जातिगत शब्दों के स्थान पर प्रयोग किया गया है, ताकि उन समुदायों के लिए एक सकारात्मक पहचान उत्पन्न किया जा सके। आजकल यह शब्द ‘आत्म-सम्मान’ और ‘सशक्तिकरण’ से जुड़ा हुआ है। दलित समुदाय अब अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहा है और इस शब्द को एक ताकत के रूप में प्रयोग कर रहा है।

▶ ‘अस्पृश्य’, ‘नीच जाति’, या ‘चमार’ जैसे जातिगत शब्दों के स्थान पर प्रयोग किया गया गया है

1.1.2 दलित शब्द के ऐतिहासिक संदर्भ

प्राचीन और मध्यकालीन भारत में, जातिवाद के कारण ‘दलित’ समुदाय को समाज से बाहर रखा गया था और उनके साथ भेदभाव किया गया था। उन्हें पूजा-पाठ, शिक्षा, और अन्य सामाजिक सुविधाओं से वंचित रखा गया।

प्राचीन भारतीय समाज में: धर्मशास्त्रों में इन समुदायों को अस्पृश्य घोषित किया गया था और उन्हें ‘पवित्र’ स्थानों से दूर रखा जाता था।

मध्यकालीन भारत में: मुगल साम्राज्य और अन्य मुस्लिम शासकों के तहत भी इन्हें कई बार भेदभाव का सामना करना पड़ा।

SGOU

▶ अंबेडकर ने 'दलित' शब्द को सम्मानजनक और सशक्तिकरण के रूप में प्रयोग करना शुरू किया

आधुनिक भारत में: भारतीय संविधान के लागू होने के बाद, डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे नेताओं ने दलित समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। अंबेडकर ने 'दलित' शब्द को सम्मानजनक और सशक्तिकरण के रूप में प्रयोग करना शुरू किया, जिससे यह शब्द नकारात्मक से सकारात्मक बन गया।

1.1.3 दलित साहित्य क्या है?

▶ अपने आक्रोश और विद्रोह भरी रचनाओं से स्वतंत्रता, समता और न्याय का स्वर प्रकट किया

दलित साहित्य (विमर्श) उस व्यवस्था का उत्पन्न है जिसमें जाती और वर्ग के आधार पर मनुष्य के बीच में भेद लिया जाता है। इस से समाज के एक तबके को अछूत मान लिया गया। इस व्यवस्था ने उच्च वर्ग को सारी सुविधायें और अधिकार प्रधान किये और निम्न वर्ग को सुविधा रहित और अधिकार हीन बना दिया। सदियों से अन्याय और अत्याचार का यह सिलसिला चलता रहा। इस अमानवीयता का विरोध आधुनिक युग में आकर एक शक्तीशाली संगठित रूप धारण किया। व्यवस्था परिवर्तन की मांग को प्रस्तुत करने केलिए उसने एक नया नाम चुना। इसने शूद्र, अन्यज, अछूत, हरिजन आदि शब्दों को नकारकर 'दलित' शब्द को अपनाया। उसने सामाजिक वर्तमान व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की माँग उठायी। अपने आक्रोश और विद्रोह भरी रचनाओं से स्वतंत्रता, समता और न्याय का स्वर प्रकट किया। यह दलित वर्ग में आत्मगौरव उत्पन्न करने का महत्वपूर्ण प्रयत्न था। दलित साहित्यकारों में सृजन में गुणात्मक सुधार लाकर इसे मुख्य विमर्श का विषय बना दिया।

▶ निर्गुण भक्तिधारा के अधिकांश कवि कबीर, रैदास, सेन, सदना, दादू- इसके पक्षधर है।

दलित चिंतन की जड़ें सुदूर अतीत तक है। वास्तव में इसका संबंध वर्ण-जाती व्यवस्था के अस्वीकार से है। 'लोकायत' और 'चारवाक' को इसके पक्षधर के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य के निर्गुण भक्तिधारा के अधिकांश कवि कबीर, रैदास, सेन, सदना, दादू- इसके पक्षधर है। आधुनिक काल में ज्योतिबा फुले (1827-1891) और भीमराव आबेडकर (1891-1856) दोनों ने अपना पूरा जीवन वर्णव्यवस्था के विरुद्ध और जनतांत्रिक समाज की रचना में लगा दिया।

▶ दलित साहित्य मनुष्य को केंद्र में रखता है

दलितों का दुःख, परेशानी, गुलामी, अधःपतन और उपहास के साथ ही दरिद्रता शोषण और संघर्ष का कलात्मक शैली से चित्रण करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है। हर एक मनुष्य को स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और भयमुक्त सुरक्षा मिलनी चाहिए, इसी पृष्ठभूमि पर निर्मित एक प्रवृत्ति साहित्य में अभिव्यक्त हो रही है। इस प्रवृत्ति का नाम दलित साहित्य है। दलित साहित्य मनुष्य को केंद्र में रखता है। मनुष्य को महान मानता है। यह साहित्य जाती आधारित उत्पीडन और भेदभाव के ख़िलाफ एक सशक्त आवाज़ है। यह दलित जीवन और उसकी समस्याओं को केंद्र में रखकर किये जाने वाला एक साहित्यिक आन्दोलन है ।

SGOU

1.1.4 दलित साहित्य के प्रेरणा स्रोत एवं स्वरूप

दलित साहित्य भारतीय समाज की गहरी सामाजिक असमानताओं, जातिवाद और शोषण के खिलाफ एक सशक्त प्रतिवाद है। यह साहित्य न केवल दलित समुदाय की पीड़ा और संघर्ष को उजागर करता है, बल्कि समतामूलक समाज की स्थापना की दिशा में प्रेरणा भी प्रदान करता है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर: दलित साहित्य के प्रमुख प्रेरणा स्रोत डॉ. अंबेडकर हैं, जिन्होंने दलितों को आत्मसम्मान, शिक्षा और संघर्ष की दिशा में मार्गदर्शन किया। उनका विचार था कि दलितों को अपने भीतर से ही शक्ति प्राप्त करनी होगी, न कि बाहरी चमत्कारों पर निर्भर रहना चाहिए।

▶ दलित समुदाय की पीड़ा और संघर्ष को उजागर करता है

1. **ज्योतिबा फुले और पेरियार ई.वी. रामास्वामी**: फुले ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था के खिलाफ 'गुलामगिरी' जैसे ग्रंथ लिखे, जबकि पेरियार ने ईश्वर और ब्राह्मणवाद के विरोध में 'स्व-सम्मान आंदोलन' चलाया। दोनों का दलित साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा।
2. **बुद्ध और कबीर**: बुद्ध की करुणा और कबीर के निर्गुण भक्ति ने दलित साहित्य को आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध किया।

1.1.4.1 स्वरूप

1. *विरोध और नकार का साहित्य*: दलित साहित्य जातिवाद, वर्ण व्यवस्था, पुनर्जन्म, भाग्यवाद और धार्मिक रूढ़ियों का विरोध करता है। यह साहित्य सामाजिक असमानताओं और शोषण के खिलाफ एक सशक्त आवाज है।

▶ भारतीय समाज में समानता, न्याय और भ्रातृत्व की भावना को जागृत करता है

2. *विविध साहित्यिक विधाएँ*: कविता, कहानी, आत्मकथा, उपन्यास, आलोचना आदि के माध्यम से दलित साहित्य ने अपनी पहचान बनाई है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'ग्रहण', सूरजपाल चौहान की 'साजिश' और रत्नकुमार सांभरिया की 'फुलवा' जैसी रचनाएँ दलित जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत करती हैं।
3. *सामाजिक सरोकार और अम्बेडकरवादी विचार*: दलित साहित्य समाज में समता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व की स्थापना की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है। यह साहित्य अम्बेडकरवादी विचारों को आधार बनाकर जातिवाद और शोषण के खिलाफ संघर्ष करता है।

यह साहित्य भारतीय समाज में समानता, न्याय और भ्रातृत्व की भावना को जागृत करने का कार्य करता है।

1.1.4.2 दलित साहित्य में वेदना

हिंदू धर्मव्यवस्था ने दलितों की छाया, स्पर्श और वाणी अस्पृश्य मानी है। जन्मतः मनुष्य को 'अस्पृश्य' और 'गुनहगार' माना है। दलित संपत्ति जमा न करें, वे गाँव के

बाहर रहें, गधे और कुत्ते ही उनकी संपत्ति हैं, वे सोने के आभूषण नहीं पहनें। इतना ही नहीं वे मिट्टी के बर्तनों में ही अन्न ग्रहण करें, कपड़े के रूप में कफन का ही प्रयोग करें, अपने नाम अमंगल और अभद्र रखें, ऐसे अनेकों आदेश हिंदू धर्मग्रंथों में भरे पड़े हैं।

▶ हिंदू धर्मव्यवस्था ने दलितों की छाया, स्पर्श और वाणी अस्पृश्य मानी है

हजारों वर्षों से दलितों को सत्ता, संपत्ति और प्रतिष्ठा से वंचित रखा गया था। दलित इस व्यवस्था के विरुद्ध बगावत न करें इसलिए 'यह व्यवस्था ईश्वर ने बनाई है' ऐसा सिद्धांत का प्रचार किया गया। दलितों की हज़ारों पीढ़ियाँ यह अन्याय सहन करती हुई जी रही हैं।

बाबासाहब अंबेडकर के विचारों से दलित समाज को अपनी गुलामी का एहसास हुआ। उनकी वेदना को वाणी मिल गई। इस मूक समाज को बाबासाहब ने वाणी थी। दलितों की वेदना ही दलित साहित्य का आधार है। यह वेदना एक की नहीं, ना ही यह एक दिन की है। यह वेदना हज़ारों की है, हज़ारों वर्षों की है। इसलिए यह व्यक्त होते समय इसका सामूहिक आचार व्यक्त होती है। दलित साहित्य में वेदना एक 'मैं' की वेदना नहीं। वह पूरे बहिष्कृत समाज की व्यापक, गहरी वेदना है। इसलिए इस वेदना का स्वरूप सामाजिक बन गया है।

▶ दलितों की वेदना ही दलित साहित्य का आधार है

1.1.5 दलित साहित्य में नकार और विद्रोह

दलित साहित्य में 'नकार' और 'विद्रोह' दलितों की वेदना के गर्भ से पैदा हुआ है। यह नकार अथवा विद्रोह अपने ऊपर लादी गई अमानवीय व्यवस्था के विरुद्ध है। जैसे दलित साहित्य में वेदना समूह स्वर में व्यक्त होने वाले सामाजिक स्वरूप की है, वैसे ही नकार और विद्रोह भी सामाजिक और समूह स्वरूप का है।

जिस प्रस्थापित विषम व्यवस्था ने दलितों का शोषण किया, उस व्यवस्था के प्रति यह नकार है। इस नकार का स्वरूप दुधारी है। यह विषम व्यवस्था को नकारते हुए समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व की माँग करने वाली सोच है। इसलिए यह ध्यान में रखना चाहिए कि दलित साहित्य, में नकार- यथार्थपरक विधायक दृष्टि रखने वाला न्यायपरक प्रतिकार है।

▶ दलित साहित्य, में नकार- यथार्थपरक विधायक दृष्टि रखने वाला न्यायपरक प्रतिकार है।

वेदना और नकार के बाद की अवस्था 'विद्रोह' है। 'मैं मनुष्य हूँ, मुझे मनुष्य के सभी हक मिलने चाहिए' इस सोच से विद्रोह का जन्म हुआ है। निरंकुश वेदना के गर्भ से जन्मा विस्फोटक नकार और भेदक विद्रोह, प्रपात जैसा है। उसका स्वरूप आक्रामक है, वह उदण्ड और बागी रुख अख्तियार करता है।

1.1.6 दलित साहित्य की भाषा

दलित साहित्य में अभिव्यक्त जीवनदर्शन आज तक के व्यक्त अनुभव संसार की अपेक्षा अलग है। एक नया संसार, एक नया समाज, एक नया मनुष्य पहले-पहल इस साहित्य में व्यक्त हुआ है। दलित साहित्य का यथार्थ अलग है। इस की भाषा भी अलग

▶ दलित साहित्य का यथार्थ अलग है। इसकी भाषा भी अलग है

है। यह भाषा दलितों की गँवार-असभ्य भाषा है। यह भाषा दलितों की बोली भाषा है। यह भाषा शिष्ट संकेत और व्याकरण के नियम न मानने वाली भाषा है। ऐसा कहा जाता है कि हर एक दस कोस पर भाषा बदलती है किंतु दलितों के संबंध में अंतर का गणित गलत ठहरता है। एक ही गाँव में गाँव की भाषा और अछूत टोली की भाषा में भेद दिखाई देता है।

▶ दलित लेखकों को प्रमाण भाषा की अपेक्षा अपनी बस्ती की भाषा समीप लगती है

दलित लेखकों ने अपने लेखन के लिए प्रमाण भाषा की बजाय टोली की भाषा का प्रयोग किया है। प्रमाण भाषा का एक 'दर्जा' होता है। इस प्रमाण भाषा का 'दर्जा' दलित लेखकों ने नकारा है। समाज में शिष्ट लोगों द्वारा लेखन के लिए मान्यता प्राप्त भाषा के रूप में 'प्रमाण भाषा की ओर' देखा जाता है। यह शिष्ट मान्यता दलित लेखकों ने नकारी है क्योंकि यह शिष्ट मान्यता 'एक दंभ से' भरी हुई है। दलित लेखकों को प्रमाण भाषा की अपेक्षा अपनी बस्ती की भाषा समीप लगती है। दरअसल प्रमाण भाषा में दलितों की बोली के सभी शब्द नहीं मिलते हैं। ऐसे भी अपने अनुभव अपनी मातृभाषा में बिना प्रयास कह पाना, अभिव्यक्ति को अधिक तीव्रता देने में सहायक होता है।

1.1.7 दलित साहित्य पर आक्षेप

दलित साहित्य का स्वरूप, प्रयोजन और उसकी भूमिका के कारण इस साहित्य पर कई आक्षेप लगाए गए। ये आक्षेप निम्न हैं:

1. दलित साहित्य प्रचारी है।
2. दलित साहित्य एकसुरी है।
3. दलित साहित्य में व्यक्ति व्यक्त नहीं होता।
4. दलित साहित्य में आक्रोश सुनाई देता है।
5. दलित साहित्य नकारात्मक है।

1.1.7.1 दलित साहित्य प्रचारी है

▶ दलित साहित्य प्रचारी है। उसमें कलात्मकता नहीं है

दलित साहित्य प्रचारी है। उसमें कलात्मकता नहीं है। दलित लेखक 'पोज' लेकर लिखता है। उसके लेखन में आंदोलन में होने वाला आवेश व्यक्त होता है। उसके लेखन में अलिप्तता और तटस्थता नहीं है। इस प्रकार की आलोचना दलित साहित्य के बारे में होती रही है।

दलित लेखकों द्वारा अपनी वेदना, अपने प्रश्नों को अपने साहित्य में प्रस्तुत किए जाने के कारण उनके साहित्य को प्रचारी स्वरूप दे दिया गया। यह सच है कि इस साहित्य में मानवीय मूल्यों का उद्घोष व्यक्त हुआ है इसलिए इसमें तटस्थता दिखाई नहीं देती। दलित लेखक की वेदना उसकी अपनी वेदना है इसलिए यह लेखक अपनी वेदना से नाता तोड़ नहीं सकता। दलित साहित्य में प्रयुक्त प्रश्न लेखक के खुद अपने व उसके समाज के होने के कारण लेखक उसके प्रति तटस्थ नहीं रह सकता इसलिए उसकी

प्रतिक्रिया 'पोज़' के समान लगती है। चूँकि वह मानव-मुक्ति के साधन के रूप में अपने लेखन को देखता है, इस कारण उसके लेखन में आवेश व्यक्त होता है। लेकिन सभी दलित साहित्य प्रचारी है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। जिए-भोगे हुए उत्कट अनुभवों को प्रचारी सिद्ध नहीं किया जा सकता। अपने समाज के बृहत्तर भविष्य केलिए उनके एक आशावादी दृष्टिकोण है।

▶ इस साहित्य में मानवीय मूल्यों का उद्घोष व्यक्त हुआ है

1.1.8 दलित साहित्य एकसुरी है

दलित साहित्य पर एकसुरता, वही का वही, अथवा आवर्त में फंसा हुआ होने का आक्षेप भी प्रायः लगाया जाता है। इस एकसुरता का कारण इस में व्यक्त होने वाली समान वैचारिक भूमिका है। समान वैचारिक भूमिका के कारण इस साहित्य का स्वरूप एकसुरी है। इसके अतिरिक्त दलित साहित्य में प्रस्तुत अनुभव वही के वही हैं। अस्पृश्यों की अस्पृश्यता के कारण होने वाले अनुभव एक जैसे हैं। गाँव का नाम भले अलग हो, पर दलितों के जुल्म का स्वरूप समान है। सामाजिक बहिष्कार, अलग पनघट, अलग श्मशान, अलग बस्ती, किराए पर घर न मिलना, जाति छिपाना, सार्वजनिक स्थान में प्रवेश के लिए मनाही, दलित स्त्रियों पर होने वाले अन्याय, मृत जानवर को खींचना, फाड़ना, नाई द्वारा बाल न काटना आदि अनुभव एक सरीखे हैं। 'आठवणी चे पक्षी' (यादों के पंछी) में 'खाल छीलने का प्रसंग' और 'अक्करमाशी' (अक्करमाशी) में 'खाल छीलने का प्रसंग' इन दोनों में बहुत कुछ साम्य है।

▶ एकसुरता का कारण इस में व्यक्त होने वाली समान वैचारिक भूमिका है

दलित लेखकों के विचार अनुभव और भावना में साम्य होने के कारण दलित साहित्य में एकसुरता दिखाई देती है। यह एकसुरता विशेष कर दलित-कविता में महसूस होती है। पर दलित गद्य साहित्य एकसुरा नहीं है। इस काल के आधार को छोडकर सभी दलित गोत्र, वर्ग, जाती का जीवन संघर्ष , शोषण, अत्याचार सब समान है। इसलिए ऐसे जीवन का यथार्थ चित्रण एकसुरा होता है।

▶ विचार में, अनुभव में और भावना में साम्य होने के कारण दलित साहित्य में एकसुरता दिखाई देती है

1.1.8.1 दलित साहित्य में व्यक्ति नहीं होता

दलित साहित्य की अनन्य विशेषता है 'समूहदर्शी चरित्र'। दलित साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक स्वरूप का प्रतिनिधि 'हम' के रूप में व्यक्त होनेवाला है, इसलिए दलित साहित्य में अनुभव यदि एक का हुआ तो भी अनेकों का लगता है। इसी कारण दलित साहित्य पर यह आरोप लगाया जाता है कि इसमें व्यक्ति नहीं होता। दलितों का जीवन व्यक्ति केन्द्रित नहीं समूह केन्द्रित है।

▶ दलितों का जीवन व्यक्ति केन्द्रित नहीं सामूहिक है

1.1.8.2 दलित साहित्य आक्रोशपूर्ण है

दलित साहित्य की यह कह कर भी आलोचना हुई है कि यह आक्रोशपूर्ण है और यह आक्रोश छाती पीटने जैसा है। दरअसल दलित लेखकों का यह आक्रोश 'आक्रोश' नहीं बल्कि बहुत वर्षों की चिढ़ है। यह आक्रोश वेदना, क्रोध बेबसी, मनबुरी और निसहायता की अभिव्यक्ति है। दलित साहित्य में व्यक्त क्रोध, साहित्य का 'सहजभाव' है।

▶ दलित साहित्य में व्यक्त क्रोध, साहित्य का 'सहजभाव' है

सामाजिक वेदना से दलित में आक्रोश पैदा हुआ। यह वेदना मूक थी। इस मूक वेदना को बाबासाहब अंबेडकर के रूप में नायक मिल गया। इसलिए भरे हुए बाँध के टूटने की तरह यह वेदना व्यक्त हुई है। इस वेदना के संयत, कलात्मक होने की अपेक्षा रखना ही अनुचित है। यह हजारों वर्षों से दबी वेदना का प्रेस्फुटन है। स्वतंत्रता की आकांक्षा ने इसकी अभिव्यक्ति को विस्फोटक रूप दिया।

▶ सामाजिक वेदना से दलित में आक्रोश पैदा हुआ।

1.1.8.3 दलित साहित्य नकारात्मक है?

पुरानी व्यवस्था, मूल्य, फायदे, आचार आदि के स्थान पर नयी व्यवस्था, मूल्य आदि की प्रतिष्ठा परिवर्तन या सुधार है। इस में सम्पूर्ण पुरानी व्यवस्थाओं के प्रति नकारात्मक सोच और दृष्टिकोण काम करता है। दलित साहित्य में यह प्रवृत्ति अत्यंत सशक्त रूप को स्वीकारती है। क्योंकि सामजिक जीवन की हर पहलू पर दलितों को असमानता, भेदभाव, शोषण और उत्पीडन का शिकार बनना पड़ा है। इसलिए ऐसी अमानवीय व्यवस्था के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का होना स्वाभाविक है। सम्पूर्ण दलित साहित्य में यह प्रवृत्ती दिखाई देती है।

▶ दलितों को असमानता, भेदभाव, शोषण और उत्पीडन का शिकार बनना पड़ा है

दलित साहित्य में नकारात्मकता विद्रोह और संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त है। क्योंकि यह सामाजिक अन्याय, उत्पीडन और भेदभाव के विरुद्ध है। यह सामाजिक अन्याय के प्रति दलितों का आक्रोश और गुस्से है। इन नकारात्मकता में अन्याय और उत्पीटन के विरुद्ध दलित का विद्रोह और प्रतिशोध है। सामजिक व्यवस्था में बदलाव की मांग ताकि उन्हें भी समाज में अधिकार और सम्मान मिले। इसका एक अन्य कारण आत्मसम्मान और अस्मिता की तलाश है। सदियों से प्रताड़ित करती रही शोषण के प्रति घृणा नकारात्मक दृष्टिकोण का आधार है। इस नकारात्मक दृष्टिकोण से दलितों में जागरूकता, सशक्तीकरण, सामजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक पहचान को पर्याप्त ताकत मिली।

▶ दलित साहित्य में नकारात्मकता विद्रोह और संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त है

1.1.9 दलित साहित्य का स्वतंत्र अस्तित्व

प्रारंभ में दलित साहित्य की मामूली नोटिस भी नहीं ली जाती थी। नव दलित लेखकों ने अपनी पत्रिकाएँ निकालीं। अपने साहित्यिक संगठन स्थापित किए। दलित साहित्य सम्मेलन, अस्मितादर्श मेले और दलित नाट्यसम्मेलन आयोजित कर, दलित साहित्य का स्वतंत्र स्थान निश्चित किया। दलित लेखकों की स्वतंत्र और अलग साहित्यिक धारा बहुचर्चित हुई। तब सवर्ण लेखकों ने यह प्रश्न उठाया कि 'दलित साहित्य का अलग चूल्हा किसलिए?'

▶ दलित लेखकों की स्वतंत्र और अलग साहित्यिक धारा बहुचर्चित हुई

दलित लेखक ने यह भूमिका अपनाई कि दलित साहित्य अलग है। भारतीय समाज और मानस का यथार्थ बदला नहीं है। वही ग्राम व्यवस्था, वही रूढ़ कल्पनाएँ, वही गाँव के बाहर की बस्तियाँ, आरक्षित स्थान के संबंध में वही पुराने जाल, ऐसी सब भीषण वास्तविकताएँ होते हुए भी साहित्य में पृथकता न दिखे, यह कैसे संभव होगा? किसी

▶ किसी भी धारा का विकास होना है तो उसका विकास स्वतंत्र रूप से होना चाहिए

भी धारा का विकास होना है तो उसका विकास स्वतंत्र रूप से होना चाहिए। क्योंकि इस धारा की अच्छी चर्चा और चिकित्सा हो सकती है। अन्यथा प्रस्थापित हो-हल्ले में नई आवाज़ दब जाने की संभावना अधिक होती है। अपनी अलगता के बल पर किसी भी धारा को स्थिर होना पड़ता है। साहित्य में धारा निर्माण होना यह उस साहित्य की जीवंतता का लक्षण है; तब ऐसी धारा का स्वागत करना ही उचित होगा। दलित लेखकों का अलग अनुभव, उनकी जनभाषा, उनकी प्रतिवद्धता, अंबेडकरी सोच और इस साहित्य के विद्रोही समूहदर्शी स्वरूप के कारण दलित साहित्य की पृथकता स्पष्ट होती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

दलित साहित्य ऐसे लोगों की आवाज़ है जो समाज में जातिवाद और भेदभाव के कारण शोषित और पिछड़े रहे हैं। यह साहित्य उनके दर्द, संघर्ष, और जीवन की सच्चाई को दिखाता है। डॉ. अंबेडकर, फुले और पेरियार जैसे समाज सुधारकों की सोच से प्रेरित होकर दलित लेखकों ने अपनी असली बोली में अपने अनुभव लिखे। इस साहित्य में वेदना, विद्रोह और बराबरी की माँग साफ़ झलकती है। यह सिर्फ दुःख की कहानी नहीं, बल्कि बदलाव की चाह और आत्म-सम्मान की लड़ाई है। दलित साहित्य समाज में समानता, न्याय और इंसानियत की बात करता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'दलित' शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. 'दलित साहित्य की भाषा' विषय पर आलेख तैयार कीजिए।
3. दलित साहित्य पर अंबेडकर का प्रभाव पर टिप्पणी लिखिए।
4. दलित साहित्य में 'नकार' का महत्व
5. 'दलित साहित्य पर आक्षेप' के बारे में आलेख तैयार किजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश,वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल,भारती - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
2. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
3. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
4. .साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे
5. दलित साहित्य का समाजशास्त्र - हरिनारायण ठाकुर

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

दलित साहित्य और अंबेडकरवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- दलितों की पहचान और आत्म-सम्मान में धर्मांतरण की भूमिका को समझता है
- डॉ. अंबेडकर के विचारों का दलित साहित्य और समाज पर प्रभाव पहचानता है
- दलित पैंथर आंदोलन और सांस्कृतिक जागरूकता के संबंध से अवगत होता है
- अंबेडकरवाद के मूल सिद्धांतों और उनके सामाजिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

भारत में दलित समाज ने सदियों से जातिगत भेदभाव और शोषण का सामना किया। डॉ. भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में दलितों ने समानता और आत्मसम्मान की खोज में बौद्ध धर्म को अपनाया। इस धर्म परिवर्तन से एक सांस्कृतिक क्रांति की शुरुआत हुई, जिसने दलित साहित्य को जन्म दिया। 1970 के दशक में शुरू हुआ दलित पैंथर आंदोलन इस संघर्ष को आगे बढ़ाने वाला सशक्त प्रयास था, जिसने साहित्य, समाज और पहचान की नई धारा को जन्म दिया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

क्रांतिकारी परिवर्तन, उत्सुकता, जातिव्यवस्था, अंबेडकरवाद, पैंथर आंदोलन

Discussion / चर्चा

1.2.1 दलित साहित्य और बौद्ध विचार प्रणाली

- विविध प्रकार के आचार-व्यवहार द्वारा दलितों ने बौद्धधर्मी होने की प्रक्रिया शुरू की

धर्मांतरण से दलित समाज की मानसिकता में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। धर्मांतरण की ऐतिहासिक घटना नए मुक्ति संग्राम का प्रारंभ था। बौद्ध धर्म के कारण दलितों को एक नया सांस्कृतिक आयाम मिल गया। इसका दलित साहित्य के विकास पर पोषक प्रभाव हुआ।

बौद्ध धर्म में जाति व्यवस्था को कोई स्थान नहीं है। बौद्ध धर्म समता का समर्थन करने वाला और विषमता को नकारने वाला धर्म है। बुद्ध ने जाति प्रथा को नकारा और संघ में सभी को प्रवेश दिया। इसलिए बाबासाहब ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। जिस में जातीय भेद भाव का अभाव था।

▶ बाबासाहब अंबेडकर के निधन के बाद दलित समाज ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया

बाबासाहब अंबेडकर के निधन के बाद दलित समाज ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया। बौद्ध पद्धति से विवाह करना, बुद्ध जयंती मनाना, विहारों की स्थापना करना, पंचशील त्रिशरण का अनुसरण करना, बौद्ध भिक्षु का आदर करना, दलित सभाज में बौद्ध धर्म का प्रचारक बनना, छोटे बच्चों और घरों के नाम बौद्ध धर्म के अनुरूप रखना आदि विविध प्रकार के आचार-व्यवहार द्वारा दलितों ने बौद्धधर्मी होने की प्रक्रिया शुरू की। इस प्रक्रिया का एक भाग 'बौद्ध साहित्य को पुरस्कृत करना' था।

1.2.1.1 बौद्ध साहित्य का समर्थन

धर्मांतरण के कारण दलित समाज में बौद्ध धर्म के प्रति श्रद्धा, उत्सुकता और प्रचार की भावना में वृद्धि हुई। बौद्ध लेखकों ने प्रेरणा कि दलित लेखकों को बौद्ध साहित्य की सर्जना करनी चाहिए क्योंकि बौद्ध दर्शन में वैचारिक और प्रेरक शक्ति है।

▶ पाली और संस्कृत बौद्ध साहित्य की मूल भाषाएं थीं

पाली और संस्कृत बौद्ध साहित्य की मूल भाषाएं थीं। इसके अतिरिक्त यह ब्राह्मी, चीनी, तिबत्ती और सिंहली भाषाओं में भी फैला हुआ है। इन सभी भाषाओं में फैले बौद्ध साहित्य का दलित लेखक अनुशीलन करें, ऐसा सुझाव बौद्ध समीक्षकों ने दिया। यह सुझाव विधायक स्वरूप का था। प्रथम तो इन भाषाओं से कितने दलित लेखक अवगत हैं, इसका भी विचार करना होगा। दूसरे यह भी ध्यान में रखना होगा कि उपर्युक्त भाषाओं में होने वाला मूल बौद्ध साहित्य धार्मिक स्वरूप का है, लेकिन दलित लेखकों का साहित्य सामाजिक स्वरूप का है। भगवान बुद्ध और दलित लेखकों के काल में बड़ा अंतर है। आज मराठी में प्राचीन संत साहित्य का अनुशीलन हो रहा है, पर संत साहित्य की सर्जना नहीं की जाती। ठीक इसी प्रकार बौद्ध साहित्य के अनुशीलन से बौद्ध साहित्य की सर्जना नहीं की जाती। प्राचीन बौद्ध साहित्य की अपेक्षा अर्वाचीन बौद्ध साहित्य का स्वरूप भी अलग था।

▶ नव बौद्ध लेखकों के दो अप्रोच हो सकेंगे

नव बौद्ध लेखकों के दो मत हो सकेंगे। एक यह कि 'हमें इस स्थिति तक पहुँचाने के लिए सवर्ण समाज जिम्मेदार है,' इसलिए उसके विरुद्ध विद्रोह करना। दूसरा यह कि 'मेरा जीवन दूसरों की अपेक्षा अलग है।' शायद दूसरी मत से अधिक उत्कृष्ट साहित्य रचा जा सकता है, यह भूमिका विद्रोह की अपेक्षा अनुभव की अलगता को अधिक महत्त्व देने वाली है। इतना ही नहीं यह अलग अनुभव 'कहने सरीखा' है-इस पर जोर देने वाली है। पर 'कहने सरीखा' का मतलब क्या है, यह बौद्ध समीक्षकों द्वारा स्पष्ट नहीं किया गया।

SGOU

▶ समाज को पूर्णतः बौद्ध होने के लिए कुछ समय लगना जरूरी है

दलित समाज ने धर्मांतरण किया तो भी इस समाज को पूर्णतः बौद्ध होने के लिए कुछ समय लगना जरूरी है और उतना ही समय बौद्ध साहित्य के सृजन में लगेगा। इस स्थिति में दलित लेखकों से बौद्ध साहित्य सृजन की अपेक्षा करना अनुचित है। यही सच है।

1.2.1.2 दलित साहित्य की रचना प्रेरणा

▶ यह काल बाबासाहब अंबेडकर के कार्यकृतित्व से प्रभावित हुआ है

साऊथ ब्यूरो कमीशन 27 जनवरी, 1919 से 6 दिसंबर, 1956 का यह काल दलित साहित्य का मानदंड है। यह काल बाबासाहब अंबेडकर के कार्यकृतित्व से प्रभावित हुआ है। हजारों वर्षों की समाज रचना, उसके इने-गिने सुधारवादी आंदोलन, तेजी से बढ़ने वाला कांग्रेस का राष्ट्रीय आंदोलन, अल्पसंख्यकों को परतंत्रता में प्राप्त राजनैतिक स्थान, अंग्रेजों की ओर से किस्त-दर-किस्त मिलने वाली सुविधाएँ, भारत में आने वाले ब्रिटिश कमीशन, गोलमेज परिषद, चुनाव, दूसरा महायुद्ध, भारतीय स्वतंत्रता, विभाजन, संविधान, राजनीति, दलितों का धर्मान्तरण और दलितों के नेतृत्व पर विराजमान बाबासाहब अंबेडकर, इन सब ऐतिहासिक घटनाओं से दलित आंदोलन प्रभावित हुआ है।

▶ दलित साहित्य की प्रेरणा अंबेडकरवादी विचार हैं

बाबासाहब की जीवनगाथा, उनका कार्य और वाणी तथा उनके अमूल्य विचारों से, दलित आंदोलन और दलित लेखक जागृत हुआ, इसलिए बाबासाहब अंबेडकर ही दलित साहित्य की सच्ची प्रेरणा हैं।

दलित साहित्य की प्रेरणा अंबेडकरवादी विचार हैं। क्योंकि बाबासाहब अंबेडकर के विचारों और आंदोलन से दलित समाज को स्वाभिमान मिला। यदि बाबासाहब न होते तो हम न होते। दलित समाज में प्रत्येक व्यक्ति का एक दूसरे को अभिवादन करते हुए 'जयभीम' का उच्चारण करना भी इस बात का द्योतक है कि बाबासाहब अंबेडकर ही हमारी सच्ची प्रेरणा हैं।

1.2.1.3 अंबेडकरवादी विचार

अंबेडकरवाद जातिभेद के अंत का आधुनिक विचार है। बाबासाहब ने हिन्दू धर्म में विषम व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष किया, लेकिन जातिव्यवस्था ने विषमता का पालन पोषण किया। इस जाति संस्था के लक्षण निम्न हैं-

1. **वंश परंपरा**

जिस जाति के माँ-बाप हैं बच्चा भी उसी जाति का होता है।

2. **विवाह बंधन**

अपनी जाति में ही विवाह स्वीकार्य और जातिबाह्य विवाह वर्जित ।

3. **पेशा**

पैतृक पेशा छोड़कर दूसरी जाति का पेशा करना वर्जित ।

4. **खाद्य-पेय नियमन**

खान-पान में केवल शाकाहारी, मांसाहारी का ही फर्क न होकर अपनी अपेक्षा निम्न और परधर्मी के अन्न और पानी को स्पर्श न करना।

5. **ऊँच-नीच**

कुछ जातियों को वरिष्ठ और कुछ को कनिष्ठ मानना ।

▶ दुर्बलता, दखिता और अज्ञान के कारण दलित समाज लूटा गया

जातिव्यवस्था ने दलित समाज का शोपण किया और दलितों पर पीड़ादायक प्रतिबंध लाद दिए। दुर्बलता, गरीबी और अज्ञान के कारण दलित समाज लूटा गया इसलिए बाबासाहब ने आत्मसम्मान की भावना जागृत करने की बात कही। बाबासाहब अंबेडकर ने कहा कि, 'दलितों में आत्मसम्मान का भाव जागृत होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि दलितों को सत्ता के सूत्र और कानून बनाने की ताकत हासिल करनी चाहिए। विवश, असहाय, गुलामी जीवन जीनेवाले दलितों के लिए यह विचार नए और क्रांतिदर्शी थे।

1.2.2 दलितों के मसीहा-डॉ बाबा साहेब अंबेडकर (1891)

'बाबा साहेब' के नाम से दुनियाभर में लोकप्रिय डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर समाज सुधारक, दलित राजनेता, महामनीषी, क्रांतिकारी योद्धा, लोकनायक, विद्वान, दार्शनिक, वैज्ञानिक होने के साथ ही विश्व स्तर के विधिवेत्ता व भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी थे। दुनिया-जहान और विशेषतः भारत की परिस्थितियों को एक संतुलित, भेदभाष रहित एवं समतामूलक समाज की निगाह से देखने एवं दलित जाति के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक भेदभावों को समाप्त करने के लम्बे संघर्ष के लिये पहचाने जाने वाले डॉ. भीमराव अम्बेडकर 14 अप्रैल 1891 जन्मे थे। मानव जाति के इतिहास में कभी कोई ऐसा युग नहीं गुजरा, जब किसी ने अपने तर्क, कर्म एवं बुद्धि के बल पर तत्कालीन रूढ़िवादी मान्यताओं, जातीय भेदभाव एवं ऊंचनीच की धारणाओं पर कड़ा प्रहार न किया हो। मनुष्य सदैव सत्य की तलाश में निरन्तर प्रयासरत रहा है। अपने वर्तामान युग के समस्त जातिगत भेदभाव एवं असमानता पर प्रहार करने वाले नेता के रूप में डॉ. अम्बेडकर को याद करना एक आदर्श एवं संतुलित समाज निर्माण के संकल्प को बल देना है। बी.आर आंबेडकर प्रमुख न्यायविद, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे । उनहोंन भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने में ऐतिहासिक भूमिका निभायी । उनके 'जाती का विनाश' ('Annihilation of the Caste') 'शूद्र कौन है' (Who were the Sudras) 'बुद्ध और धर्म (Budha and his Dhamma) आदि रचनाओं दलित आन्दोलन केलिए प्रेरणास्रोत बन गयी।

▶ बी.आर आंबेडकर प्रमुख न्यायविद, अर्थशास्त्री, राजीतिज्ञ और समाज सुधारक थे

1.2.3 दलित पैंथर आंदोलन और दलित साहित्य अंतर्संबंद्ध

70 के दशक की शुरुआत में, मुंबई की झुग्गियों से पढ़े-लिखे दलित किशोरों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर से प्रेरित होकर दलित पैंथर आंदोलन (डीपीएम) की शुरुआत की। इसके अलावा अमेरिका के ब्लैक पैंथर्स के नागरिक अधिकारों और नस्लवाद विरोधी

▶ अंबेडकर से प्रेरित होकर दलित पैंथर आंदोलन (डीपीएम) की शुरुआत की

अभियान से प्रेरित होकर, लेखक-कवि जेवी पवार और नामदेव ढसाल ने दलित पैंथर्स का गठन किया। दलितों के खिलाफ हाल ही में हुए जघन्य अपराधों से उनका गुस्सा और भड़क गया, जिसमें पुणे जिले में एक दलित महिला को नग्न अवस्था में घुमाना और अकोला जिले के धाकली गांव में दो दलित पुरुषों की आंखें फोड़ने की भयावह घटना शामिल है। दलित पैंथर महाराष्ट्र में दलितों के खिलाफ किए गए अत्याचारों के विरुद्ध एक सहज और सशक्त प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। इसने राज्य के राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया और भारतीय दलित राजनीति पर इसका निर्विवाद प्रभाव पड़ा।

1.2.4 आंदोलन की आवश्यकता

▶ 'अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण अधिनियम' बनाने में मदद की

ब्रिटिश सरकार ने निचली जाति के लोगों को अलग चुनाव और निर्वाचन क्षेत्र प्रदान किए। इस बदलाव का उद्देश्य समुदाय को अधिक अधिकार देना और उसे मजबूत बनाना था। डॉ. अंबेडकर का मानना था कि इससे निचली जाति के लोगों को लाभ होगा, जबकि गांधी ने इसका विरोध किया, उनका मानना था कि इससे केवल अंतर बढ़ेगा। इसका परिणाम पूना पैक्ट हुआ, जिसमें अंबेडकर ने अलग चुनाव के प्रस्ताव को वापस कर लिया। हालाँकि, इसने अंबेडकर को 'अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण अधिनियम' बनाने में मदद की।

▶ आंदोलन के सिद्धांत बौद्ध गुणों के साथ मिश्रित मार्क्सवादी सिद्धांत थे

बाबासाहेब की मृत्यु के बाद, जो युवा बचे थे, वे उनके सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थे और उनकी विरासत को जीवित रखना चाहते थे। नामदेव ढसाल और जेवी पवार युवा कवि और कहानीकार थे जिन्होंने दलित युवाओं को संगठित करना शुरू किया। उन्होंने दलित शब्द को अपनाया क्योंकि यह धार्मिक अर्थों से रहित था। आंदोलन के सिद्धांत बौद्ध गुणों के साथ मिश्रित मार्क्सवादी सिद्धांत थे। मराठी कवि नामदेव ढसाल उनके सबसे जाने-माने और प्रशंसनीय नेता थे। उनकी कविताएँ, जैसे गोलपीठा, पूरे भारत में लोगों का ध्यान खींचती थीं। उनका व्यवहार आकर्षक और दिलचस्प था। नामदेव खुद दलित थे और मुंबई की सड़कों पर टैक्सी चलाते थे। राजा ढाले भी तिकड़ी के संस्थापक सदस्य थे और एक युवा लेखक, होशियार और अच्छे वक्ता थे।

1.2.1.4 दलित पैंथर्स की कुछ उपलब्धियाँ:

- दलित पैंथर का राष्ट्रीय राजनीति और सामाजिक परिदृश्य दोनों पर व्यापक प्रभाव रहा है। बहुत कम लोगों को पता है कि दलित पैंथर ने बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक काशीराम को प्रभावित किया था, जिन्होंने उत्तर भारत में दलित राजनीति के खेल को एक अलग स्तर पर पहुंचा दिया।
- दलित पैंथर पार्टी ने दलितों के खिलाफ जघन्य अपराधों के खिलाफ उठने और लड़ने का साहस दिखाया।
- दलित पैंथर ने कविताओं और उपन्यासों के माध्यम से और बाद में नाटकों, नुक्कड़ नाटकों और कला के अन्य रूपों के माध्यम से उस समय की मुख्यधारा की सत्ता की राजनीति का मुकाबला किया, जिसके परिणामस्वरूप एक स्पष्ट

- जाति व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई

प्रतिद्वंद्वी आंदोलन का जन्म हुआ। इस आंदोलन ने दलितों और मजदूरों को एक आवाज प्रदान की। यह दलित पैंथर की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि है।

- दमनकारी जाति व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई।
- वे सत्ता की राजनीति के लिए निवारक के रूप में कार्य करते थे।
- डॉ. अम्बेडकर की मान्यताओं पर चर्चा का क्षेत्र विक्सित किया ।
- दलित साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- एक प्रतिसंस्कृति और एक विशिष्ट पहचान स्थापित करने में सफल रहे।
- उन्होंने 'हरिजन' और 'अछूत' जैसे वाक्यांशों के स्थान पर 'दलित' नाम को लोकप्रिय बनाया।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में हुए धर्मांतरण ने दलित समाज को सामाजिक और मानसिक मुक्ति दी। बौद्ध धर्म ने समानता और मानवता के आधार पर एक नई संस्कृति दी। अंबेडकरवाद से प्रेरित होकर दलित साहित्य ने सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। दलित पैंथर आंदोलन ने इस चेतना को और तेज किया, जिससे दलितों की नई पहचान और आत्मविश्वास को बल मिला।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. बौद्ध धर्म ने दलित समाज की पहचान को किस प्रकार बदल दिया? व्यकत कीजिए ।
2. डॉ. भीमराव अंबेडकर ने दलित साहित्य को किस प्रकार प्रेरित किया स्पष्ट कीजिए ।
3. दलित पैंथर आंदोलन से कला और साहित्य की उपलब्धियाँ स्पष्ट कीजिए ।
4. अंबेडकरवाद जाति व्यवस्था को कैसे चुनौती देता है? इस विषय पर अपना मत प्रकट कीजिए ।
5. प्राचीन बौद्ध साहित्य और आधुनिक दलित साहित्य के अंतर स्पष्ट कीजिए ।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश, वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल, भारती - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
2. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
3. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
4. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

दलित साहित्य और मार्क्सवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- वर्ण, जाति और वर्ग जैसे अवधारणाओं के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल को समझता है
- मार्क्सवाद और अंबेडकरवाद में अंतर और साम्यताः इन दोनों विचारधाराओं के दृष्टिकोण, लक्ष्यों और सामाजिक समस्याओं को समझता है
- दलित आंदोलन और श्रमिक आंदोलन से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहाँ जाति, वर्ग और वर्ण व्यवस्था ने सामाजिक संरचना को जटिल बना दिया है। मार्क्सवाद और अंबेडकरवाद – दोनों विचारधाराएँ सामाजिक शोषण के विरुद्ध खड़ी हुईं, लेकिन दोनों के दृष्टि कोण और संघर्ष के क्षेत्र भिन्न हैं। मार्क्सवाद आर्थिक शोषण और वर्ग-संघर्ष पर केंद्रित है, जबकि अंबेडकरवाद सामाजिक विषमता, विशेषतः जातिवाद और छुआछूत के विरोध में है। इस अध्ययन में दोनों विचारधाराओं का तुलनात्मक विश्लेषण और उनका भारतीय समाज में स्थान प्रस्तुत किया गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

'द्वंद्वात्मक-भौतिकवाद', कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो, औद्योगिकीकरण

Discussion / चर्चा

1.3.1 भारतीय सामाजिक संरचना-वर्ण, जाति, वर्ग

भारत एक विशाल देश है जिसमें सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता के साथ-साथ एकता भी है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्पष्ट है कि भारत एशिया और यूरोप के विभिन्न भागों से आए प्रवासियों का केंद्र रहा है। कुल मिलाकर वे एक सांस्कृतिक विविधता का निर्माण करते हैं, जो भारत का अभिन्न अंग बनकर विभिन्न परिवर्तनों से गुज़री है, जो भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना का मोज़ेक पैटर्न बनाती है।

▶ भारत विविधताओं में एकता का प्रतीक है

विविधता न केवल भारत की अनूठी विशेषता है, बल्कि इसके आंतरिक मूल को भी सुंदरता प्रदान करती है। न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से, बल्कि नस्लीय और धार्मिक रूप से भी भारत विविधताओं से बहुत समृद्ध है। दुनिया का कोई भी देश भारत के समाज विविधताओं से समृद्ध नहीं है। नस्लीय विविधता की बात करें तो यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत में छह मुख्य नस्लीय प्रकारों के तत्व मौजूद हैं: नीग्रिटो, प्रोटो ऑस्ट्रेलॉयड, मंगोलॉयड, भूमध्यसागरीय, पश्चिमी ब्रेकीसेफल्म और नॉर्डिक। धार्मिक रूप से भारत में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन, यहूदी और बौद्ध आदि धर्मों के लोग रहते हैं।

1.3.2 मार्क्सवाद का अर्थ

▶ मार्क्स ने हीगल के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को विकसित कर समाज और इतिहास के विकास का आधार बनाया

कार्ल मार्क्स ने हीगल के 'द्वंद्वात्मक 'भौतिकवाद' के सिद्धांत को स्वीकार कर, उसका विकास किया। हीगल का 'द्वंद्वात्मक 'भौतिकवाद' का सिद्धांत उनके 'एन्सायक्लोपीडिया' ग्रंथ में रखा हुआ है। मार्क्स ने 'द्वंद्वात्मक 'भौतिकवाद' को उपयुक्त रूप दिया और यह दर्शाया कि द्वंद्वात्मक-विकास का तत्व जड़ वस्तुओं, सामाजिक संबंधों और मानवीय इतिहास, इन सभी में होता है। 'किसी भी क्षेत्र में अपने अस्तित्व के पुराने स्वरूप का नाश किए बगैर विकास नहीं होता' यह मार्क्सवाद के 'द्वंद्वात्मक विकासवाद' का सूत्र है।

▶ मार्क्सवाद शोषण और वर्ग-संघर्ष के सिद्धांत पर आधारित है

मार्क्सवाद 'द्वंद्वात्मक-विकासवाद' और 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' पर आधारित है। मार्क्सवाद के अनुसार आज तक का इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है और ये वर्ग उत्पादन संबंधों के कारण निर्मित होते हैं। मार्क्स प्रणीत भौतिकवाद का मानना है कि उत्पादन पद्धति, उत्पादक संबंध और वर्गकलह के कारण सामाजिक स्थितियों में अंतर होता है। धर्म, नीति, कला-साहित्य और संस्कृति का आधार आर्थिक प्रेरणा है, यह ऐतिहासिक भौतिकवाद का सूत्र है। कार्ल मार्क्स ने अतिरिक्त मूल्यों (Surplus Value) का सिद्धांत रखकर, यह सिद्ध किया कि पूँजीवाद में मजदूरों का शोषण कैसे होता है। पूँजीपति मजदूर को छः घंटों का मुआवजा देकर उसकी ओर से बारह घंटों का काम करवा लेता है और इस प्रकार पूँजीपति को छः घंटों का श्रम मुफ्त में मिल जाता है। इस प्रकार पूँजीपति के लिए मुफ्त में मिले हुए श्रम का अतिरिक्त मूल्य-तैयार हो जाता है। इन अतिरिक्त मूल्यों के आगे पूँजी में रूपांतर होता है और मालिक की ओर से मजदूरों का शोषण जारी रहता है।

▶ 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' में वर्गहीन समाज के लिए मजदूर क्रांति का आह्वान किया गया है

कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने 1848 में 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' प्रकाशित किया। इस घोषणा-पत्र में साम्यवादी समाज-रचना का वर्णन किया है। पूँजीपति समाज-व्यवस्था समाप्त करने के लिए और एक वर्गहीन समाज की स्थापना केलिए सभी मजदूरों को एक होकर क्रांति करनी चाहिए, यही कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र का सार है। मार्क्सवाद ने पूँजीवाद का नाश करने के लिए हिंसात्मक वर्ग-संघर्ष की भूमिका को भी प्रोत्साहित किया। इतना ही नहीं, मार्क्स और एंग्लस ने भी कहा कि मजदूर क्रांति के बाद शोषणमुक्त वर्गविहीन समाज रचना के अस्तित्व में आने तक, कुछ समय के लिए मजदूरों की एकतंत्री तानाशाही आवश्यक है।

SGOU

कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो ने घोषणा की कि संपत्ति का निजी (Private) अधिकार नष्ट किया जाएगा तथा वंश परंपरागत अधिकारों को निरस्त कर अधिकोष का राष्ट्रीयकरण तथा यातायात से निजी अधिकार को नष्ट कर सभी अधिकार राजसत्ता को सौंप दिए जाएँगे। मार्क्सवाद शोषितों का विचार है। यानि कि अधिकार संपन्न लोगों द्वारा चलाए गए क्रूर शोषण को निर्दयता से कुचलना और शोषितों यानी अधिकार विहीन लोगों को सभी तरह का न्याय दिलाना मार्क्सवाद का प्रमुख लक्ष्य है। शोषणमुक्त वर्गविहीन समाज रचना का निर्माण करना मार्क्सवाद का लक्ष्य है।

▶ मार्क्सवाद का लक्ष्य शोषणमुक्त और वर्गविहीन समाज की स्थापना है

1.3.3 भारतीय समाज व्यवस्था में मार्क्स की कमियाँ

मार्क्स, एंगल्स और लेनिन ने मार्क्सवाद का विकास किया। मार्क्स, एंगल्स, लेनिन और स्टालिन के ग्रंथों के अतिरिक्त, स्टालिन के बाद के काल में मार्क्सवाद में बहुत कुछ नए विचार जोड़े गए। खुश्चोव ने स्टालिन की अनियंत्रित सत्ता के विरुद्ध अभियान चलाया। चीन में माओत्से तुंग और उनके सहयोगियों ने 'श्रमिकों की सत्ता' का सिद्धांत प्रस्तुत किया। गोर्बोचोव्ह ने सोवियत रूस में आर्थिक सुधार और खुलेपन की घोषणा की। बोरिस येलत्सिन ने व्यक्ति स्वातंत्र्य का उद्घोष कर कम्युनिस्ट पार्टी की सत्ता समाप्त कर दी। पश्चिमी मार्क्सवादी विचारकों ने भी मार्क्सवाद में नए विचार जोड़े। परंतु भारतीय विचारकों ने हिंदू समाज व्यवस्था के संदर्भ में मार्क्सवाद के आधार पर उसका परीक्षण कर कोई विकास किया ऐसा नज़र नहीं आता। मार्क्सवादियों ने सही मायनो में छुआछूत की ओर ध्यान दिया ही नहीं। ऐसे हुआ होता तो भारतीय परिस्थिति के अनुकूल मार्क्सवाद का सृजनशील रूप विकसित हुआ होता।

▶ मार्क्सवाद समय के साथ विकसित हुआ, पर भारत में इसकी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार रचना नहीं हो सकी

समाजवादी लोगों ने राजनीतिक और आर्थिक आंदोलन पर जोर दिया। सामाजिक क्रांति का उद्देश्य प्राप्त करने के लिए इस आंदोलन को सांस्कृतिक आंदोलन से जोड़ना आवश्यक था। समाजवादियों ने ऐसा नहीं किया। कम्युनिस्ट आंदोलन सामाजिक शैक्षणिक और सांस्कृतिक प्रश्नों को संबोधित भारतीय मार्क्सवादी विचार प्रणाली विकसित हुई होती। भारत में मार्क्सवादी लोग मजदूरों के प्रश्नों पर लड़ते रहे लेकिन जातिव्यवस्था और छुआछूत की ओर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया। इसी कारण मार्क्सवादी दलितों के विश्वास के पात्र नहीं बन सके।

▶ भारतीय मार्क्सवादियों ने जाति और छुआछूत पर ध्यान नहीं दिया, इसलिए वे दलितों का विश्वास नहीं जीत सके

भारतीय सामाजिक परिस्थिति के संदर्भ में मार्क्सवाद का विकास होना चाहिए। मार्क्स ने भारतीय देहातों की व्यवस्था का उत्कृष्टता से विश्लेषण किया है। इस विश्लेषण को जाति व्यवस्था, धर्म और नीति के संदर्भ से जोड़ कर नए विचारों का निर्माण करना होगा। हिंदू धर्म द्वारा निर्मित विषम व्यवस्था पर विचार किए बिना, भारतीय मार्क्सवाद विकसित नहीं हो सकता क्योंकि भारतीय समाज में विषमता केवल पूँजीवाद के कारण से ही नहीं है। यह विषमता संश्लिष्ट स्वरूप की है। हिंदू धर्म में जाति, नीति और कल्पना का मूल्यांकन किए बिना आप आगे नहीं जा सकेंगे। सामाजिक और आर्थिक प्रश्नों पर एकत्रित संघर्ष करना होगा जिसके लिए मार्क्सवाद को तीन काम करने पड़ेंगे।

1. किसान और मजदूरों को आर्थिक संघर्ष के लिए तैयार करना।
2. जन-आंदोलन में अन्य वर्गों के साथ शामिल होना।
3. सामाजिक जागृति की प्रक्रिया व्यापक और गहरी करना। भारतीय समाज व्यवस्था के संदर्भ में मार्क्स का विचार अपूर्ण लगता है। इसलिए मार्क्सवाद को भारतीय समाज व्यवस्था के संदर्भ में विकसित करना चाहिए।

▶ भारतीय समाज की विषमता को समझकर मार्क्सवाद को जाति, धर्म और नीति के संदर्भ में विकसित करना जरूरी है

1.3.4 भारतीय मार्क्सवाद के संदर्भ में डॉ अंबेडकर की भूमिका

बाबासाहब अंबेडकर का जीवन और कार्य बहिष्कृतों के हित के लिए व्यतीत हुआ है। उन्होंने धर्म, अर्थ, साहित्य, राजनीति, समाजनीति, कानून और स्वतंत्रता का, अस्पृश्यों के हितों के संदर्भ में विचार किया। बाबासाहब अंबेडकर ने मार्क्सवाद का विचार करते समय अछूतों के हितों को नजरअंदाज नहीं किया। वे कहते हैं, 'जातिभेद और छुआछूत यह दोनों कम्युनिज्म में नहीं हैं।' बाबासाहब को मार्क्सवाद अपूर्ण लगता है क्योंकि मार्क्सवाद में जाति विनाश का विचार नहीं है। दरअसल उन्हें दलितों की 'अस्पृश्यता' नष्ट होना ही सबसे अधिक महत्व की बात लगती है। इसलिए वे कहते हैं, 'लेनिन ने हिंदुस्तान में जन्म लिया होता तो पहले उन्होंने जातिभेद और छुआछूत को पूरी तरह से नष्ट किया होता और वैसा किए बिना क्रांति की कल्पना उनके मन में आई ही नहीं होती। या तिलक बहिष्कृत वर्ग में पैदा होते तो उन्होंने 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' ऐसी गर्जना करने की बजाय 'अस्पृश्यता नष्ट करना ही मेरा परम कर्तव्य है' ऐसा ही विश्वास के साथ कहा होता। बाबासाहब अंबेडकर ने लेनिन और तिलक के संदर्भ में जो विचार व्यक्त किए हैं उसे देखने पर ऐसा लगता है कि बाबासाहब ' क्रांति' और 'स्वराज्य' की अपेक्षा जाति अंत को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। 'क्रांति' और 'स्वराज्य' दोनों ही राजनैतिक ध्येय से प्रेरित आंदोलन हैं लेकिन यह स्पष्ट है कि बाबासाहब सदैव इस मत पर दृढ़ रहे कि भारत में राजनैतिक क्रांति की अपेक्षा सामाजिक क्रांति अधिक महत्त्वपूर्ण है।

▶ बाबासाहब अंबेडकर ने जाति और अस्पृश्यता के नाश को सामाजिक क्रांति माना, जो राजनीतिक क्रांति से भी महत्वपूर्ण है

भारतीय हिंदू समाज अनेक जातियों-उपजातियों के गुटों में विभाजित है। यह जातिव्यवस्था केवल समाज के विभाजन पर आधारित नहीं है। यह ऊँच-नीच के श्रेणीबद्ध विचारों पर आधारित है। हर एक जाति एक दूसरे को हीन समझती है। हर एक जाति दूसरी जाति को द्वेष से देखती है। ये जातियों नष्ट हुई तो कई जातियों को दूसरों की अपेक्षा अधिक शक्ति और इज्जत गंवानी पड़ेगी, इस कारण हिंदू समाज में वर्ग-भावना दिखाई नहीं देती। इसलिए बाबासाहब अंबेडकर कहते हैं, 'जाति संस्था केवल श्रमविभाजन नहीं है, वह तो श्रमिकों का ही विभाजन है।'

▶ हिंदू जातिव्यवस्था श्रम विभाजन नहीं, बल्कि श्रमिकों का विभाजन है, जो द्वेष और हीनता पर आधारित है

विभाजन धर्म नियम के आधार पर और वर्गव्यवस्था ऊँच-नीच की कल्पना के आधार पर है। इसलिए सवर्ण शोषित और दलित शोषित इन दोनों का सामाजिक स्तर एक नहीं होता। ब्राह्मण मजदूर और दलित मजदूर इन दोनों की सामाजिक-विषमता ध्यान में रखनी चाहिए। बाबासाहब अंबेडकर ने यह आलोचना की है कि इस सामाजिक

▶ अंबेडकर ने कहा, कम्युनिस्ट ब्रह्मणशाही पर चुप हैं

विषमता को कम्युनिस्ट नजरअंदाज करते हैं। ये कहते हैं, 'पूँजीवाद के विरुद्ध जोर-जोर से भाषण देते हुए मजदूर नेताओं को मैंने सुना है। पर मजदूरों में होनेवाली ब्रह्मणशाही के विरुद्ध बोलते हुए मैंने किसी भी मजदूर नेता को नहीं सुना। इस विषमता पर उनका मौन स्पष्टतः दिखाई देता है।' बाबासाहब को पूँजीवाद के साथ ही ब्राह्मणशाही भी शोषण का षडयंत्र लगता है। बाबासाहब अंबेडकर ने इसकी आलोचना करते हुए कहा है कि ब्राह्मणशाही के दमन तंत्र के विरुद्ध मजदूर नेता नहीं बोलते हैं।' मजदूर नेताओं द्वारा ब्राह्मणशाही की आलोचना नहीं करने का कारण बताते हुए बाबासाहब अंबेडकर कहते हैं, 'देव और धर्म के संबंध में कम्युनिस्टों के मत खुले तौर पर स्पष्ट किए जाएँ तो कम्युनिस्टों को आज की स्थिति में मजदूरों में एक भी अनुयायी नहीं मिलेगा।'

बाबासाहब को लगता है कि भारत में कम्युनिस्ट ने ब्राह्मणशाही के विरुद्ध संघर्ष नहीं किया। हिंदू समाज व्यवस्था दलितों का शोषण करने वाली है। हिंदू सवर्ण मानसिकता के कारण दलितों पर अन्याय और अत्याचार हुए। हिंदू धर्म ने दलितों को गुलाम बनाया। इसलिए बाबासाहब ने गुलामों की सामाजिक विषमता के संघर्ष को प्राथमिकता दी।

1.3.5 मार्कर्स -अंबेडकर समन्वय की मांग

▶ कम्युनिसें ने ब्राह्मणशाही का विरोध नहीं किया, इसलिए दलितों का शोषण जारी रहा

अंबेडकरवाद में से मार्कर्सवाद घटा कर अथवा मार्क्सवाद में से अंबेडकरवाद कम कर 'दलित साहित्य' का मतलबी समीकरण रखने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी केवल आत्मवंचना करते हैं। यदि ऐसा नहीं है तो उनके हाथ से जाने अनजाने साहित्य-द्रोह और समाज-द्रोह हो रहा है।

अंबेडकरवाद का केंद्रबिंदु आम आदमी है। मार्कर्सवाद का केंद्र शोषित, पीड़ित आम आदमी है। बौद्ध दर्शन भी मनुष्य का और उसके शोषण का विचार करता है। बाबासाहेब अंबेडकर, कार्ल मार्कर्स और गौतम बुद्ध के तत्त्वज्ञान के सार को एक ही मानते है-वह है मनुष्य की शोषण से मुक्ति। मार्कर्स, अंबेडकर और बुद्ध के विचारों में साम्य है। ऐसा लगता है कि इस साम्य के कारण ही मार्कर्स और अंबेडकर के विचारों का समन्वय होना चाहिए। परंतु राजा ढाले को यह समन्वयवादी भूमिका मान्य नहीं है। वे ऐसा भौतिक विचार नहीं रखते कि हम गरीब हैं इसलिए हम अछूत हैं, यह सत्य नहीं है। वे कहते हैं हम अछूत हैं इसलिए गरीब हैं-यह सत्य है। लेकिन हम गरीब हैं इसलिए हम अछूत हैं, इस प्रकार के तर्क से तो भारत में सभी गरीब अछूत सिद्ध हुए होते, पर वैसे नहीं है। हमारी छुआछूत का मूल गरीबी में न होकर, हमारी गरीबी का मूल छुआछूत में है। ठीक वैसे ही हमारी छुआछूत का मूल आज के वास्तव में नहीं, वह तो यहाँ के इतिहास और धर्म में है। राजा ढाले का विवेचन है कि छुआछूत का मूल पूँजीवादी व्यवस्था में न होकर भारतीय इतिहास और हिंदू धर्म में है, जिसके अनुसार छुआछूत पूँजीवाद का फल न होकर हिंदू धर्म-व्यवस्था का फल है। दलितों की दरिद्रता और छुआछूत यहाँ के इतिहास और धर्म में है और उसी मूल ने आज महान वृक्ष का रूप धारण कर लिया है।

▶ दलितों की गरीबी छुआछूत से है, जो धर्म और इतिहास में है

SGOU

छुआछूत का स्थान जाति भेद ने ले लिया है। लेकिन यह ध्यान रहे कि इस जाति-भेद का मूल इतिहास अथवा धर्म में नहीं बल्कि वह आज की राजनीति में है।

दलितों की गरीबी का मूल छुआछूत में हुआ है। लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि वह केवल छुआछूत में ही है। अंतर्जातीय विवाह, धर्मांतरण, छुआछूत के विरुद्ध बने कानून, दलितों के आंदोलन, पुरोगामी विचार और ज्ञान-विज्ञान, तंत्रज्ञान से परिवर्तित आज के समाज जीवन के कारण, अब छुआछूत तो समाप्त हो रही है लेकिन जाति-भेद का दानव उभर कर शक्तिशाली रूप से ऊपर आ रहा है। इसके कारण दलितों के सामाजिक जीवन और प्रश्न अधिक उग्र बने हैं। उसके साथ सभी क्षेत्रों में व्याप्त बेकारी, भ्रष्टाचार, बढ़ती हुई आबादी, महंगाई, मुट्ठी भर धनिकों के हाथ में संगठित उत्पादन क्षेत्र और राजनैतिक सत्ता, वीरान पड़े हुए देहात और शहरों में बढ़ने वाली गंदी बस्तियों के कारण, दबे-कुचले हुए दलितों के जीवन को, इन सबका मूल इतिहास और धर्म में है, यह कह कर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह ध्यान रखना चाहिए कि इन सबका मूल आज की वर्तमान विषम व्यवस्था में है। दलितों की दरिद्रता का मूल धर्म और इतिहास में भले ही हुआ है लेकिन उसका वर्तामान स्वरूप समूल परिवर्तित हो गया है। यह भी ध्यान देना होगा कि शासन की लोक कल्याणकारी योजनाएँ, आरक्षित स्थान और दलितों में नए रूप में उभरते मध्यवर्ग के कारण दलितों की दरिद्रता का स्वरूप केवल धार्मिक और ऐतिहासिक नहीं रहा, वह और अधिक जटिल हुआ है।

▶ दलितों की गरीबी छुआछूत से है, लेकिन अब वह और जटिल हो गई है

दलितों की आर्थिक दासता का कारण यहाँ की भारतीय समाज व्यवस्था है तो इस से मुक्ति का अंतिम मार्ग मार्कर्सवाद और अंबेडकरवाद के समन्वय में मिल सकेगा। दलित और सवर्णों को समान आर्थिक संबंधों का ज्ञान और संगठित होने की प्रेरणा मार्कर्सवाद दे सकता है क्योंकि बढ़ते हुए औद्योगिकीकरण से शहर बढ़ रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र में यांत्रिकीकरण के कारण और ज़मीन सम्बन्धी नए कानून के कारण जाति-व्यवस्था में दरारें पड़ जाने से वर्ग-व्यवस्था अस्तित्व में आ रही है। पुरानी जाति व्यवस्था में दरारें तो पड़ी थी लेकिन उससे भी जातीय-भावना (Caste spirit) समाप्त नहीं हुई। समाज में एक तरफ जातीय-भावना प्रबल हुई है, तो शोषितों का शोषण और उनके समत्व भावना के कारण जातीय-भावना के पार जाकर वर्गीय-भावना भी बढ़ रही है। आंदोलन और संगठन में वाम विचारधारा ज़ोर पकड़ रही है जिसके कारण ऐसा लगता है कि जाति-व्यवस्था नष्ट होकर वर्ग-व्यवस्था अस्तित्व में आ रही है।

▶ दलितों की मुक्ति के लिए मार्कर्सवाद और अंबेडकरवाद का मिलाजुला रास्ता ज़रूरी है

1.3.6 साम्यवादी समीक्षा और दलित समीक्षा

साम्यवादी साहित्यिक दृष्टि का निर्माण वर्ग-संघर्ष राजनीति और अर्थशास्त्र से हुआ है। साम्यवादी समीक्षा मार्कर्स और एंगल्स की साहित्य विषयक भूमिका से निर्मित हुई; तो दलित समीक्षा का निर्माण अंबेडकरी विचारों से हुआ। मार्कर्स और एंगल्स ने कला, स्वरूप, शास्त्र विषय के संबंध में विस्तारपूर्वक लेखन नहीं किया। उनके लेखन में से उनकी साहित्य विषयक भूमिका की जानकारी होती है। उन्हीं के समान ही बाबासाहब

▶ साम्यवादी और दलित समीक्षा दोनों शोषण के खिलाफ हैं

अंबेडकर ने भी कला, स्वरूप, शास्त्र विषय के संबंध में विस्तारपूर्वक लेखन नहीं किया। साम्यवादी समीक्षा और दलित समीक्षा दोनों में अनेक बातों में साम्य दीखता है।

1.3.7 विचारों का आधार संस्थान होने वाली समीक्षा

- साम्यवादी समीक्षा शोषण मुक्त समाज का सपना देखती है और स्पष्ट विचारों पर आधारित है

साम्यवादी समीक्षा और दलित समीक्षा दोनों का निर्माण एक निश्चित वैचारिक भूमिका में हुआ है। ऐतिहासिक भौतिकवाद की भूमिका से तैयार होने के कारण मार्कर्सवादी साहित्य-समीक्षा के पास मानवीय जीवन के संबंध में कुछ निश्चित निष्कर्ष और संभाव्य विकास की रूपरेखा है। चूँकि मार्कर्सवाद शोषण मुक्त समाज रचना का स्वप्न देने वाला मानवतावादी विचार है। इसलिए साम्यवादी साहित्य समीक्षा साम्यवादी जीवन-दर्शन के आधार पर खड़ी है। इस समीक्षा के पास निश्चित वैचारिक आधार होने के कारण, उसके स्वरूप और प्रयोजन में दृढ़ स्पष्टता व्यक्त होती है। इस संदर्भ में मैक्सिम गोर्की के विचार जान लेना उचित होगा।

- मार्कर्सवादी और दलित साहित्य का लक्ष्य शोषितों को जागरूक कर क्रांति की प्रेरणा देना है

मार्कर्सवादी साहित्य समीक्षा और दलित साहित्य समीक्षा निश्चित विचार से प्रेरित होकर निर्मित होती है इसलिए इस साहित्य सर्जना के पीछे ऐसा एक निश्चित लक्ष्य है। मार्क्स और अंबेडकर के विचारों में मानव-मुक्ति का संकल्प है। इन विचारों की प्रेरणा से रची जाने वाली कृतियाँ मानवता की प्रतिबद्धता के आधार पर होती है। साम्यवादी साहित्य के प्रयोजन के संदर्भ में मैक्सिम गोर्की कहते हैं, 'लोगों में खास भावना जाग्रत करना, जीवन में खास परिस्थिति के संबंध में उनमें खास दृष्टिकोण जाने-अनजाने निर्मित करना, यह सभी कलाओं का लक्ष्य होता है।' लोगों को क्रांतिमुखी करना साम्यवादी कला का प्रयोजन है। ऐसी ही भूमिका खांडेकर ने दलित साहित्य के संदर्भ में अपनाई है। वे कहते हैं, 'क्रांतिमुखी समाज में लेखन होना चाहिए क्योंकि जिन विचारों की प्रेरक शक्ति पर समाज क्रांतिगामी होता है, उन विचारों को लोगों तक पहुँचाना आवश्यक है। साम्यवादी लेखक और दलित लेखक शोषितों का पक्ष लेने वाले हैं। लोगों को उनकी गुलामी का ज्ञान करा देना ही दोनों साहित्य का लक्ष्य है। इस कारण से साहित्य में उचित ज्ञान निर्मित होता है कि नहीं उसकी जांच करना समीक्षा का कार्य होता है। इस साहित्य की समीक्षा का आग्रह है कि उस में से सृजनशील आकांक्षा, संघर्ष का निर्धारण, साहस और क्रांतिकारी गुणों का उदय व्यक्त हो।

1.3.8 जीवनवादी साहित्य समीक्षा

- मार्कर्सवादी और दलित साहित्य दोनों यथार्थवादी हैं, जिसमें दलित साहित्य जीवन के अनुभवों पर केंद्रित है

मार्कर्सवादी साहित्य और दलित साहित्य दोनों ही जीवनवादी साहित्यिक धाराएँ हैं। इसलिए इस की समीक्षा भी जीवनवादी है। मार्कर्सवादी साहित्य यथार्थवादी साहित्य है। दलित साहित्य भी यथार्थवादी साहित्य है। इस का पथ स्वतंत्र और अलग है। मनोरंजन इस लक्ष्य नहीं दरअसल दलित साहित्य यथार्थ से, अनुभूति से निर्मित होता है। दलित साहित्य में 'जीवनवाद' व्यापक प्रयोग है। मराठी साहित्य के मध्यवर्गीय लेखकों में जीवनवाद बहुत कम मात्रा में व्याप्त है। बालविवाह, पुनर्विवाह, विधवा-विवाह, प्रौढ़-विवाह, प्रेम-विवाह, तलाक (divorce), पातिव्रत्य, कठिन वैधव्य, स्त्री शिक्षा,

नशाबंदी, दहेज प्रथा से संबंधित प्रश्नों के आसपास मराठी साहित्य का जीवनवाद घूमता हुआ नज़र आता है। भारतीय साहित्य को श्रेष्ठ जीवनवादी विचार देने का ऐतिहासिक कार्य दलित साहित्य सर्जकों को करना है। माकर्स एंगल्स यथार्थवाद को वैश्विक कला की एक सर्वश्रेष्ठ सिद्धि मानते हैं। दलित लेखक भी कलावाद को नकारता है और जीवनवाद को स्वीकारता है।

1.3.9 कला मूल्यों का नकार नहीं

- माकर्सवादी और दलित साहित्य यथार्थवादी, कला और जीवन के समन्वय से क्रांतिकारी होता है

माकर्सवादी साहित्य और दलित साहित्य जीवनवादी है और कलावाद को नकारता तो है। वह सोद्देश्य साहित्य है और प्रतिबद्ध भी। लेकिन कला के महत्त्व को कम करके नहीं आंकता। मित्रा कॉटस्की को लिखे हुए पत्र में एंगल्स ने कहा है 'मेरा, यह लक्ष्य है' ऐसा सीधे पाठकों से खुले तौर पर न कह कर प्रत्यक्ष घटना प्रसंगों में से 'वह लक्ष्य' व्यक्त करना चाहिए'। इसका अर्थ यह होता है कि साहित्य के खुले प्रचारी स्वरूप को माकर्सवाद मान्यता नहीं देता। इस संदर्भ में मैक्सिम गोर्की कहते हैं, 'रोमांचवाद और यथार्थवाद दोनों का संयोग हमारे महान लेखकों की बहुत बड़ी विशेषता सिद्ध हुई है इसलिए उनके लेखन में अभिजातता निर्मित हुई है और सभी विश्वस्तरीय साहित्य पर उनके लेखन का बड़ी मात्रा में और साफ तौर पर सतत बहुत प्रभाव पड़ा है। गोर्की साहित्य की अभिजातता के विषय में सजग हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि माकर्सवाद साहित्य को साधन न मानते हुए साध्य मानता है। दलित साहित्य के संदर्भ में यशवंत मनोहर कहते हैं, 'श्रेष्ठ जीवनमूल्यों का और कला मूल्यों का अपूर्व एकरस मिलन समारोह साकार करने वाला साहित्य भविष्य में दलित साहित्य के रूप में पहचाना जाएगा। उनके द्वारा रचा हुआ क्रांतिकारी कलावाद मराठी साहित्य के इतिहास के लिए गौरव की महिमा होगी। यशवंत मनोहर ने जीवनमूल्य और कलामूल्य दोनों की 'अपूर्व एकरसता' को महत्त्व दिया है। यह भूमिका गोर्की और एंगल्स के विचारों से नाता रखने वाली है।

1.3.10 आम आदमी ही श्रेष्ठ मूल्य

- माकर्सवादी और दलित साहित्य मनुष्य और उसकी मुक्ति पर केंद्रित हैं

मार्क्सवादी साहित्य और दलित साहित्य मनुष्य को श्रेष्ठ मानवतावादी मानता है। मनुष्य की महानता का विचार इस साहित्य की समीक्षा में व्यक्त हुआ है। माकर्सवाद मानवतावादी है। कला और साहित्य का केंद्र मनुष्य है। मैक्सिम गोर्की कहते हैं, 'अपने संसार में जो कुछ सबसे सुंदर है वह मनुष्य के श्रम से निर्मित हुआ है, संपूर्ण नैसर्गिक शक्ति का वही भावी मालिक है।' मैक्सिम गोर्की ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना है। दलित लेखकों की ऐसी श्रद्धा है कि इस इहलोक में मनुष्य की अपेक्षा कोई भी काल्पनिक और ऐहिक वस्तु महान नहीं हो सकती। दलित साहित्य और माकर्सवादी साहित्य ने मनुष्य को केंद्र माना है। इसलिए इस साहित्य की प्रेरणा, भूमिका और प्रतिपाद्य में साम्य दिखाई देता है। मनुष्य का शोषण के विरुद्ध विद्रोह और मनुष्य की मुक्ति का समर्थन, इस साहित्य की समीक्षा में विशेष रूप से व्यक्त हुआ है।

1.3.11 आम आदमी ही नायक

> ▶ दलित और मार्क्सवादी साहित्य का नया नायक आम आदमी है, जिसे पहले स्थापित लेखकों ने नजरअंदाज किया

दलित साहित्य और मार्क्सवादी साहित्य का नायक आम आदमी है। यह नायक नया है। स्थापित लेखकों के वाङ्मय में यह नायक कुचला गया है। स्थापित लेखकों ने सामान्य मनुष्य में कभी नायक को नहीं देखा। इस संदर्भ में ए. झीस कहते हैं, 'समाजवादी कला ने क्रांतिकारक, लड़ाकू, निर्माणक्षम नये नायक ही केवल सामने नहीं लाए, बल्कि समाजवादी कलाकारों की गुणात्मक दृष्टि से नई विशेषताएँ भी प्रदर्शित कीं। कला के इतिहास में आज तक ऐसे कलाकार अज्ञात थे। यही विचार दलित साहित्य की समीक्षा में पढ़ने को मिलता है। दलित साहित्य के संदर्भ में बाबूराव गायकवाड़ कहते हैं, 'देश के लिए लड़ने वाले सभी जाति धर्म के लोग थे पर निचले स्तर वाला अछूत मनुष्य वहाँ कभी नायक नहीं हुआ। इसलिए आधुनिक मराठी साहित्य में दलितों का चित्रण नहीं हुआ'।

दलित और मार्क्सवादी साहित्य ने आज तक अज्ञात रहे शोषित मनुष्य को अपने साहित्य का विषय बनाया। इस साहित्य की समीक्षा ने इस नए नायक के नायकत्व को प्रस्थापित और विशद किया और इस प्रकार उसके समर्थन की भूमिका अदा की। आम आदमी की मुक्ति का समर्थन करते हुए, इस साहित्य ने मनुष्य की शोषणवादी कला, साहित्य, समाज, संस्कृति, अर्थ और राजनीति आदि पर कड़ा प्रहार किया।

> ▶ दलित और मार्क्सवादी साहित्य शोषित आम आदमी की मुक्ति और मानवतावाद पर आधारित हैं

दलित साहित्य और मार्क्सवादी साहित्य निश्चित ध्येय और विचार से प्रेरित है, इसलिए दोनों के स्वरूप और प्रयोजन में साम्य दिखाई देता है। इन दोनों की प्रेरणा, भूमिका, प्रतिबद्धता मानवतावाद में मेल है। दलित लेखकों ने इस मानवतावाद को 'अंबेडकरवाद' नाम से संबोधित किया है और मार्क्सवादी लेखकों ने इस मानवतावाद को 'मार्क्सवाद' नाम दिया है। दोनों विचारों में, साहित्य में, आंदोलन में और समाज में आम आदमी की मुक्ति का और महानता का विचार व्यक्त हुआ है। देश, प्रदेश, भाषा और परिस्थिति में भिन्नता के होते हुए भी इस साहित्य की भूमिका में जो एकता दृष्टिगोचर है वह शोषण के विरुद्ध विद्रोह की भावना, मनुष्य की मुक्ति का समर्थन और मनुष्य की महानता का सम्मान ही है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

भारतीय सामाजिक संरचना में वर्ण, जाति और वर्ग की भूमिका को समझाते हुए, मार्क्सवाद और अंबेडकरवाद के विचारों की तुलना करता है। मार्क्सवाद आर्थिक शोषण और वर्ग-संघर्ष पर आधारित है, जबकि अंबेडकरवाद जाति, छुआछूत और सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष को केंद्र में रखता है। भारतीय समाज की विषमता केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक जातीय धार्मिक भी है, इसलिए अंबेडकर का दृष्टिकोण अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। दलित और मार्क्सवादी साहित्य दोनों आम आदमी की मुक्ति और यथार्थ पर आधारित हैं, परंतु भारतीय संदर्भ में जातिव्यवस्था को समझे बिना कोई भी क्रांति अधूरी ही रहेगी।

SGOU

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भारत की सामाजिक संरचना में जाति, वर्ग और वर्ण की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
2. मार्कर्सवाद के अनुसार वर्ग-संघर्ष की संकल्पना क्या है? इसे उदाहरण सहित समझाइए।
3. डॉ. अंबेडकर ने मार्कर्सवाद की कौन-कौन सी कमियों को रेखांकित किया व्यक्त कीजिए।
4. दलित साहित्य और मार्कर्सवाद साहित्य में कौन-कौन से समान तत्व हैं? स्पष्ट कीजिए।
5. क्या मार्कर्सवाद और अंबेडकरवाद का समन्वय भारतीय समाज में सामाजिक न्याय ला सकता है, विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश, वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल, भारती - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे
6. मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य - रामविलास शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

दलित साहित्य और अमेरिकन नीग्रो साहित्य

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- नीग्रो और दलित समाज के ऐतिहासिक शोषण की तुलना समझ सकता है
- नीग्रो और दलित समाजों के सामाजिक अधिकारों से अवगत होता है
- दलित और नीग्रो साहित्य के बीच की समानता का परिचय होता है
- अनुभव आधारित लेखन की असली चित्रण समझ सकता है

Background / पृष्ठभूमि

नीग्रो और दलित, दोनों ही समाज लंबे समय से सामाजिक शोषण, अन्याय और भेदभाव का शिकार होते रहे। अमेरिका में नीग्रो गुलाम बनाकर लाए गए और भारत में दलितों को जन्म से ही अछूत मानकर उनसे अमानवीय व्यवहार किया गया। दोनों के अनुभवों से निकला साहित्य विद्रोह, वेदना आक्रोश और समानता की पुकार करता है। इनका साहित्य न केवल दर्द की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन का दस्तावेज भी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

बहिष्कृत समाज, अस्पृश्य जाति, उदारमतवादी, अस्मिता की पहचान केलिए संघर्ष, व्यवस्था परिवर्तनवादी

Discussion / चर्चा

- "कहानी (गल्प) एक ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक पहलू या मनोभाव को प्रदर्शित करना लेखक का उद्देश्य होता"

1.4.1 अमेरिकन नीग्रो और दलित

ई. स. 1619 के अगस्त मास में नीग्रो का अमेरिका में आयात होना शुरू हुआ और उनकी बिक्री होने लगी। यहीं से अमेरिकन नीग्रो की गुलामी की शुरुआत होती है। लेकिन बहिष्कृत समाज यानी दलित समाज की गुलामी पौराणिक काल से चली आ रही है। नीग्रो को अफ्रीकी खंड से पकड़ कर अमेरिकी में लाकर बेचा

गया। नीग्रो की मातृभूमि अफ्रीका है, लेकिन दलित भारत के ही हैं। उनकी मातृभूमि देश के बाहर नहीं है।

अमेरीका के श्वेत समाज ने खेती करने के लिए नीग्रो को जानवर के रूप में खरीदा था। नीग्रो को पकड़ने के लिए उनकी बस्तियों पर डकैतों की तरह सशस्त्र छापे डाले गए थे। छापे डालने वाले गोरे लोगों की काले लोग भी सहायता करते थे। छापे के समय बहुत मारपीट होती थी। फिर सबको जानवरों की तरह इकट्ठा करके अधिकार में ले लिया जाता था। इन नीग्रो गुलामों को भयंकर यातनाएँ दी जाती थीं। काले लोगों को सबक सिखाने के लिए उन्हें मृत्यु तक मारना, जीवित गाड़ देना आदि वारदातें हमेशा घटती थीं। गर्भवती नीग्रो स्त्रियों को अत्यधिक कठिन काम दिए जाने से उनका गर्भपात हो जाता था। काले मनुष्य के हाथ में कीलें टोक कर दीवार में लटकाना, उसका कान काट कर उसे खाने के लिए देना आदि नरकतुल्य यातनाएँ भी उन्हें जाती थीं। इतना ही नहीं, गर्भ में ही काले बच्चे पुरस्कार के रूप में बांट दिये जाते थे। ऋण अदायगी न होने पर साहूकारों का उस बच्चे पर गर्भावस्था से ही स्वामित्व का अधिकार था।

▶ अमेरिका में नीग्रो गुलामी 1619 में शुरू हुई, जबकि भारत में दलितों की गुलामी प्राचीन काल से है

गुलामों की संख्या अधिक होने पर वे विद्रोह कर सकते हैं; इस डर से उन्हें हमेशा बेच दिया जाता था। माँ से बच्चे को, पत्नी से पति को अलग कर बेचा और उनका पारिवारिक सम्बन्ध नष्ट कर दिया जाता था। गोरे लोगों को सदा ऐसा भय बना रहता था कि गुलाम बहुत दिनों तक एकत्र रहे तो उनमें आपसी लगाव हो जाएगा और वे विद्रोह कर देगें। मालिक द्वारा बेच दिए जाने के डर से गुलाम भाग जाते थे। अलेक्सहेली की 'द रूट्स' पुस्तक में इस यातना और जुल्मों का हृदय भेदक वर्णन मिलता है।

▶ गुलामों को अलग-अलग कर दिया जाता था ताकि वे विद्रोह न कर सकें

अस्पृश्य जाति को भी सदियों तक अस्पृश्य कह कर दूर रखा गया। उन पर त्रैवर्णिकों ने गुलामी लाद दी। उन्हें बहुत दिन यातना दी गयी। अनुसूचित जनजातियों की ऐसी अवस्था है कि उनका कोई 'एक गाँव नहीं, एक घर नहीं।' अपराध कर अथवा भीख माँग कर जीना ही उनकी जीविका का साधन रह गया। इतना ही नहीं आदिवासी जमात वन-कंदराओं में, जंगलों में वन्य जीवन जीती है।

▶ अस्पृश्य जाति को वर्षों तक दमन सहना पड़ा और आदिवासी कठिन जीवन जीते हैं

दलितों और नीग्रों की गुलामी और यातानायें ईश्वर निर्मित नहीं है। वह मानव निर्मित है। श्वेत और सवर्ण समाज ने नीग्रो और दलितों पर गुलामी लाद कर उनसे सख्ती से सेवा करवाई है। इस प्रकार मालिक समाज ने गुलाम समाज के स्वाभिमान और ज्ञान का शोषण किया है। नीग्रो और दलित समाज का अतीत एवं भविष्य हमेशा मालिकों के हाथ में रहा। इससे उनकी स्थिति अतिशोचनीय बनी।

▶ दलित और नीग्रो की गुलामी मानव निर्मित अत्याचार है

न्यूयॉर्क ने ई.से. 1706 में ऐसा कानून बनाया था जिससे क्रिश्चयन बनने पर भी नीग्रों की गुलामी समाप्त नहीं होगी। गुलाम स्वतंत्र नागरिक के विरुद्ध गवाही नहीं दे सकते। 'क्रिश्चनों के मन में भी कहीं तो मनु ही होगा क्योंकि मनु की ऐसी व्यवस्था है कि उच्चवर्णियों के विरुद्ध दास-शूद्रों की गवाही प्रमाण-स्वरूप न मानी जाए।

▶ 1706 में न्यूयॉर्क ने कहा: नीग्रों की गुलामी क्रिश्चयन बनने पर भी खत्म नहीं होगी

SGOU

वेदों ने नीग्रो के लिए अलग शिक्षा-संस्था, अलग भोजनगृह, रेल और बस में अलग स्थान और अलग वस्तियों की व्यवस्था की है। भारत में अस्पृश्यों को भी उसी प्रकार गाँव के बाहर रखा गया। उनके लिए अलग बस्ती, अलग पनघट और अलग श्मशान भूमि की व्यवस्था की गई। हिंदू धर्म व्यवस्था द्वारा शूद्रों को शिक्षा का अधिकार नकारने के कारण उनके लिए अलग शिक्षा-संस्थान होने का सवाल ही नहीं उठता। बाद में अंग्रेजों के समय में जब शिक्षा मिलने लगी तब उन्हें एक कोने में अथवा कक्षा की दहलीज पर बैठ कर शिक्षा लेनी पड़ती थी। इसका यथार्थ वर्णन प्र.ई. सोनकांबले के 'यादों के पछी' और शरणकुमार लिंबाले के 'अक्करमाशी' आत्मकथा में मिलता है।

▶ नीग्रो और दलित-दोनों ने शिक्षा और सामाजिक भेदभाव में समान अपमान झेला है

1.4.2 ब्लैक समीक्षा और दलित समीक्षा

नीग्रो और दलित का समाज और उनके वाङ्मय में बहुत साम्य है। इसका कारण यह है कि दोनों समाज के भाव-संसार में समानता है। उनकी वेदना, विद्रोह और आशा-आकांक्षा एक होने के कारण उनके साहित्य में साम्य दिखाई देता है। इसलिए नीग्रो और दलित साहित्य की समीक्षा में भी साम्य का दर्शन होता है।

▶ नीग्रो और दलित साहित्य में समान पीड़ा और संघर्ष के कारण गहरा साम्य है

1.4.3 श्वेत और सवर्ण लेखकों के लेखन के संबंध में आपत्ति

श्वेत लेखकों ने अपने वाङ्मय में नीग्रो का चित्रण किया है। गोरे लेखकों ने अमेरिकन साहित्य में नीग्रो का जो चित्रण किया, वह विकृत और विसंगतिपूर्ण है। उसमें नीग्रो मनुष्य दुष्ट प्रवृत्ति का बहुत बड़ा मक्कार और गंदा अथवा विदूषक दिखाया है। उसका ऐसा चित्रण किया है कि वह अपने रंग के अनुरूप अंतर्मन से भी काला दिखे। अमेरिका में हुई सिविल वार तक अमेरीकी वाङ्मय में नीग्रो का वास्तविक और सही चित्रण नहीं मिलता। भारत के मराठी लेखकों ने भी दलितों का सही चित्रण नहीं किया। सफेदपोश (Middle class) लेखकों ने कल्पना के आधार पर दलितों के जीवन पर उपन्यास लिखे। उनमें दलितों के जीवन के सच्चे चित्र न होने के कारण वे नीरस रह गए और वे उथले और विकृत बन गए। उनमें उदारमतवादी सफेदपोश (Middle class) दृष्टिकोण है। उसमें दलितों की प्रखर अस्मिता और लड़ाकू प्रवृत्ति दिखाई नहीं देती।

▶ श्वेत और सवर्ण लेखकों ने दलितों और नीग्रो का विकृत चित्रण किया।

'हमारा चित्रण हमारे समान नहीं हुआ। तुमने हमारा जो चित्र खींचा है, वह घिनौना और विकृत है। इसलिए तुम हमारा प्रखर और लड़ाकू चित्र खींच नहीं सकोगे।' यही नीग्रो और दलित समीक्षकों का तेवर रहा है।

नीग्रो समीक्षकों की केवल यही शिकायत नहीं है कि श्वेत लेखकों ने नीग्रो का वास्तविक चित्रण नहीं किया, उनकी यह भी शिकायत है कि नीग्रो लेखकों ने भी नीग्रो का उचित चित्रण नहीं किया। रॉबर्ट हेडेन के 'दी सिलेक्टेड पोएम्स' काव्य संग्रह का, जेम्स बॉल्डविन के 'गोइंग टू मीट द मैने' कथा संग्रह का, जॉन ए विलियम के 'दिस इज माय कंट्री टू' यात्रा-वर्णन आदि साहित्य का नीग्रो लेखकों ने उपहास किया है क्योंकि इन पुस्तकों में प्रबल नीग्रोवाद या ब्लैक चेतना व्यक्त नहीं हुई। इसी प्रकार की

▶ दलित और नीग्रो लेखकों का कहना है कि उनका सही चित्रण न सवर्ण कर पाए, न कुछ अपने

आलोचना शंकरराव खरात, ना. रा. शेंडे और अण्णभाऊ साठे के लेखन पर भी हुई है। सवर्ण लेखक दलितों का सही चित्रण नहीं कर सके तो उनकी भी आलोचना हुई है और दलित लेखकों द्वारा दलितों का वास्तविक चित्रण नहीं कर पाने पर उनकी भी आलोचना होना एक महत्त्वपूर्ण बात है। यह केवल जाति और वंशवाद से प्रभावित एकांगी दृष्टिकोण नहीं है।

1.4.4 दलित और नीग्रो साहित्य कौन लिख सकता है?

चेंदवणकर ने कहा। (चेंदवणकर प्रल्हाद ऑडिट-मनोगत) ऐसी ही प्रतिक्रिया नीग्रो लेखिका ग्वेंडोलिन बुक्स ने व्यक्त की है। उन्होंने कहा है, 'मैंने उन परिस्थितियों के बारे में लिखा है जो हमारे समाज की बर्बर घटनाओं से प्रभावित होती रही हैं।' (ग्वेंडोलिन ब्रुक्स/दि एंग्री मैन एंथोलॉजी ऑफ कन्टेम्परेरी अमेरिकन पोएट्री, स्टुवर्ट फ्रेबर्ट डेविट यंग, पृ. 52) प्रल्हाद चेंदवणकर और ग्वेंडोलिन बुक्स दोनों को अपने लेखन के विषय की पृष्ठभूमि एक ही दिखाई देती है। नीग्रो लेखक हो अथवा दलित लेखक, वह अपनी व्यथा, वेदना और असंतोष अपने लेखन से व्यक्त करता है। दलित लेखकों की जाति और नीग्रो लेखकों का 'वर्ण' (कलर) ही इन लेखकों का अलग अनुभव है। 'मेरी त्वचा का रंग स्वाभाविक रूप से मुझे दक्ष बनाता है' जेम्स बाल्डविन ने कहा। 'कलर कॉन्शसनेस' नीग्रो लेखकों का नया अनुभव है। 'हमारा संवाद नस्ल विरोधी है' अथवा 'वो जो वास्तव में अमेरिका से प्यार करते हैं वे इस वीर नीग्रो विद्रोह में शामिल हों और हमारे देश को बदलें और बचाएँ' अथवा 'दरअसल हम सर्वाधिक मुखर अमरीकी हैं' नीग्रो लेखकों का मत रहा है।

▶ दलित और नीग्रो लेखक अपने जाति और रंग के अनुभव से पीड़ा और विद्रोह व्यक्त करते हैं

'हमारे अनुभव हमें लिखने के लिए प्रेरित करते हैं'- दलित और नीग्रो लेखकों की यह मान्यता है। इसका अर्थ यह होता है कि 'हमारे अनुभव, जिस में हमारा जीवन है अन्य लेखक व्यक्त नहीं कर सकते।' दलित लेखक अपने अनुभव जिस तीव्रता से व्यक्त करते हैं उसी तीव्रता से दलितेतर कर पाएंगे ऐसा मानना कठिन है। नीग्रो लेखक और श्वेत लेखक के संदर्भ में क्लाउड मैके के मत पर विचार करना होगा। वे कहते हैं, 'एक अश्वेत तथा श्वेत लेखक में समानता नहीं हो सकती, चाहे वे समान क्षमता के ही क्यों न हों।' उनका यह मत है कि नीग्रो लेखक अपने अनुभव अधिक तीव्रता से व्यक्त कर सकते हैं, इसलिए श्रीमती स्टोव नामक श्वेत लेखिका के 'अंकल टॉम्स केबिन' नामक उपन्यास का बाद के दिनों में नीग्रो ने उपहास किया है।

▶ दलित और नीग्रो लेखक अपने अनुभव से लिखते हैं, जो अन्य लेखक नहीं कर सकते

दलित साहित्य दलितेतर नहीं लिख सकेंगे ऐसी एकांगी समीक्षा नहीं हुई। इस संदर्भ में म.ना. वानेखेड़े कहते हैं कि 'यदि दलितेतरों का अनुभव बड़ा होगा तो दलितेतर भी दलित साहित्य लिख सकेंगे। अर्थात दलितेतर भी दलित साहित्य लिख सकेंगे ऐसा विचार भी दलित समीक्षकों ने प्रकट किया। श्वेत लेखकों के संदर्भ में ऑलन लॉक कहते हैं, 'एक श्वेत व्यक्ति के द्वारा लिखे गए नीग्रो जीवन से संबंधित साहित्य की प्रशंसा एवं अनुमोदन नीग्रो कर सकेगा बशर्ते ऐसा साहित्य सत्यान्वेषी तथा सौंदर्यपरक हो।'

▶ दलितेतर लेखक भी गहरा अनुभव और सत्य-सौंदर्य के साथ दलित साहित्य लिख सकते हैं

SGOU

(एलेन लॉक कोटीड फ्रॉम सौन्डर्स रेडिंग्स, एफ्रो अमेरिकन कल्चर एण्ड दि ब्लैक इस्थैटिक: नोट्स टु वर्ड ए रिवोल्यूशन, पृ. 45) 'श्वेत और सवर्ण लेखकों को 'सत्य और सौंदर्य' की पृष्ठभूमि में ही दलितों और नीग्रो का चित्रण करना चाहिए। इतना ही नहीं दलित और नीग्रो लेखकों को भी 'सत्य और सौंदर्य' की भावना से अपने समाज का चित्रण करना चाहिए।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'अमेरिकन नीग्रो और दलित' विषय में बताया गया है कि अमेरिका में नीग्रो अफ्रीका से लाकर गुलाम बनाए गए, जबकि भारत में दलितों को जन्म से ही सामाजिक रूप से अपमानित और अछूत माना गया। दोनों समाजों को शिक्षा, अधिकार, और गरिमा से वंचित रखा गया। इन समाजों के साहित्य में समान पीड़ा, संघर्ष, और विद्रोह की भावना झलकती है। श्वेत और सवर्ण लेखकों द्वारा इन समुदायों का गलत चित्रण भी एक समस्या रही है। दलित और नीग्रो साहित्य अपने अनुभवों पर आधारित होता है और वही लेखक इसे ठीक से व्यक्त कर सकता है जिसने खुद ऐसा जीवन जिया हो।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. अमेरिका के नीग्रो और भारत के दलितों के साहित्य में अभिव्यकत समानता पर विचार प्रकट कीजिए ।
2. नीग्रो और दलित साहित्य किन-किन भावनाओं को व्यक्त करता है? स्पष्ट कीजिए ।
3. श्वेत और सवर्ण लेखकों द्वारा नीग्रो और दलितों का चित्रण कैसे किया गया है?
4. क्या कोई बाहरी व्यक्ति दलित या नीग्रो साहित्य लिख सकता है? अपनी राय दें।
5. नीग्रो और दलितों के साहित्य महत्व पर विचार प्रकट कीजिए ।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश,वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल, भारती- दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 5

दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- दलित साहित्य के बारे में जनता है
- दलित साहित्य की समीक्षा में सवर्ण समीक्षकों की भूमिका से अवगत होता है
- समीक्षा करते समय किन-किन बातों को नज़रअंदाज़ किया गया - यह समझ सकता है
- दलित साहित्य की सामाजिक मूल्यों को पहचानता है
- एक अच्छी और निष्पक्ष साहित्यिक समीक्षा कैसे होनी चाहिए - इसका ज्ञान मिलता है

Background / पृष्ठभूमि

दलित साहित्य वह साहित्य है जो शोषित, पीड़ित और समाज के हाशिए पर रखे गए लोगों के अनुभवों और संघर्षों को व्यक्त करता है। यह साहित्य जातिवाद और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाता है। जब दलित साहित्य का उदय हुआ, तब से ही सवर्ण या दलितेतर समीक्षकों ने इसकी समीक्षा करनी शुरू की। उन्होंने इसे सराहा भी, लेकिन कई बार उनका दृष्टिकोण सीमित, पूर्वाग्रही या 'सहायकारी' रहा।

दलित लेखक मानते हैं कि उनकी रचनाओं की गहराई, दर्द और सामाजिक सच्चाइयों को दलितेतर समीक्षक पूरी तरह नहीं समझ पाते। दूसरी ओर, दलित लेखक भी अक्सर एक-दूसरे की कृतियों पर टिप्पणी नहीं करते, जिससे आपसी संवाद और आलोचना की प्रक्रिया कमजोर होती है। इस स्थिति में दलित साहित्य की सच्ची, वस्तुनिष्ठ और संवेदनशील समीक्षा की ज़रूरत है जो इसे समाज में सही जगह दिला सके।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आत्मचरित्रात्मक पुस्तक, आत्मबलिदान, दलितेतर समीक्षक, वस्तुनिष्ठ समीक्षा

SGOU

Discussion / चर्चा

1.5.1 सवर्ण समीक्षकों द्वारा की गई दलित साहित्य की समीक्षा की सीमाऐं

▶ दलितेतर समीक्षक शुरू से दलित साहित्य की समीक्षा और मार्गदर्शन करते रहे हैं

दलित साहित्य के प्रारंभ काल से ही दलितेतर समीक्षकों ने उसकी समीक्षा करनी शुरू की। अपना बड़प्पन दिखाते हुए दलित लेखकों का मार्गदर्शन किया। दलित साहित्य की समीक्षा के संदर्भ में सलाह देने वाले और मार्गदर्शन करने वाले विधान बहुत मिलते हैं। दलित साहित्य के समीक्षकों में दलितेतर समीक्षकों की संख्या अधिक है। जिस प्रकार दलित साहित्य पर समीक्षात्मक लेखन ग्रंथाकार रूप में प्रकाशित हुए हैं, वैसे लेख, परीक्षण भाषण, साक्षात्कार और प्रस्तावना के स्वरूप में भी प्रकाशित हुए।

1.5.2 प्रशंसा भाव की समीक्षा

▶ दलितेतर समीक्षक दलित साहित्य की प्रशंसा और आलोचना दोनों करते हैं

दलितेतर समीक्षकों ने अपनत्व भाव से दलित साहित्य की प्रशंसा की है। दलित लेखकों को प्रोत्साहन दिया है, उनकी स्तुति की है। दलित लेखकों के मार्गदर्शन के लिए विचार प्रस्तुत किये हैं। दलितेतर समीक्षकों का लेखन आश्रयदाता का दिखावा प्रकट करता है। ये ऊपर-ऊपर से सहलाता है लेकिन विचार की नयी प्रवृत्ति पैदा करने में प्रेरणादायक नहीं है। कुछ दलितेतर समीक्षकों ने दलित साहित्य की प्रशंसा-भाव से समीक्षा की है। इस समीक्षा पर कुछ और दलितेतर समीक्षकों ने आलोचना की। दलितेतर समीक्षकों में एक गुट समर्थकों का है तो दूसरा गुट विरोधियों का है। दलित साहित्य की मित्र-भाव से जो समीक्षा हुई है, उसकी आलोचना भी हुई है।

1.5.3 प्रतिकूल आलोचना

▶ दलित साहित्य के लिए निष्पक्ष और संतुलित समीक्षा जरूरी है

ऐसा नहीं है कि दलित समीक्षकों ने केवल दलित साहित्य का समर्थन किया है, उन्होंने दलित साहित्य पर प्रतिकूल आलोचना भी की है। उन्होंने दलित साहित्य के विविध प्रस्तावों पर भी आलोचना की है। दलित लेखकों ने लिखा तो आलोचना हुई। उन्होंने लेखन नहीं किया तो भी उनकी आलोचना हुई है। उदाहरणस्वरूप, दलित लेखक केवल एक ही आत्मचरित्रात्मक पुस्तक लिखता है और उसका लेखन समाप्त हो जाता है। इसलिए आलोचना हुई कि चूँकि आत्मचरित्र लेखन के लिए कुछ विद्वता, प्रतिभा की जरूरत नहीं पड़ती, इसीलिए उसे लिखने के बाद लेखक और आगे नहीं लिख पाता। यह भी कहा गया है कि कलानुभव न होने के कारण दलित साहित्य उथला होता है। ऐसे प्रश्न भी उठाए गए हैं कि दलित तो उचक्के, चोर, गुनहगार हैं, उन्हें शोषित कैसे माना जाए? इस प्रकार दलित साहित्य की प्रतिकूल आलोचना और अनुचित-प्रशंसा भी हुई है। बहुत से साहित्यिक समीक्षक अब भी दलित साहित्य के ज्वलंत प्रेरणा को अनदेखा कर, उनकी त्रुटियों पर बार-बार जोर देते हैं। कुछ भी हो यह छिद्रान्वेषण की दृष्टि

SGOU

बुरी है लेकिन अभिभावक की तरह केवल पीठ थपथपाने से भी दलित साहित्यिकों का दिग्भ्रमित होना संभव है। यदि सम्यक, वस्तुनिष्ठ दृष्टि से दलित साहित्य का मूल्यांकन होता रहा तो यह साहित्य अपना ऐतिहासिक कार्य अच्छे तरीके से संपन्न कर सकेगा। दलित साहित्य की प्रशंसा करने वाली अनुकूल समीक्षा और दलित साहित्य पर पूर्वाग्रह ग्रसित दूषित दृष्टि से आलोचना करने वाली प्रतिकूल समीक्षा, दोनों ही दलित साहित्य के लिए घातक सिद्ध होंगी। इसलिए दलित साहित्य जैसी नयी अलग साहित्यिक धारा की सम्यक् स्वागतशील वृत्ति से, वस्तुनिष्ठ और तटस्थ समीक्षा होनी चाहिए।

1.5.4 असली समीक्षा नहीं हुई

हालाँकि दलितेतर समीक्षकों ने दलित साहित्य की बहुत समीक्षा की है तो भी इससे दलित लेखक संतुष्ट नहीं हैं। उनकी शिकायत है कि उनके साहित्य की उचित समीक्षा नहीं हुई। वामन होवाल कहते हैं, 'मेरी कथा का विश्लेषण हुआ पर कथा समाप्त होने पर भी विश्लेषण समाप्त नहीं होती। वहाँ भी तो मुझे कुछ कहना होता है। लेकिन वहाँ तक कोई नहीं पहुंचता।' दादासाहेब मोरे कहते हैं 'दलित समीक्षा का क्या अर्थ है? समीक्षक प्रत्येक घटना, प्रसंग पर केवल अभिप्राय देने का काम करते हैं। यह कैसी समीक्षा है?' (मोरे दादासाहेब प्रत्यक्ष की हुई चर्चा, नात्तिक, 11-2-1992) दया पवार कहते हैं, 'दनित साहित्य में सामाजिक संदर्भ का ब्योरा समीक्षकों को समझ में नहीं आता, ना ही उन्हें भाषा का अर्थ अच्छी तरह समझ में आता है। कहावत एवं वाक्य प्रचार की जानकारी उन्हें मालूम नहीं होती। ना ही इतनी गहराई तक जाकर कोई पढ़ता है। कोई परिश्रम करके समझने का प्रयास भी नहीं करता। केवल व्यक्ति सापेक्ष समीक्षा होती है। कलाकृति और व्यक्ति के आसपास यह समीक्षा घूमती रहती है। इसका भी समीक्षकों को ध्यान नहीं रहता कि हम अलग सांस्कृतिक टापू में रहते हैं। कल्पना से लिखा हुआ साहित्य और किसी विचार को जी कर लिखा हुआ साहित्य, इन दोनों के बीच के भेद को ध्यान में नहीं रखा जाता।' उत्तम बंडू तुपे कहते हैं 'मातंग समाज के आत्मकथन के रूप में मेरी पुस्तक का समीक्षकों ने निबटारा कर दिया।' दत्ता भगत कहते हैं 'दलित साहित्य सृजन के साथ ही दलित साहित्य समीक्षा लिखी जाने लगी, इसी कारण ढुलमुल ढंग की समीक्षा हुई। जो समीक्षा हुई उन्हें ही पढ़ कर नए-नए समीक्षकों ने अपनी समीक्षा प्रस्तुत कर दी। सही तो यह है कि साहित्य पढ़ कर समीक्षा की जानी चाहिए।' वामन होवाल, दादासाहेब मोरे, दया पवार, उत्तम बंडू तुपे और दत्ता भगत आदि के दलित साहित्य की समीक्षा के संदर्भ में व्यक्त किए गए मत देखने से ही दलित समीक्षा का अधूरापन नजर आ जाता है।

दलितेतर समीक्षकों ने सही और सच्ची समीक्षा नहीं की, यह शिकायत तो समझ में आती है लेकिन कितने लेखकों ने दलित लेखन पर लिखा है-इसका भी विचार होना चाहिए। दलित लेखक केवल नवोदित लेखक की पुस्तक की प्रस्तावना लिखता है, वह साहित्य सम्मेलन की संगोष्ठी में बोलता है, उसे अलग-अलग मंच पर वक्ता के रूप में,

▶ दलितेतर समीक्षक ही दलित साहित्य की मुख्य समीक्षा करते हैं, क्योंकि दलित लेखक एक-दूसरे पर कम लिखते हैं

अध्यक्ष के रूप में और अतिथि के रूप में विचार रखना ही वस अच्छा लगता है, लेकिन वह अन्य दलित लेखकों के साहित्य के विषय में नहीं लिखता। दलित लेखक की नयी पुस्तक आती है। सभी दलित लेखक मौन भाव रखते हैं। इस समय दलितेतर समीक्षक दलित साहित्य की चर्चा तथा समीक्षा करते हैं। सच तो यह है कि दलित साहित्य की चर्चा दलितेतर समीक्षकों के लेखन के कारण टिकी हुई है। प्रस्थापित दलित लेखक नए दलित लेखक के पुस्तक पर नहीं लिखते। उनकी इस संकीर्णता पर भी विचार करना चाहिए। इस पृष्ठभूमि में गंगाधर पानतावणे की 'विद्रोह का पानी भड़क उठा' और 'तूफान के वंशज' पुस्तकें महत्त्वपूर्ण हैं।

▶ दलित साहित्य में समीक्षा अस्थिर, लेखन एकसुरी, परंपरा से दूरी, और गहरी समीक्षा जरूरी है

एक ओर दलित लेखक की संकीर्णता है तो दूसरी ओर दलितेतर समीक्षकों के आकलन की कमी है। इस दायरे में यह समीक्षा अटकी हुई है। यह दायरा तोड़ा नहीं जा रहा, इसलिए मराठी समीक्षा के समक्ष अपनी सीमाएँ हैं। जैसे:-

1. मराठी समीक्षा का उथलापन।
2. दलित साहित्य में मिलने वाली एकांगी, एकसुरी तथा बहुत्रसता यानी बहुतायत में स्तरहीन प्रकाशन वलेखन दिखाने की प्रवृत्ति।
3. परंपरा और संस्कृति से दलितों का संबंध तोड़ने की प्रवृत्ति।
4. समाजशास्त्रीय साहित्यिक कसौटियों का पूर्णतया अभाव।
5. दलित साहित्य-मीमांसा की जरूरत।

1.5.5 स्वतंत्रता ही सौंदर्यमूल्य

▶ मनुष्य केवल आनंद नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, न्याय और प्रेम के लिए भी दीवाना होता है

क्या मनुष्य केवल सौंदर्य का दीवाना है? क्या मनुष्य को केवल आनंद चाहिए? इसका उत्तर नकारात्मक है, क्योंकि हजारों-लाखों मनुष्य स्वतंत्रता, प्रेम, न्याय और समता, के लिए दीवाने हुए दिखाई पड़ते हैं। इसके लिए उन्होंने आत्मबलिदान किया। इसका अर्थ यह कि मनुष्य केवल आनंद और सौंदर्य के लिए दीवाना नहीं होता, वो समता, स्वतंत्रता, न्याय और प्रेम के लिए भी दीवाना होता है, अर्थात मनुष्य को कलामूल्य के समान ही बल्कि उससे अधिक सामाजिक मूल्य भी प्राण-प्रिय नजर आता है। समता, स्वतंत्रता, न्याय और प्रेम ये व्यक्ति और समाज की मूलभूत भावनाएँ हैं। वे आनंद और सौंदर्य से कई गुणा अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

▶ क्रांति आनंद नहीं, बल्कि न्याय और स्वतंत्रता के लिए होती है

आनंद अथवा सौंदयं के लिए दुनिया में कभी भी क्राति नहीं हुई। समता, स्वतंत्रता और न्याय के लिए अनेकों सत्ता-पलट हुए हैं, यही इतिहास है। आनंद का स्वीकार करने वाला साहित्य रंजनवादी होकर रसिक को केंद्र स्थान में मानता है। समता, स्वतंत्रता और न्याय का स्वीकार करने वाला साहित्य क्रांतिकारी होता है और वह मनुष्य और समाज को केंद्र बिंदु मानता है। रंजनवादी साहित्य व्यक्ति की सुख-संवेदना जागृत करता है तो क्रांतिवादी साहित्य व्यक्ति के आत्मसम्मान की ओर पूरे मानवता की चेतना जागृत करता है। यह अंतर ध्यान में रखना होगा। इस संदर्भ में पु.शि.रेगे कहते हैं, 'साहित्य से बड़ी

क्रांति होगी यह संभव नहीं है।' (रंगे पु.शि. छांदसी, पृ. 22) रेगे का यह मत कलावादी साहित्य के संदर्भ में चरितार्थ होता है। रूसो, व्हाल्टेअर, कार्ल मार्क्स के साहित्य से क्रांति हुई है। फुले, अंबेडकर के साहित्य से लोक-आंदोलन मजबूती से खड़े रहे हैं। इसलिए रेगे का विधान सभी प्रकार के साहित्य के संदर्भ में खरा नहीं उतरता ।

▶ दलित साहित्य डॉ. आंबेडकर के विचारों और दलित चेतना से प्रेरित है

दलित साहित्य की प्रेरणा डॉ. बाबा साहब अंबेडकर का विचार है और दलित साहित्य का सृजन 'दलित चेतना' से हुआ है। यह सभी प्रकार की गुलामी के विरुद्ध चेतना है। इसमें समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुभाव आदि मूल्यों का समावेश है। दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र प्रस्तुत करते हुए अम्बेडकरवादी विचार से प्रेरित 'दलित चेतना' महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका बिगाती है।

▶ दलित साहित्य में स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व मुख्य सौंदर्य मूल्य हैं

शोषितों का साहित्य प्रधानतः 'स्वतंत्रता' की खोज खबर लेनेवाला और उसकी अभिव्यक्ति करनेवाला साहित्य है। स्वतंत्रता के सभी रूपों और अंतरंगों का दर्शन उसमें होता है। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि स्वतंत्रता की कल्पना अथवा विचार के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और नैतिक पहलू के समान ही सौंदर्यशास्त्रीय पहलू भी होते हैं। स्वातंत्र्य की भावना दलित साहित्य का प्राणतत्त्व तो है ही पर वह उसमें सौंदर्यत्व के रूप में भी है। समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व इन तीनों जीवन मूल्यों को दलित साहित्य के सौंदर्य तत्त्व मान सकते हैं। दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र 1. कलाकारों की सामाजिक प्रतिबद्धता 2. कलाकृति में जीवन मूल्य 3. पाठकों के मन में जागृत होनेवाली समता, स्वतंत्रता, न्याय और भ्रातृभाव की चेतना जैसे मूलतत्त्वों पर टिका रहने वाला है। दलित लेखकों का लिखना क्यों जरूरी है इसकी खोज की जाए तो कलाकार, कलाकृति और समाज की रिश्तेदारी का विचार स्पष्ट होता है। इस विचार में ही दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र का ब्योरा छुपा है।

1.5.6 दलित साहित्य की कसौटियाँ

दलित साहित्य के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित कसौटियाँ निश्चित की जा सकती हैं:-

▶ कलाकार का अनुभव ताजा, व्यापक और सार्वजनिक होना जरूरी है

1. कलाकार अपने अनुभव से प्रभावित होना चाहिए।
2. कलाकारों के अनुभवों का सार्वजनिककरण होना चाहिए।
3. कलाकार के अनुभव में प्रदेश की सीमा पार करने की शक्ति होनी चाहिए।
4. कलाकार का अनुभव किसी भी काल में ताजा लगना चाहिए।

मराठी समीक्षकों के मत में मराठी साहित्य का सौंदर्यशास्त्र आनंदवादी होने पर भी उसके स्वरूप में हथियार के समान तेज़ नहीं है। मराठी समीक्षकों ने मराठी साहित्य के सौंदर्यशास्त्र का दलित साहित्य के संदर्भ में भी उपयोग नहीं किया।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

दलित साहित्य की समीक्षा में दलितेतर समीक्षकों की भूमिका प्रारंभ से ही प्रमुख रही है, परंतु इन समीक्षाओं की सीमाएँ भी स्पष्ट दिखाई देती हैं। दलितेतर समीक्षकों ने कभी प्रशंसा भाव से, तो कभी उपेक्षा और पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर आलोचना की है। प्रशंसा करने वाले अक्सर 'आश्रयदाता' के रूप में नजर आते हैं जबकि आलोचक दलित साहित्य को उथला और स्तरहीन बताकर उसकी गरिमा को कम करते हैं। वहीं, दलित लेखक भी एक-दूसरे के कार्य पर समीक्षा नहीं करते, जिससे आत्ममंथन की प्रक्रिया बाधित होती है। कई प्रमुख दलित लेखकों ने यह शिकायत की है कि दलित साहित्य की गहराई, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और उसके सामाजिक संदर्भों को समीक्षकों ने नहीं समझा। दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र पारंपरिक सौंदर्य नहीं बल्कि समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे सामाजिक मूल्यों पर आधारित है। इसलिए दलित साहित्य की समीक्षा वस्तुनिष्ठ, स्वागतशील और सामाजिक दृष्टिकोण से होनी चाहिए, जिससे यह साहित्य अपने क्रांतिकारी उद्देश्य को पूर्ण कर सके।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. दलित साहित्य की समीक्षा में दलितेतर समीक्षकों की क्या भूमिका रही है स्पष्ट कीजिए ।
2. दलित लेखक दलितेतर समीक्षकों की समीक्षा से संतुष्ट क्यों नहीं हैं?
3. दलित साहित्य में 'स्वतंत्रता' और 'समता' को सौंदर्यमूल्य के रूप में क्यों माना गया है?
4. दलित साहित्य के मूल्यांकन के लिए किन कसौटियों की आवश्यकता है?
5. दलित और दलितेतर लेखकों की समीक्षा प्रवृत्तियों में क्या अंतर है?
6. दलित साहित्य का सही मूल्यांकन किस कसौटी पर होना चाहिए?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश,वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल, भारती - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 02

दलित कहानियाँ

Unit 1 : घुसपैठिये, सलाम - ओमप्रकाश वाल्मीकि

Unit 2 : नो बार - जयप्रकाश कर्दम

Unit 3 : आवाज़ें - मोहनदास नैमिशराय

Unit 4 : दलित- ब्रहमण - सत्यप्रकाश

SGOU

इकाई 1

घुसपैठिये, सलाम, Detailed Study

ओमप्रकाश वाल्मीकि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- दलित कहानी के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- ओमप्रकाश वाल्मीकि के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचनाधर्मिता से अवगत होता है
- 'घुसपैठिये' कहानी के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है
- 'सलाम' कहानी की विशिष्ठता पहचानता है

Background / पृष्ठभूमि

साहित्य और विचारधारा की दुनिया में जो बदलाव आए हैं, उनमें दलित साहित्य की बड़ी भूमिका है। आत्मकथा, कविता, कहानी, आलोचना, उपन्यास और नाटक आदि साहित्य की लगभग सभी विधाओं के माध्यम से दलित लेखकों ने साहित्य की दुनिया का विस्तार किया है। इनमें आत्मकथा, कहानी और कविता दलित साहित्य की प्राथमिक विधाएँ हैं। खासकर, दलित कहानियों में दलित जीवन की इतनी तस्वीरें दिखलाई देती हैं कि उन्हें पढ़कर भारतीय सामाजिक संरचना में एक दलित के जीवन की कठिनाई की गहराई समझ में आती है। कहा जा सकता है कि दलित कहानियाँ दलित समाज को समझने का एक बड़ा माध्यम है। इस तरह के चिन्तन एवं अध्ययन से साहित्य का फलक विस्तृत होता है। दलित कहानियों में कहानीकारों ने भाषा एवं शैली की कलात्मक अभिव्यक्ति की जगह, दलित जीवन जैसा है, वैसा ही दिखलाने का प्रयास किया है। इसमें जीवन का यथार्थपरक चित्रण है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जैविकीय विकास, साम्प्रदायिकता, सामाजिक धरातल, उत्पीड़न, यथार्थवादी दृष्टिकोण, सचाई की अभिव्यक्ति।

SGOU

Discussion / चर्चा

दलित कहानी का जन्म भी मनुष्य के जन्म के साथ-साथ हुआ। कहानी सुनने-कहने की परम्परा उतनी ही पुरानी है, जितनी कि मनुष्य के जैविकीय विकास की कथा। कविता की तरह कहानी एकाएक फूटा नहीं करती, वह तो घटती भी है और फिर उसे तराश कर विकसित भी किया जाता है। हिन्दी साहित्य में कहानी का आरम्भ सन् 1900 से माना जाता है। यह युग हिन्दी कहानी के विकास का प्रारम्भिक काल है, जिसमें दलितों का विद्रोह धीरे-धीरे सुलगता हुआ सामाजिक धरातल तक आ पहुंचा था। इसके साथ ही स्वतंत्रता आन्दोलन के क्षितिज पर महात्मा गाँधी का उदय हो चुका था, जिन्होंने पहली बार समझा था कि आजादी की लड़ाई किसी एक वर्ग या जाति के सहारे नहीं जीती जा सकती है। इसमें सभी धर्मों, जातियों और वर्गों के लोगों का सहयोग चाहिए। मानवीय सरोकारों के जितने सन्दर्भ हो सकते हैं, उनका पूर्ण विन्यास दलित कथाओं का कलेवर है।

▶ हिन्दी साहित्य में कहानी का आरम्भ सन् 1900 से माना जाता है

2.1.1 दलित कहानियाँ

दलित कहानियों का फलक अत्यन्त विस्तृत है। शोषण एवं उत्पीड़न के भिन्न-भिन्न सवालों से मुठभेड़ करते हुए दलित समाज की समस्याओं को जितनी गहरी संवेदना के साथ दलित कथाकारों ने उठाया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। दो दशक पहले, 20 जनवरी 1994 को अश्वेत कहानियों पर विचार करते हुए काली सुर्खियाँ के सम्पादकीय की चर्चा करते हुए राजेन्द्र यादव ने दलित साहित्य पर राय दी थी कि दलित साहित्य का मॉडल तो लगभग वही है, चाहे वह अमेरिका का नस्लभेद हो, गोरी दुनिया के अल्पसंख्यकों की नियति हो या फ्रेंच अमरीकन उपनिवेशी चंगुल में छटपटाता अफ्रीका हो। हम कहीं भी अपने को उनसे अलग नहीं पाते। गरीबी, भुखमरी, अकाल, वर्ण और वर्ग-संघर्ष या साम्प्रदायिकता की अपने भीतर लड़ी जानेवाली लड़ाइयाँ और फिर उपनिवेशी शोषण, दमन की क्रूर या बारीक मुठभेड़ हमारी स्थितियों का प्रतिरूप ही लगती है। दलित कहानियाँ इन मुद्दों से अलग नहीं है। माना जा सकता है कि पिछली एक-दो सदियों से गुरु घासीदास, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, आयोतिदास पण्डीधर, नारायण गुरु, अछूतानन्द, महात्मा गाँधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, पेरियार ई वी रामास्वामी नायकर, चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु, विचित्रानन्द नायक, नामदेव ढसाल, दया पवार, आदि मानवतावादी चिन्तकों द्वारा सामाजिक परिवर्तन के लिए चलाए जा रहे आन्दोलनों को दलित साहित्य ने एक सामाजिक आधार के रूप में स्वीकार किया। दलित कहानियों ने भी इसमें बड़ी भूमिका निभाई तथा वर्ण एवं जाति केन्द्रित भारतीय सामाजिक संरचना को दलित समाज के उत्पीड़न का सबसे बड़ा कारण बतलाया।

▶ दलित कहानियाँ जाति आधारित शोषण और असमानता को उजागर करती हैं

हिन्दी में दलित जीवन से सम्बन्धित कहानी लेखन की परम्परा को तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता हैं - प्रथम काल सन् 1900 से 1960; द्वितीय काल सन् 1960 से

1990 और तृतीय काल सन् 1990 से अब तक। प्रथम काल की दलित कहानियों में उन कहानियों को शामिल किया जा सकता है, जिसमें दलित और गैर-दलित दोनों लेखक शामिल हैं। इसमें माधव राव सप्रे की सन् 1901 में प्रकाशित 'एक टोकरी भर मिट्टी' से लेकर प्रेमचन्द की 'ठाकुर का कुआँ', 'कफन', एवं 'सद्गति', जयशंकर प्रसाद की 'मधुआ', यशपाल की 'सतमी के बच्चे', फणीश्वर नाथ रेणु की 'ठेस', अमरकान्त की 'जिन्दगी और जोंक' जैसी कहानियों को शामिल किया जा सकता है, जिनमें अस्पृश्यता, भूख, गरीबी शोषण और असमत्व आदि सवालों को उठाते हुए भारतीय सामाजिक संरचना में निम्न एवं दलित समाज की त्रासद जिन्दगी का मार्मिक चित्रण किया गया है।

▶ 1900 से दलित कहानियाँ अस्पृश्यता, गरीबी व शोषण पर केंद्रित रहीं

द्वितीय काल की कहानियों में सन् 1960 के बाद महाराष्ट्र में शुरू हुए दलित आन्दोलन के प्रभाव में लिखी गई कहानियों को रखा जा सकता है, जिसमें दलित समाज के लेखकों एवं गैर-दलित कथाकारों की भागीदारी बड़ी संख्या में है। वैचारिक रूप से इन कहानियों पर ज्योतिबा फुले, डॉ. अम्बेडकर, नामदेव ढसाल एवं जे.वी. पँवार द्वारा सन् 1972 में महाराष्ट्र में गठित 'दलित पैन्थर आन्दोलन' का गहरा प्रभाव है। विजेन्द्र अनिल की 'विस्फोट', विजयकान्त की 'मरीधार' सहित सन् 1979 में मराठी में प्रकाशित दया पँवार की चर्चित आत्मकथा 'बलूत' को देखा जा सकता है। इस दौरान हिन्दी के दलित लेखकों में सन् 1975 में सतीश ने 'वचनबद्ध', सन् 1978 में मोहनदास नैमिशराय ने 'सबसे बड़ा सुख' और सन् 1980 में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'अन्धेरबस्ती' जैसी कहानियाँ लिखीं। इनमें अप्रैल 1975 की मुक्ति पत्रिका में प्रकाशित कहानी 'वचनबद्ध' को हिन्दी की पहली प्रकाशित दलित कहानी मानी जाती है। इसी दौरान मुख्यधारा के कहानीकारों में ह्रदयेश, मधुकर सिंह, मुद्राराक्षस, सतीश जमाली, चन्द्रमोहन प्रधान, सुरेश कांटक, रामस्वरूप अणखी, शैवाल, संजीव, शिवमूर्ति, बलराम, कर्मेन्दु शिशिर, प्रेमकुमार मणि, हरि भटनागर, चन्द्रकिशोर जायसवाल, अमितेश्वर आदि ने दलित समाज से सम्बन्धित सम्वेदनशील कहानियाँ लिखकर लेखन की दुनिया का विस्तार किया।

▶ 1960 के बाद दलित आंदोलन से प्रेरित कहानियाँ बड़े पैमाने पर लिखी गईं

विकास की दृष्टि से दलित कहानी का तृतीय काल महत्त्वपूर्ण है। इस काल में हिन्दी में दलित दृष्टि से कहानियाँ लिखी गई तथा स्वयं दलित समाज से जुड़े लेखकों ने दलितों के सवालों को प्रतिबद्धता के साथ उठाया। सन् 1990 में मण्डल आयोग की रिर्पोट लागू होने के बाद देश में आरक्षण के सवाल पर जो बड़े पैमाने पर आन्दोलन हुए, उससे हिन्दी में दलित लेखन एवं कहानी को बल मिला तथा ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाकभौरे, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौहान, रत्न कुमार साँभरिया, दयानन्द बटोही, सी.बी. भारती, बी एल नायर, एस आर हरनोट, प्रहलाद चन्द्र दास, बिपिन बिहारी, शत्रुघ्न कुमार, कुसुम बियोगी, अजय नावरिया, बुद्धशरण हंस, मुसाफिर बैठा, कर्मशील भारती, रजत रानी मीनू, सत्य प्रकाश, उमेश कुमार सिंह आदि कहानीकारों ने बुद्ध-फुले-अम्बेडकर से प्रेरणा पाकर प्रभावशाली दलित

▶ दलित लेखकों ने आरक्षण आंदोलनों से प्रेरित होकर दलित जीवन और असमानता पर प्रभावशाली कहानियाँ लिखीं।

SGOU

कहानियाँ लिखीं। इन कहानियों में भारतीय सामाजिक जीवन की मुख्यधारा में हाशिए की जिन्दगी व्यतीत करनेवाले दलित समाज से जुड़े सवालों को लेखकों ने सामाजिक यथार्थ का हिस्सा बनाकर, उसे गैर बराबरी से जुड़े सवालों से जोड़ा। इस सन्दर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम' एवं 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ', मोहनदास नैमिशराय की 'अपना गाँव' एवं 'गर्वनर के कोट का बटन', सुशीला टाकभौरे की 'सिलिया' एवं 'कड़वा सच', जयप्रकाश कर्दम की नो बार एवं 'मूवमेण्ट', श्यौराज सिंह 'बेचैन' की शोध प्रबन्ध, बिपिन बिहारी की बिवाइयाँ, शत्रुघ्न कुमार की 'सबक', कर्मशील भारती की 'स्वाभिमान और नीरा' परमार की 'वैतरणी' आदि कहानियां उल्लेखनीय है।

2.1.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि

हिंदी दलित साहित्य के पुरोधा ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के बरला गांव में हुआ था। उनकी जन्मतिथि के संदर्भ में बता दें कि जब उनके पिता 'श्री छोटनलाल' स्कूल में उनका दाखिला कराने गए तो उस समय उन्हें अपने पुत्र की जन्म तिथि याद नहीं थी। इसलिए एक अनुमान के अनुसार उन्होंने 30 जून, 1950 को उनकी जन्मतिथि विद्यालय के मास्टर जी को बता दी। जिसे स्कूल के रिकॉर्ड में दर्ज किया गया और इस तरह यह ओमप्रकाश वाल्मीकि की जन्म तिथि बन गयी। बाद में उन्होंने भी इसमें कोई बदलाव नहीं किया।

▶ ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून 1950 को मुजफ्फरनगर के बरला गाँव में हुआ

> "दलित चेतना दलितों की सांस्कृतिक, सामजिक, ऐतिहासिक भूमिका के तिलस्म को तोडती है । मानवीय अधिकारों से वंचित,सामजिक तौर पर जिसे नक्कारा गया है । वह दलित है। उसकी चेतना दलित चेतना है" - ओमप्रकाश वाल्मीकि

अपने परिवार में सबसे छोटी संतान होने के कारण उनके माता-पिता ने उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। किंतु उनका शुरूआती जीवन संघर्षमय और कठिनाइयों में बीता। अनपढ़ होने के कारण परिवार के सदस्यों को गांव के उच्च वर्ग के लोगों के घर पर साफ-सफाई, मेहनत मजदूरी व खेती-बाड़ी करके अपना जीवन यापन करना पड़ता था। लेकिन इन कामों के बदले उन्हें मेहनताने के रूप में कुछ पैसे और अनाज के साथ-साथ अपमान और शोषण का भी सामना करना पड़ता था। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी आत्मकथा में बताते हैं कि — चारों ओर गंदगी भरी होती थी और उससे इतनी दुर्गंध आती थी कि वहां रहना मुश्किल हो जाता था। वहीं तंग गलियों में घूमते जंगली जानवर, नग-धड़ंग बच्चे व रोजमर्रा के आपसी झगड़े के बीच उनका बचपन बीता।

▶ उनका शुरूआती जीवन संघर्षमय और कठिनाइयों में बीता

2.1.3 ओमप्रकाश वाल्मीकि की साहित्यिक रचनाएँ

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने आधुनिक हिंदी दलित साहित्य में गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में साहित्य का सृजन किया है। उनकी रचनाओं में दलित वर्ग का संघर्ष, पीड़ितों के दर्द और अत्याचार का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने मुख्यतः कहानी, कविता,

▶ गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में साहित्य का सृजन किया है

आत्मकथा और आलोचना के माध्यम से कई अनुपम रचनाएँ की हैं।

कहानी

सदियों का संताप – वर्ष 1989
बस बहुत हो चुका – वर्ष 1997
अब और नहीं – वर्ष 2009
सलाम – वर्ष 2000
घुसपैठिए – वर्ष 2004
अम्मा एंड अदर स्टोरीज

कविता

ठाकुर का कुआँ
तब तुम क्या करोगे
वह दिन कब आयेगा
वे भूखे है
शायद आप जानते है

आत्मकथा

जूठन – वर्ष 1997

आलोचना

दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र – वर्ष 2001
मुख्यधारा और दलित साहित्य
सफाई देवता – वर्ष 2009

पुरस्कार एवं सम्मान

डॉ. अंबेडकर सम्मान – वर्ष 1993
परिवेश सम्मान – वर्ष 1995
कथाक्रम सम्मान – वर्ष 2001
न्यू इंडिया बुक पुरस्कार – वर्ष 2004
साहित्य भूषण पुरस्कार – वर्ष 2009

2.1.4 घुसपैठिये

'घुसपैठिये' ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखित कहानी संग्रह है, जिसका प्रकाशन राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली की ओर से सन् 2003 ई. में हुआ है। इस कहानी संग्रह में प्रकाशित कहानियां अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो हैं। चुकी हैं। विवेच्य कहानी

SGOU

▶ दलित जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति

संग्रह में करीब एक दर्जन कहानियां हैं 'घुसपैठिये', 'यह अंत नहीं', 'मुंबई कांड', 'शव यात्रा', 'प्रमोशन', 'कूड़ाघर', 'मैं ब्राहमण नहीं हूँ', 'दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन', 'रिहाई', 'ब्रह्मास्त्र', 'हत्यारे', 'जंगल की रानी'। इन कहानियों में दलित जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।

▶ दलित छात्रों के शोषण पर प्रकाश डाला है

'घुसपैठिये' कहानी में कहानीकार ने मेडिकल कॉलेज में दलित छात्रों के शोषण पर प्रकाश डाला है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की सामाजिक न्याय की भूमिका के तहत दलितों को शिक्षा, नौकरी आदि क्षेत्रों में आरक्षण प्राप्त हुआ। लेकिन मनुवादी मानसिकता से प्रेरित कार्यरत सवर्ण दलितों का जीना हराम कर रहे हैं। इस पक्ष का प्रभावशाली अंकन प्रस्तुत कहानी में पाया जाता है। सवर्ण लोग आरक्षण प्राप्त दलितों के प्रति घिनौना व्यवहार करते हैं। सुभाष सोनकर मेडिकल कॉलेज का छात्र है। वह होनहार है, उसकी योग्यता निर्विवाद है, लेकिन कॉलेज के सवर्ण छात्र और सवर्ण स्टाफ उसे मारपीट करके अपमानित करते हैं। अन्य दलित छात्रों के साथ भी ऐसा अमानवीय व्यवहार किया जाता था।

▶ सवर्ण लोग आरक्षित दलित छात्रों को घुसपैठिये मानते हैं

इस पक्ष पर प्रकाश डालते हुए कहानीकार ने लिखा है - 'दलित छात्रों को अलग खड़ा करके अपमानित करना तो रोज का किस्सा है। प्रवेश परीक्षा के प्रतिशत अंक पूछकर थप्पड़ या घूँसों का प्रहार होता है। जरा भी विरोध किया तो लात पड़ती है। यह दो-चार दिन नहीं साल के साल चलता है और यह पिटाई कॉलेज या छात्रावास तक सीमित नहीं है। शहर से कॉलेज तक जाने वाली बस में भी पिटाई होती है। कोई एक सीनियर चलती बस में चिल्लाकर कहता है 'इस बस में जो भी चमार स्टूडेन्ट है। वह खड़ा हो जाए.... फिर उसे धकियाकर पिछली सीटों पर ले जाया जाता है जहाँ पहले से बैठे सीनियर लात, घूंसों से उनका स्वागत करते हैं। 'सवर्णो द्वारा दी जानेवाले उत्पीड़न से सोनकर आत्महत्या कर लेता है। सवर्ण लोग आरक्षित दलित छात्रों को घुसपैठिये मानते हैं।

2.1.5 सलाम

▶ दलित चेतना के निर्माण का ज्वलंत दस्तावेज़ हैं

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य के प्रतिनिधि साहित्यकार हैं। उनकी रचनाएँ दलित चेतना के निर्माण का ज्वलंत दस्तावेज़ हैं। 'सलाम' उनकी एक प्रसिद्ध कहानी है। समाज में व्याप्त उच्च नीच भेदभाव को स्पष्ट करने वाली यह कहानी दलितों में बढते आत्मविश्वास और स्वाभिमान की ओर इशारा करती है।

▶ दलित समझकर कमल की माँ ने उसे फटकार सुनायी और भगा दिया

कमल उपाध्याय देहरादून से अपने एक दलित मित्र हरीश की शादी में एक गाँव आता है। चूहडा जाति के हरीश की शादी में ब्राहमण कमल पूरी लगन के साथ काम में भाग ले रहा था। अगले दिन सवेरे वह चाय पीने के लिए गाँव के बाहर सडक के किनारे एक छप्परनुमा दूकान में गया। चूहडों के घर आये कमल को चाय नहीं मिली। वह अपमानित होकर चला गया। उसे एक पुरानी घटना याद आयी। स्कूल की पढाई

SGOU

के समय वह अपने मित्र हरीश को एक दिन घर ले गया। उसे दलित समझकर कमल की माँ ने उसे फटकार सुनायी और भगा दिया।

हरीश की ससुराल में सलाम पर जाने की रस्म को लेकर विवाद छिड गया। हरीश सलाम पर जाने को तैयार नहीं था। सदियों से चली आ रही इस दकियानूस रस्म के खिलाफ वह विद्रोह कर उठा। उस की सास गाँव के रांघडों के घर सफाई का काम करने जाया करती थी। उन घरों में सलाम पर जाने की रस्म निभाने को हरीश तैयार नहीं था। रांघडों की धमकी के रहते जल्दी दूल्हन की बिदाई का बन्दोबस्त होने लगा। लोगों को खाना खिलाया गया, पर दस-बारह साल के एक लडके ने मुसलमानों के हाथ की बनी रोटी खाने से इनकार किया। उस चूहडे बालक की चीख सुनकर कमल और हरीश फटी फटी आँखों से परस्पर देखने लगे। कुछ देर पहले जगा आत्मविश्वास लडके की आवाज में दबने लगा।

▶ हरीश की ससुराल में सलाम पर जाने की रस्म को लेकर विवाद छिड गया

यह कहानी समाज में व्याप्त उच्च और निम्न जातियों के आपसी भेदभाव के चलते सामाजिक झगडों की व्यथा को चित्रित करती है। चूहडा घरों और सडकों में सफाई का काम करने वाली जाति है। ब्राहमणों क्षत्रियों को उन के साथ उठने बैठने में पाबंदी है। गंवार लोगों में विशेषकर यह भेदभाव जोरों पर है। उन में खाने पीने पर भी मनाही है। दलित बालक हरीश अपने ब्राहमण मित्र कमल के घर गया तो कमल की माँ ने उसे फटकार कर भगाया। नयी पीढी के कमल के मन में इस से गहरा आघात हुआ। बाद में हरीश की शादी में जाने के कारण कमल को गाँव की दूकान से चाय नहीं मिली। दलित लोग सदैव ब्राहमणों - क्षत्रियों के उत्पीडन के शिकार हैं। दलित का आत्मविश्वास तोडने लायक सामाजिक प्रथाएँ जारी रहती हैं। सलाम ऐसी ही एक प्रथा है। उस प्रथा को तोडने की हिम्मत गरीब और अनपढ दलितों में नहीं हैं। इस कुप्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले और विद्रोह करने वाले कमल और हरीश की हिम्मत उस समय टूट जाती है, जब दस - बारह साल का दलित लडका भी मुसलमान के हाथ की बनी रोटी - खाने से इनकार करता है। सलाम की रस्म ही दलितों का आत्मविश्वास तोडने की रस्म है। कहानीकार इस कहानी में दलितों के विद्रोह की आवाज़ बुलंद करने की कोशिश करते हैं।

▶ समाज में व्याप्त उच्च और निम्न जातियों के आपसी भेदभाव के चलते सामाजिक झगडों की व्यथा को चित्रित करती है

शहर से गाँव में ब्याह के लिए गई बारात से शुरू हुई कहानी का अन्त 10-12 साल के बच्चे के मन में बैठी जाति एवं धर्म की दीवारों की घृणा से होता है। बारात ठहराने के लिए गाँव का स्कूल खोल देने की प्रधान जी की हामी के बावजूद बारातियों को ठहरने के लिए मात्र बारामदा ही मिल सका। बिजली और पानी की सुविधाओं से वंचित किए जाने की विवशताओं के बीच शादी सम्पन्न हुई। दलित वर्ग में जन्मे हरीश की शादी में दोस्त कमल उपाध्याय का, अतिरिक्त उत्साह और घर-परिवार के सदस्य की तरह सारी व्यवस्था में शरीक होना समाज की दूरियों को पाटने की कहानी बन जाती है। बारात में गाँव गए कमल उपाध्याय को घृणा, अपमान, तिरस्कार और जातिगत वर्चस्व का एहसास तब हुआ, जब उसे चायवाले चूहड़ा समझकर चाय नहीं दी, बल्कि हिकारत भरे

▶ सम्पूर्ण समाज को सामाजिक विषमता की सोच से मुक्त होने की कहानी के रूप में सलाम को पढ़ा जाना चाहिए

स्वर में फटकारता रहा। गाँव के बल्लू राँघड़ के लड़के रामपाल ने बड़ी भद्दी गालियाँ दी। इस घटना से कमल की संवेदना के तार झंकृत हो गए। पन्द्रह वर्ष पुरानी बातें उसे याद आई, जब हरीश को घर लाने और खाना खिलाते समय जाति जान लेने पर, उसे अपनी माँ का झन्नाटेदार थप्पड़ खाना पड़ा था। हरीश की वे बातें भी कमल को सच लगने लगी, जो अखबारों में छपी दलित उत्पीड़न की घटनाओं को हरीश द्वारा सुना करता था। कमल उपाध्याय की आत्मानुभूति से स्वानुभूति और सहानुभूति के प्रश्नों का उत्तर कहानीकार ने रचनात्मक कसौटी के आधार पर दिया। शादी की सुबह सलाम पर बुलाने की हठधर्मिता एवं धमकियों से डरे बिना उस प्रथा को न मानने की हरीश की जिद उसकी दलित चेतना से कहानी को एक उदात्त वैचारिक परिप्रेक्ष्य मिलता है। हरीश और कमल की दोस्ती तथा एक-दूसरे का सहयोग, सानिध्य एवं मैत्री से लेखक के सरोकारों को कहानी पुष्ट करती है। सलाम कहानी अन्ततः परम्परा एवं प्रथा के अमानवीय पहलुओं को उजागर करते हुए उसके नेपथ्य में काम कर रही जाति प्रथा एवं वर्चस्व की बुरी सोच को उजागर करती है। यह कहानी असमानता, अस्पृश्यता, भेदभाव एवं जातिगत वर्चस्व की मानसिकता को बदलने तथा समतापरक भारत के निर्माण की आकांक्षा को साकार करने का लक्ष्य सामने रखती है। सम्पूर्ण समाज को सामाजिक विषमता की सोच से मुक्त होने की कहानी के रूप में सलाम को पढ़ा जाना चाहिए।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

दलित कहानियों में लेखकों ने दलित समाज की बुनियादी समस्याओं को कहानी का केन्द्रीय विषय बनाया है। जाहिर है, इन बुनियादी समस्याओं में भारतीय समाज में मौजूद वर्ण और जाति का सवाल सबसे बड़ी समस्या के रूप में कहानियों में चित्रित हुआ है। दलित कहानीकारों का मानना है कि वर्ण और जाति के कारण ही उन्हें भारतीय समाज में ज्ञान और सम्पत्ति से वंचित रहना पड़ा। उनके साथ अस्पृश्य जैसा व्यवहार किया गया। दलित समाज की गरीबी का सबसे बड़ा कारण भी यही है। उनका मानना है कि दलित होने की पीड़ा की अनुभूति कोई दूसरा नहीं कर सकता है और न ही उसका बयान। इसलिए दलित उत्पीड़न का बयान स्वयं वे ही कर सकते हैं। इसलिए दलित कहानियों में प्रतिरोध की जो चेतना दिखलाई पड़ती है, उसका एक बड़ा कारण भी यही है कि गैर दलित चिन्तक अपनी व्याख्याओं में दलित समाज की इस मनोदशा को नहीं समझ पाते हैं। दलित लेखक इन सवालों से टकराते हैं तथा दलित जीवन के मूल सवालों और समस्याओं को कहानी का हिस्सा बनाते हैं। इसलिए विचार और साहित्य की दुनिया में दलित कहानियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनका अध्ययन एक नए समाज की वास्तविक जिन्दगी को जानने का भी अनुभव है, इसमें सन्देह नहीं । दलित जीवन की सम्पूर्ण यातानायें, बेबसी और मजबूरी का सच्चाई और इमानदारी को साथ अभिव्यक्ति इन कहानियों में हुई है ।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. दलित कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ एवं प्रतिनिधि रचनाकारों का संक्षिप्त उल्लेख स्पष्ट कीजिए।
2. दलित कहानियों में उठाए गए प्रमुख सामाजिक प्रश्न पर विचार कीजिए।
3. ज्सामाजिक असमानता और उत्पीड़न का यथार्थ चित्र कहानियों में प्रस्तुत किया है। चर्चा कीजिए।
4. ओमप्रकाश वाल्मीकि के यथार्थवादी दृष्टिकोण पर टिप्पणी लिखिए।
5. क्या आप सहमत हैं कि दलित साहित्य एक वैश्विक प्रतिरोध की अभिव्यक्ति है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे
6. दलित साहित्य का सामाजशास्त्र - ठाकुर हरिनारायण

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल भारती - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

नो बार - जयप्रकाश कर्दम

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- जयप्रकाश कर्दम के बारे में परिचय प्राप्त करता है
- 'नों बार' कहानी का आस्वादन होता है
- जयप्रकाश कर्दम के रचनाओं की विशेषाताओं से अवगत होता है
- 'नो बार' कहानी की समस्याओं से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

'नो बार' समकालीन भारतीय समाज की जातिवादी मानसिकता और सामाजिक पाखंड की गहरी पड़ताल करती है। इसकी पृष्ठभूमि उस तथाकथित आधुनिक और शिक्षित समाज से जुड़ी है, जो सतह पर तो समानता, प्रेम और उदारता की बातें करता है, लेकिन आंतरिक रूप से अब भी जाति की दीवारों में कैद है। इस समाज में लोग विवाह-विज्ञापनों में 'No Caste Bar' जैसे आकर्षक और उदार विज्ञापन लिखते हैं, परंतु जब व्यवहार में किसी दलित युवक या युवती से संबंध की बात आती है, तो वही लोग उसी जातिवादी सोच का परिचय देते हैं, जिससे समाज को मुक्त कराने का दावा करते हैं। इस कहानी की पृष्ठभूमि केवल प्रेम संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस गहरे सामाजिक भेदभाव को उजागर करती है जो आज भी दलित समुदाय को मुख्यधारा से दूर रखने की कोशिश करता है। इसमें बताया गया है कि कैसे एक पढ़ा-लिखा, आत्मनिर्भर दलित युवक समाज की इन दोहरी मान्यताओं का शिकार होता है। 'नो बार' की पृष्ठभूमि वर्तमान भारत की उस सामाजिक विडंबना को दर्शाती है, जिसमें संवैधानिक समानता के बावजूद मानसिक और सामाजिक भेदभाव ज्यों का त्यों बना हुआ है। यह कहानी एक दलित की व्यक्तिगत व्यथा नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज़ है, जो यह प्रश्न उठाता है कि क्या हमारा समाज वास्तव में जातिविहीन हो पाया है, या हम अब भी केवल दिखावे की प्रगतिशीलता में जी रहे हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्वानुभूति, विडम्बना, छटपटाहट, संवेदनशीलता

Discussion / चर्चा

2.2.1 जयप्रकाश कर्दम

डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिन्दी दलित साहित्य के सशक्त सर्जक है। हिन्दी दलित साहित्य के प्रथम पीढी के हस्ताक्षर है। वे दलित वर्ग से जुड़े होने के कारण उनका साहित्य अनुभूति का साहित्य न बनकर स्वानुभूति का साहित्य हैं। उनके साहित्य में दलित जीवन से सम्बन्धित यथार्थ चित्रण मिलता है। उनका साहित्य दलित जीवन की संवेदनशीलता और अनुभवों का यथार्थ हैं। डॉ. जयप्रकाश कर्दम का साहित्य दलितों के जीवन-संघर्ष और उनकी बेचैनी का जीवंत दस्तावेज है। इनके साहित्य में दलित जीवन की विडम्बना, दुःख, पीड़ा, कसक तथा छटपटाहट दिखाई देता है। वे अपने साहित्य के माध्यम से समाज में नवनिर्माण चाहते हैं। उनके साहित्य की मांग विश्वदृष्टि, जातिभेद का त्याग, उदात्त आदर्श भाव तथा आदर्श जीवन का निर्माण है। जो सम्पूर्ण मानव जाति को सत्य के प्रशस्त मार्ग पर अग्रसर करना है।

▶ हिन्दी दलित साहित्य के प्रथम पीढी के हस्ताक्षर

डॉ. जयप्रकाश कर्दम का साहित्य लेखन तीव्र और अबाधित गति से हो रहा है। इनकी कुछ ही समय में प्रकाशित होनेवाली रचनाओं में एक कहानी संग्रह 'खरोच' और एक वैचारिक पुस्तक 'दलित स्त्री के हक में' हैं। इनके विशेष कार्यों में राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सम्मेलन-संगोष्ठियों में भागीदारी, व्याख्या एवं शोधपत्रों का वाचन है। इनकी साहित्य साधना हिन्दी भाषिक सीमाओं को लांध कर पार हो चुकी हैं। इनकी साहित्यिक रचनाएँ इतनी जानदार है कि देश-विदेश की कई भाषाओं में वे अनुदित हुई। 'छप्पर' उपन्यास मराठी, गुजराती, तेलुगु, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मनी, इतालवी, जापानी और रूसो सहित अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में अनुदिन और प्रकाशित हैं। कर्दम को साहित्यिक, सास्कृतिक एवं सामाजिक संस्थानों द्वारा निम्नलिखित सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त है- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा साहित्यकार फैलोशीप, भारतीय बौद्ध महासभा, उत्तर प्रदेश द्वारा बौद्ध साहित्य लेखन के लिए फैलोशीप, मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वारा 'छप्पर' उपन्यास के लिए 'राष्ट्रीय पुरस्कार', अस्मितादर्शी साहित्य अकादनी, उज्जैन द्वारा 'साहित्य सारस्वत सन्मान', भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा 'डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार', सत्यशोधक समाज महाराष्ट्र द्वारा 'ज्योतिबा फुले सम्मान'। भारतीय दलित साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश द्वारा 'संत कबीर' राष्ट्रीय सन्मान। उत्तर प्रदेश दलित साहित्य अकादमी द्वारा 'रविदास सम्मान'। विश्व हिन्दी सचिवालय,मारीशियस द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय 'निबंध प्रतियोगिता' में 'द्वितीय पुरस्कार'। डॉ. जयप्रकाश कर्दम को गौरवान्वित करनेवाली उपलब्धियाँ यह है कि-सन् 1995 में राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, रूपाम्बरा द्वारा काठमांडु नेपाला में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन में भागीदारी, सन् 2001 में चण्डीगढ़ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन की अध्यक्षता, सन् 2005 में आयोजित सार्क देशों के साहित्यकार संमेलन (एक आकाश-अनेक संसार) में कथाकार के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व, सन् 2006 के

▶ डॉ. जयप्रकाश कर्दम का साहित्य लेखन तीव्र और अबाधित गति से हो रहा है

SGOU

जर्मनी में आयोजित विश्व पुस्तक मेला के अवसर पर ईन्टरनेशनल दलित सोलिडेरिटो नेटवर्क के निमंत्रण पर जर्मनी की साहित्यिक यात्रा आदि।

2.2.1.1 प्रकाशनः

उपन्यास-'छप्पर', 'करुणा'। बाल-उपन्यास-श्मशान का रहस्य। कविता-संग्रह-'गूँगा नहीं था मैं', 'तिनका तिनका आग'। कहानी संग्रह-'तलाश'। 'शोधप्रबंध - श्रीलाल शुक्ल कृत रागदरबारी का सामाजशास्त्रीय अध्ययन', दलित विमर्श-'साहित्य के आईने में 'वर्तामान दलित आन्दोलन-दशा और दिशा'। दलित कविता ;समकालीन परिदृश्य' बौद्धधर्म के आधार-स्तंभ, जर्मनी में दलितसाहित्य। राहुल (खंडकाव्य); संपादन-धर्मांतरण और दलित, जाति-एक विमर्श, दलितसाहित्य (वार्षिकी); अनुवाद-चमार (दि चमार्स का हिंदी अनुवाद);

2.2.2 'नो बार'

कहानी 'नो बार' एक दलित युवक की जीवन-कथा है, जो समाज में फैले जातिवादी सोच और दोगलेपन को उजागर करती है। कहानी में दिखाया गया है कि कैसे लोग शादी के विज्ञापनों में लिखते हैं — 'No Caste Bar' (जाति कोई बाधा नहीं), लेकिन जब बात सच में किसी दलित लड़के या लड़की से शादी की आती है, तो वही लोग जाति का भेदभाव प्रकट करने लगते हैं। कहानी का नायक पढ़ा-लिखा, समझदार और आत्मसम्मानी दलित युवक है। उसे एक उच्च जाति की लड़की से प्रेम हो जाता है। लड़की भी उससे प्रेम करती है और दोनों शादी करना चाहते हैं। लेकिन लड़की के परिवार वाले उसकी जाति जानने के बाद शादी के लिए मना कर देते हैं। इस कहानी के जरिए लेखक यह दिखाते हैं कि समाज में आज भी जातिवाद गहराई से मौजूद है। 'नो बार' सिर्फ शब्दों में होता है, व्यवहार में नहीं। यह कहानी दलितों के साथ हो रहे सामाजिक छल और छिपे हुए भेदभाव को बहुत सशक्त ढंग से सामने लाती है।

▶ लेखक यह दिखाते हैं कि समाज में आज भी जातिवाद गहराई से मौजूद है

यह कहानी दिखाती है कि समाज में कथनी और करनी में कितना अंतर है। जो लोग ऊँची सोच का दावा करते हैं, वही लोग जातिवाद के शिकार होते हैं। 'नो बार' जैसा वाक्य सिर्फ दिखावा बनकर रह जाता है। यह कहानी अन्तर्जातीय विवाह की समस्या के आधार पर समाज की सच्चाई और दोहरे आचरण को अभिव्यक्ति देती है। अलग-अलग जाति परिवेश में पले बड़े लोगों की प्रगतिशीलता के अलग-अलग मानदंडों सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है- सवर्ण तो सवर्ण है-चाहे वह प्रगतिशील हो या परम्परावादी। यह कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या सच में हमारा समाज जातिविहीन हुआ है? जयप्रकाश कर्दम स्वयं एक दलित लेखक हैं। उन्होंने इस कहानी के माध्यम से अपने अनुभवों और समाज की सच्चाई को बड़े सटीक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा सरल लेकिन मार्मिक है। वे हमें यह दिखाते हैं कि सामाजिक समानता की बातें तब तक अधूरी हैं, जब तक व्यवहार में बदलाव नहीं आता। 'नो बार' सिर्फ एक प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक दस्तावेज़ है, जो

▶ समाज में कथनी और करनी में कितना अंतर है

आज के तथाकथित शिक्षित समाज का असली चेहरा दिखाती है। यह कहानी हमें सिखाती है कि हमें जातिवाद की जड़ों को उखाड़ने की ज़रूरत है और सच्चे समानता आधारित समाज की दिशा में काम करना चाहिए।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

जयप्रकाश कर्दम एक प्रसिद्ध दलित साहित्यकार हैं, जिनका लेखन सामाजिक न्याय, बराबरी और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध है। उनका जन्म दलित समुदाय में हुआ, और उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को अपनी कहानियों, कविताओं और लेखों के माध्यम से समाज के सामने रखा। उनकी भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली होती है, जो आम लोगों के दिल को छूती है। नो बार' जयप्रकाश कर्दम की एक सशक्त कहानी है, जो जातिवाद के छिपे हुए रूप को उजागर करती है। कहानी में एक दलित युवक और एक उच्च जाति की लड़की की प्रेम कथा दिखाई गई है। लड़की के परिवार वाले अपने विज्ञापन में लिखते हैं कि 'जाति कोई बाधा नहीं है (No Bar)', लेकिन जब उन्हें लड़के की दलित पहचान का पता चलता है, तो वे इस रिश्ते को ठुकरा देते हैं।

यह कहानी यह दिखाती है कि समाज में No Bar जैसे शब्द सिर्फ दिखावे के लिए होते हैं। व्यवहार में आज भी जातिवाद गहराई में मौजूद है। समाज में जातिवाद अभी भी मौजूद और मजबूत है, चाहे लोग उसे स्वीकार करें या नहीं। 'No Bar' जैसी बातें जब तक व्यवहार में नहीं उतरतीं, तब तक वे सिर्फ खोखले दावे हैं। दलित साहित्य सिर्फ विरोध नहीं करता, बल्कि समाज को उसका यथार्थ रूप दिखानेवाला आईना है। यह प्रगतिशीलता के पोशाक को चीर कर उनकी असलियत को दिखाती है। कहानी के अंत में लड़की के पिता कहते हैं- "यह सब तो ठीक है कि हम जाती-पाती को नहीं मानते और हमने 'मेट्रमोनियल' में 'नो बार'छपवाया था, लेकिन, फिर भि कुछ चीज़ें देखनी हो जाती है।आखिर नो बार का यह मतलब तो नहीं कि किसी चमार -चूहड़े के साथ ...। ये वाक्य कहानी के अन्तरंग विचार को प्रकट कर कहानी को अत्यंत प्रभावशाली बनाती है

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. जयप्रकाश कर्दम का व्यक्तित्व और कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।
2. 'नो बार' कहानी की समस्या स्पष्ट कीजिए।
3. जयप्रकाश कर्दम 'नो बार' कहानी के माध्यम से समाज से क्या कहना चाहता है ? व्यकत कीजिए ।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर

3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. लिम्बाले, शरणकुमार - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. दुबे, अभय कुमार - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. भारती, कँवल - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

आवाज़ें - मोहनदास नैमिशराय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मोहनदास नैमिशराय के बारे में जानता है
- आवाज़ें कहानी से परिचित होता है
- कहानी में चित्रित समस्याओं को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

दलित साहित्य ने भारतीय समाज की उस परत को उजागर किया है, जो सदियों से हाशिए पर रही है। इस साहित्य का उद्देश्य केवल दलित पीड़ा को दर्शाना नहीं, बल्कि प्रतिरोध, अस्मिता और सामाजिक परिवर्तन की चेतना को भी उजागर करना है। मोहनदास नैमिशराय दलित साहित्य के एक ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं जिन्होंने पत्रकारिता, आलोचना, आत्मकथा, कहानी और नाटक के माध्यम से दलित समाज की आवाज को पूरे भारतीय बौद्धिक परिदृश्य में स्थापित किया।

उनका जन्म 5 सितम्बर 1949 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने सामाजिक और साहित्यिक कार्यों के ज़रिए दलित आंदोलन को दिशा देने का कार्य किया। पत्रकारिता से लेकर आत्मकथा लेखन तक, उन्होंने एक प्रतिबद्ध दलित बौद्धिक की भूमिका निभाई। उनकी आत्मकथात्मक कृतियाँ 'अपने-अपने पिंजरे' तथा 'रंग कितने संग मेरे' ने व्यापक पाठक वर्ग को झकझोरा। साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने सामाजिक आंदोलनों और बाल साहित्य में भी उल्लेखनीय योगदान दिया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

दबंग मानसिकता, अमानवीय परपंराओं, जीवन की उत्पीड़न

SGOU

Discussion / चर्चा

2.3.1 मोहनदास नैमिशराय

दलित साहित्य को स्थापित करने और उसे शिखर तक ले जाने में अविस्मरणीय भूमिका निभाने वाले मोहनदास नैमिशराय का जन्म 5 सितम्बर 1949 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् कुछ समय वे मेरठ के एक कॉलेज में प्रवक्ता रहे। अपना पूरा जीवन दलित पत्रकारिता एवं साहित्य को समर्पित कर चुके नैमिशराय ने अनेक राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में दलितों से जुड़े मुद्दों और समस्याओं को उठाया। वे जितने निडर पत्रकार रहे, उतने ही बेबाक और प्रखर साहित्यकार भी। भाषायी तेवर उनके साहित्य की अलग पहचान देते हैं। वे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों और धार्मिक पाखण्डों पर बड़ी ही निर्दयता से प्रहार करते हैं। उनकी आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' (पहला भाग), 'अपने-अपने पिंजरे' (दूसरा भाग) तथा 'रंग कितने संग मेरे' (तीसरा भाग) तीन खण्डों में प्रकाशित हुई है। उनके विशाल रचना-संसार में 'आवाजें', 'हमारा जवाब', 'दलित कहानियाँ' (कहानी संग्रह); 'क्या मुझे खरीदोगे', 'मुक्तिपर्व', 'आज बाजार बंद है', 'झलकारी बाई', 'महानायक अम्बेडकर', 'जख्म हमारे', 'गया में एक अदद दलित' (उपन्यास); 'अदालतनामा', 'हैलो कामरेड' (नाटक); 'सफदर एक बयान', 'आग और आंदोलन' (कविता-संग्रह), आदि शामिल हैं। 'दलित पत्रकारिता एक विमर्श' (चार-भाग), 'दलित आंदोलन का इतिहास' (चार भाग), 'हिन्दी दलित साहित्य', अन्य चर्चित कृतियाँ हैं। उनके दो दर्जन से अधिक रेडियो नाटक हिन्दी रेडियो नाटक में संकलित हैं। उन्होंने बच्चों के लिए भी बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, झलकारी बाई आदि की संक्षिप्त जीवनियाँ लिखी। वे लगभग 6 वर्षों तक डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान (भारत सरकार) में सम्पादक रहे। कई वर्षों तक बयान पत्रिका का सफलता पूर्वक सम्पादन करने वाले नैमिशराय डॉ. अम्बेडकर स्मृति पुरस्कार 1993, वाणिज्य हिन्दी ग्रन्थ पुरस्कार 1995, डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार 1998, डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल मिशन पुरस्कार (कनाडा) 1998, गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार 2006, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा साहित्य भूषण पुरस्कार-2015 से सम्मानित हो चुके है। अपने उत्कृष्ट सामाजिक एवं साहित्यिक योगदान के कारण डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान, महू (म.प्र.) द्वारा भी उन्हें 2010 में विशेष रूप से सम्मानित किया।

▶ राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में दलितों से जुड़े मुद्दों और समस्याओं को उठाया

2.3.2 आवाजें

'आवाजें' मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित कहानी संग्रह है जिसका प्रकाशन समता प्रकाशन, दिल्ली की ओर से सन् 1998 ई. में हुआ है। विवेच्य कहानी संग्रह में करीब बारह कहानियाँ हैं जैसे 'आवाजें', 'घायल शहर की एक बस्ती', 'अपना गाँव', 'हारे हुए लोग', 'नया पड़ोसी', 'अधिकार चेतना', 'गंजा पेड़', 'बरसात', 'रीत', 'उसके जख्म', 'मैं शहर और वे', 'भीड़ में वह', महाशूद्र।

▶ विवेच्य कहानी संग्रह में करीब बारह कहानियाँ हैं

- आज के दलित की मानसिकता के प्रतिनिधि भी है और उसे सही राह पर आगे ले जाने का दायित्व भी अनुभव करते हैं

प्रस्तुत कहानी संग्रह के बारे में कमलेश सचदेव ने लिखा है- 'दलितों की पीड़ा को व्यक्त कर देना मात्र इन कहानियों का लक्ष्य नहीं है बल्कि उनके भीतर सुलगता आक्रोश धीरे-धीरे दहकते विरोध में बदलता दिखाने के प्रति मोहनदास नैमिशराय सतर्क रहे हैं। वे आज के दलित की मानसिकता के प्रतिनिधि भी है और उसे सही राह पर आगे ले जाने का दायित्व भी अनुभव करते हैं। संग्रह की अनेक कहानियों में इसे महसूस किया जा सकता है।' विवेच्य कहानी संग्रह में आए दलित जीवन के चित्रण को इस प्रकार देखा जा सकता है।

- दलित जीवन की उत्पीड़न का चित्रण

'आवाजें' कहानी में दलित जीवन की उत्पीड़न का चित्रण है। सवर्णों की दबंग मानसिकता का चित्रण कहानी का आधार है। संगठित दलित और दबंग मानसिकता वाले सवर्ण संघर्ष कहानी में जान भर देता है। मकदुरपुर में मेहतरों के कुछ परिवार है। ठाकुरों के इशारों पर गांव चलता है। मेहतरों में अस्मिता जगने के कारण वे गांव की गंदगी साफ करना और जूठन लेने का बहिष्कार डालते हैं। ठाकुरों की बस्ती गंदगीमय हो जाती है। वे अपने धाक पर मेहतरों को सफाई काम केलिए प्रेरित करना चाहते हैं। मेहतर समाज संगठित हो गया है। पुलिस और ठाकुरों की मिली भगत के कारण मेहतरों को जाली डकैती के मामलों में फंसा कर जेल भेज दिया जाता है। जेल से छूटने पर सरकार मेहतरों के पक्ष लेती है। ठाकुर को मेहतरों के उत्पीड़न के मामलों में दोषी माना जाता है। ठाकुर पक्ष के लोग मेहतरों का बदला लेने पर तुले हुए हैं। रात्रि के समय ठाकुर पक्ष के लोग मेहतरों की बस्ती को आग लगा देते हैं जिसमें मेहतरों की वित्त हानि हो जाती है।

- दलित जातियों में जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार हो रहा है, उन्होंने घृणित पेशों को त्याग देना उचित समझा है

'आवाजें' कहानी के जरिए मोहनदास नैमिशराय सामंती और अमानवीय परपंराओं के विरूद्ध उपजे दलित आक्रोश और प्रतिरोध को सामने लाते हैं। वर्ण व्यवस्था में दलितों के साथ अमानवीय पेशे भी जोड़ दिये जाते हैं। इस व्यवस्था के मुताबिक मरे जानवारों की खाल उतरना और मैल उठाने का काम दलितों के हिस्से में दे दिया गया। दलित जातियों में जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार हो रहा है, उन्होंने घृणित पेशों को त्याग देना उचित समझा है। 'आवाजें' कहानी की कथा में इतवारी और उसके मेहतर समाज के लोग सामंतों की जूठन और गंदगी उठाने से मना कर देते हैं। सामंत औतार सिंह मेहतरों के इस निर्णय को अपनी शान पर कुठाराघात के तौर पर देखता है। उसकी सामंती मानसिकता को यह स्वीकार ही नहीं है कि भंगी समाज के लोग जूठन और गंदगी के पेशे को त्याग कर कोई सम्मानजनक पेशा चुन लें। सामंत औतार सिंह दलितों को सबक सिखाने के लिए रात को उनकी बस्ती में आग लगवा देता है। जातिवाद और सामंती व्यवस्था दलितों के लिए कितनी खौफनाक है, इसका चित्रण इस कहानी में बड़ी शिद्दत से किया गया है। ब्राहमण समाज के भीतर एक अलग प्रकार की ऊंचनीच आधारित संरचना मौजूद है।

SGOU

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मोहनदास नैमिशराय दलित साहित्य के एक सशक्त, निडर और प्रतिबद्ध लेखक हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से न केवल दलित पीड़ा को स्वर दिया, बल्कि उसे एक सशक्त प्रतिरोध शक्ति के रूप में बदला। उनका कहानी संग्रह 'आवाज़ें', जो 1998 में प्रकाशित हुआ, दलित समाज की जमीनी सच्चाइयों, सामाजिक संघर्षों और आंतरिक चेतना को प्रतिबिंबित करता है। इस संग्रह की शीर्षक कहानी 'आवाज़ें' एक प्रतीकात्मक कथा है, जो उत्तर भारत के एक गाँव मकदुरपुर में घटित होती है। यहाँ के मेहतर समुदाय ने ठाकुरों की गंदगी साफ करने और जूठन उठाने जैसे अपमानजनक कार्यों से इनकार कर दिया। यह विरोध सिर्फ एक काम का नहीं, बल्कि जातिगत गुलामी और अपमानजनक सामाजिक ढांचे के खिलाफ विद्रोह था। सवर्ण ठाकुर इस असहमति को अपनी सत्ता के लिए खतरा मानते हैं और पुलिस-प्रशासन की मदद से दलितों को झूठे मामलों में फँसाकर जेल भिजवाते हैं। हालांकि बाद में सरकार और कानून मेहतरों के पक्ष में फैसला देता है, लेकिन सामंती मानसिकता हार नहीं मानती। ठाकुर दल रात्रि में दलित बस्ती को जला देते हैं, जिससे उन्हें भारी आर्थिक और मानसिक नुकसान होता है। यह कहानी दलित समाज की चेतना, आत्म-सम्मान और संगठित प्रतिरोध की मिसाल बनकर सामने आती है। नैमिशराय ने इस कहानी में जातिवादी और सामंती ताकतों की बर्बरता को बेनकाब करते हुए बताया कि दलितों की असली मुक्ति उनके पेशों से नहीं, बल्कि सामाजिक बराबरी की वास्तविक प्राप्ति में है। 'आवाज़ें' कहानी न केवल एक सामाजिक दस्तावेज है, बल्कि वह दलित अस्मिता का उद्घोष भी है, जो भारतीय साहित्य में बदलाव की एक क्रांतिकारी लहर का संकेत देती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. कथाकार मोहनदास नैमिशराय का परिचय दीजिए।
2. 'आवाज़ें' कहानी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. 'आवाज़ें' कहानी मे चित्रित समस्याएं पर विचार कीजिए ।
4. कहानी के आधार पर दलितों की अस्मिता के प्रतिरोध पर प्रकाश डालिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. लिम्बाले, शरणकुमार - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र -11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. दुबे, अभय कुमार - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. भारती, कँवल - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

दलित-ब्राह्मण - सत्यप्रकाश

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'दलित ब्राह्मण' कहानी से अवगत होता है
- दलित कहानीकार सत्यप्रकाश के बारे में जनता है
- कहानी में चित्रित समस्याओं की जानकारी होती है

Background / पृष्ठभूमि

यह कहानी उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर के परिवेश में रची गई है, जहाँ तीन उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी विजयरंजन कुरील, गौरीशंकर माहेश्वरी और शिवदत्त अपने विचारों और अनुभवों के माध्यम से समाज, धर्म, जाति और नैतिकता से जुड़े गहरे प्रश्न उठाते हैं। यह कहानी सामाजिक विडंबनाओं और जातिगत पाखंडों पर व्यंग्य करती है। कुरील एक दलित अधिकारी हैं, जो यह मानते हैं कि सवर्ण वर्ग, विशेषतः ब्राहमणों ने दलितों पर सदैव अन्याय किया है। किंतु जब वे स्वयं सत्ता और पद के उच्च स्थान पर पहुँचते हैं, तो उसी व्यवस्था का हिस्सा बन जाते हैं, जिसे वे कोसते थे वह रिश्वत लेते हैं, फाइलें घर बुलवाते हैं और भ्रष्टाचार को जायज़ ठहराते हैं। यह विरोधाभास इस बात को दर्शाता है कि शोषण केवल सवर्ण नहीं करते, बल्कि जब भी कोई व्यक्ति सत्ता में आता है, तो उसके सामने नैतिकता और स्वार्थ की परीक्षा होती है। कहानी का भाव यह है कि जातिगत भेदभाव केवल बाहरी नहीं, आंतरिक भी है, और इसे केवल कानून से नहीं, बल्कि सोच और व्यवहार में बदलाव लाकर ही मिटाया जा सकता है। 'दलित ब्राह्मण' जैसे शब्द के माध्यम से यह कथा उस व्यक्ति की मानसिकता को दर्शाती है, जो उत्पीड़ित से उत्पीड़क बनने की राह पर चल पड़ता है। यह कहानी जाति, वर्ग और नैतिक जिम्मेदारी के द्वंद्व को अत्यंत यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत करती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

दलित कर्मचारी, उच्चाधिकारी, सामजिक, आलोचना, जातिविमर्श

SGOU

Discussion / चर्चा

2.4.1 दलित ब्राहमण

'दलित ब्राहमण' सत्यप्रकाश की चर्चित कहानी है जिसमें शिवदत्त जैसे दलित कर्मचारी ब्राहमण बनने का प्रयास करते हैं। वह समाज का ध्यान न रखकर येन-केन प्रकारेण अपने हितों की पूर्ति में लगे रहते हैं। भर्ती या प्रमोशन के लिए गठित कमेटि यों में एस सी प्रतिनिधि का होना आवश्यक है। परन्तु शिवदत्त जिस कमेटी के सदस्य होते हैं वह फाइल का अध्ययन किये बिना रिश्वत लेकर हस्ताक्षर कर देते हैं। वहीं विजय रंजन कुरील जैसे दलित कर्मचारी अपने दायित्वों का निर्वाह ईमानदारी से करते हैं। सरकार में बैठे दलित मन्त्रियों को भी समाज की चिन्ता न होकर अपनी कुर्सी की चिन्ता है। मन्त्री जी मन्त्रिमण्डल से बाहर कर दिये जाते हैं और शिवदत्त जी वरिष्ठ होने के पश्चात् भी प्रमोशन नहीं पाते तो दलित ब्राहमणों से मुक्ति की बात करते हैं- 'और फिर शिवदत्त जी ने कुरील साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा 'चलो कुरील साहब घर चलो। निकालना ही होगा कोई तरीका इन दलित ब्राहमणों से निपटने का। अब दोहरी लड़ाई लड़नी होगी।

- 'दलित ब्राहमण' सत्यप्रकाश की चर्चित कहानी है

2.4.2 कथावस्तु

दलित ब्रहमण कहानी का परिवेश कानपुर शहर से लिया गया है। जहां तीन मित्र विजयरंजन कुरील, गौरीशंकर माहेश्वरी और शिवदत्त तीनों भद्रजन भारत सरकार में उच्चाधिकारी है। पूरा वातावरण समाज, धर्म और जात पात को लेकर दर्शाया गया है। कुरील को ऐसा लगता है कि केवल ब्रहमण या किसी और सवर्ण जाति के लोग दलितों के साथ अन्याय करते हैं। लेकिन वह स्वयं अपनी जिम्मेदारी सही तरीके से नहीं निभाता है। कहानी का वातावरण ऐसा दिखाया गया है कि शोषण कोई भी करें लेकिन दोष केवल ब्रहमणों या दूसरे सवर्णों पर लगाया जाता है।

- पूरा वातावरण समाज, धर्म और जात पात को लेकर दर्शाया गया है

कहानी प्रारंभ में एक दिन कुरील साहब गुस्सा होते हुए समाज को कोसते कहते हैं कि समाज ने मुझे क्या दिया? मैं समाज की परवाह क्यों करूं? शिवदत्त उन्हें समझाते हुए कहता है कि आज हम, आप जिस पद पर हैं हमें वहां पहुंचाने में समाज ने भी त्याग और अपना योगदान दिया है। समाज ने इसमें अपनी अहम भूमिका निभाई है। तो हमें भी अपने सामाजिक दायित्वों को कभी नहीं भूलना चाहिए। समाज के हितों की रक्षा के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए।

- कुरील समाज को कोसते हैं, शिवदत्त याद दिलाते हैं कि उनकी सफलता में समाज का योगदान है और दायित्व निभाना जरूरी है

गौरीशंकर माहेश्वरी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि सब मिला कर देखें तो आज जाति-पात, धर्म आदि ये चीजें और बढ़ रहे है। जाति, वर्ग, धर्म, संप्रदाय के नाम पर वैमनस्य बढ़ रहा है। फर्क बस इतना है पहले जातिय घृणा लोगों में बाहर थी अब अंदर है। खाली छुआछूत खत्म होने का मतलब यह थोड़े ही है कि जात पात या जातीय घृणा

खत्म हो गई। तीनों जब दफ्तर से छूटते तो घंटों बैठकर बातें करते और गप्पे-शप्पे मारते फिर घर जाते। एक रोज कुरील को दफ्तर आने को लेट हो जाता है माहेश्वरी और शिवदत्त उसका इंतजार करते हैं। कुरील जब आए तो दोनों ने पूछा कहां रह गए थे इतनी देर कैसे हो गई?बार-बार पूछने पर कुरील कहता है कि "मैं आपकी तरह दब्बू अधिकारी नहीं हूं। मैं आज तक एक भी डी.पी.सी की बैठक में नहीं गया। मैं तो साफ कह देता हूं। फाइल घर लाओ। जिसे जरूरत होती है सारी फाइलें तैयार करके घर लाता है। घंटों बैठता हूं, तब जाकर हस्ताक्षर करता हूं। खुशामद भी करते हैं, चढ़ावा भी चढ़ाते हैं। वह भी खुश, हम भी खुश।"

▶ माहेश्वरी कहते हैं जातीय वैमनस्य बढ़ रहा है, और कुरील मानता है कि वह फाइलें घर बुलाकर चढ़ावे लेता है

दोनों मित्र कुरील की ओर दोनों आश्चर्य से देखते हैं कि जो व्यक्ति कुछ दिन पहले समाज को कोस रहा था कि समाज ने उसे क्या दिया है? आज वही समाज की व्यवस्था को भ्रष्ट कर रहा है। वैसे अब तक तो यह सारे दोष ब्रहमणों या दूसरे सवर्णों पर लगाये जाते थे। आमतौर पर अब तक ब्रहमणों पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने दलित समाज के साथ अन्याय किया है। माहेश्वरी, कुरील को समझाते हुए कहते हैं कि सही- गलत तो विवाद का विषय हो सकता है। शिवदत्त, कुरील साहब को समझाते हुए कहते हैं कि मुझे संतोष है कि मैंने किसी के साथ ना अन्याय किया है और ना होने दिया। एक-दूसरे को कहने-सुनाने और समझाने के बाद तीनों एक दूसरे को परस्पर नमस्कार करते हुए वह अपने-अपने घरों को चल देते हैं।

▶ कुरील खुद भ्रष्टाचार में लिप्त है

घटना के 6 महीने बाद एक दिन कुरील साहब समय के अनुसार पर नहीं पहुंचे, तो शिवदत्त और माहेश्वरी साहब चिंतित हुए और बोले चलिए देख आते हैं। तो कुरील साहब रास्ते में ही मिल जाते हैं वे बताते हैं कि उनके साथ बड़ा अन्याय हुआ है।

दरअसल बात होती है कि प्रमोशन की लिस्ट में कुरील साहब का नाम नहीं आता, उनसे जूनियर को प्रमोशन मिल जाता है, लेकिन उनको नहीं। कुरील साहब कहते हैं धांधलेबाजी चल रही है। कुरील साहब गुस्सा दिखाते हुए बताते हैं हेडक्वार्टर की डी.पी. सी में भी एस.सी. / एस.टी. का मेंबर भी होता है। जरूर उसी ने फाइल बिना स्टडी किए हस्ताक्षर कर दिया होगा। वह भड़कते हुए बोलते हैं एक बार बस पता लगा लूं फिर गद्दार समाजद्रोही को छोड़ूंगा नहीं। माहेश्वरी कहते हैं मैं आपको यही बता देता हूं इसमें हेड क्वार्टर से पता करने की क्या बात है? कुरील साहब ने जिज्ञासा प्रकट की और पूछा कौन हो सकता है।

▶ प्रमोशन न मिलने पर कुरील एस.सी/एस.टी सदस्य को दोषी मानता है

माहेश्वरी साहब के मुंह से यंत्रवत निकल गया, और कौन होगा कुरील साहब, होगा कोई दलित ब्राहमण। यह सुनते ही कुरील साहब का चेहरा पीला पड़ जाता है। काटो तो खून नहीं। शिवदत्त जी कुरील साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहते हैं, "चलो कुरील साहब, घर चलो। निकालना ही होगा कोई ना कोई तरीका इन दलित ब्राहमणों से निपटने का।"

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'दलित ब्राहमण' कहानी में लेखक ने जात पात के नाम पर होने वाली लापरवाही व भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। कहानी में तीन मित्र शिवदत्त, गौरीशंकर माहेश्वरी और विजय रंजन कुरील है। शिवदत्त धर्म से बौद्ध धर्म और शेष दोनों दलित हैं। माहेश्वरी और शिवदत्त समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरी ईमानदारी के साथ निभाते रहे हैं। किन्तु कुरील साहब एक तरफ तो समाज को कोसते हैं कि समाज ने उन्हें कुछ न दिया। और खुद समाज के प्रति उनके क्या दायित्व है वह भूल जाते हैं। जिसका खामियाजा भी उन्हें भुगतना पड़ता है। उनके जैसे ही काम करने वाला कोई भ्रष्ट पदाधिकारी अपनी लापरवाही से कुरील जी का नुक्सान कर देता है। धन के लालच में किये गये कार्य का खामियाजा हमें खुद ही भुगतना पड़ सकता है। कुरील जी के माध्यम से इस कथा में यही बताने का प्रयास किया गया है। इस में जात-पात के नाम पर होनेवाली लापरवाही और भ्रष्टाचार का चित्रण किया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'दलित ब्राहमण' कहानी की मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।
2. 'दलित ब्राहमण' कहानी के तीन पत्रों के संवादों को अपने शब्दों में लिखिए।
3. सत्यप्रकाश के बारे में टिप्पणी लिखिए।
4. जातिवाद के आड़ में होनेवाला भ्रष्ट कर्म पर विचार कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार लिम्बाले- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार दुबे-आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल भारती- दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 03

दलित कविताएँ

Unit 1: 'सच यही है', 'झाड़ू और कलम' - मोहनदास नैमिशराय

Unit 2: 'गूँगा नहीं था मैं', ठाकुर का कुआँ - जयप्रकाश कर्दम

Unit 3: 'लड़की ने डरना छोड़ दिया' - श्योराजसिंह बेचैन

Unit 4: 'बस्स बहुत हो चुका' - ओमप्रकाश वाल्मीकि

SGOU

इकाई 1

'सच यही है', 'झाड़ू और कलम' - मोहनदास नैमिशराय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी दलित कविता की पृष्ठभूमि समझता है
- हिन्दी के प्रमुख दलित कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- प्रमुख दलित कविता से अवगत होता है
- 'सच यही है' कविता के बारे में जानता है
- 'झाड़ू और कलम' कविता के बारे में जानता है

Background / पृष्ठभूमि

दलित साहित्य का उत्स या स्रोत बौद्ध साहित्य से माना जाता है। यह परम्परा सिद्ध और नाथ कवियों से होती हुई, निर्गुण कवियों तक आयी है। हिन्दी दलित कविता मध्यकाल के निर्गुण सन्त कवि रैदास और कबीर से होती हुई 'हीरा डोम' और 'अछूतानन्द' तक आयी है। इसके बीच लगभग 500 वर्षों का अन्तराल है। निश्चित रूप से इस बीच भी कुछ कविता हुई होंगी , जिन्होंने वर्चस्ववादी हिन्दू धर्म और संस्कृति के विरुद्ध आवाज उठायी है। सन् 1914 के बाद भी दलित कविता कभी लोकगीत के रूप में, तो कभी रैदास और कभी अम्बेडकर के जीवन और विचारों के काव्यात्मक आख्यानों के रूप में निरन्तर विकसित होती रही। लेकिन साठ के दशक में मराठी के दलित कवियों ने अपनी विद्रोही चेतना से सम्पूर्ण मराठी साहित्य की नींव हिला दी। इसी कारण उसे देश में ही नहीं, विदेश में भी मान्यता प्राप्त हुई। उस से प्रेरणा लेकर हिन्दी के दलित कवियों ने भी कविता का सृजन किया, जो अब प्रतिष्ठित होकर स्थापित हो गयीं है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

बाकायदा, अम्बेडकर की विचारधारा, दलित चेतना, पौराणिक मिथक, पुर्नव्याख्या, साँप्रदायिक हिंसा, संवेदनहीनता

Discussion / चर्चा

3.1.1 दलित कविता

- हिन्दी दलित कविता की स्थापना में कुछ काव्य संकलनों का महत्त्वपूर्ण योगदान है

हिन्दी दलित कविता की स्थापना में कुछ काव्य संकलनों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनमें 'पीड़ा जो चीख उठी' तथा 'दर्द के दस्तावेज' के नाम उल्लेखनीय है। 'पीड़ा जो चीख उठी' में पच्चीस दलित कवियों की दो-दो कविताएँ संकलित हैं। हालाँकि यह प्रथम दलित कविता संकलन है, लेकिन इसका कोई सम्पादक नहीं है। इसकी चर्चा उतनी नहीं हो पाई, जितनी होनी चाहिए थी। डॉ. एन. सिंह द्वारा सम्पादित काव्य संकलन 'दर्द के दस्तावेज' को ही हिन्दी दलित कविता के पहले और प्रतिनिधि संकलन के रूप में मान्यता मिली। श्री राधेश्याम तिवारी ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि- अनेक कवियों की कविताओं के इस संकलन का सम्पादन डॉ. एन. सिंह ने किया है। यह संग्रह दलित साहित्य के चयन की दिशा में एक स्मरणीय प्रयास है। संग्रह के कवि डॉ. प्रेमशंकर, डॉ. सुखबीर सिंह, डॉ. चन्द्र कुमार वरठे, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, डॉ. रामशिरोमणि 'होरिल' डॉ. दयानन्द बटोही, डॉ. एन. सिंह, डॉ. भूपसिंह और रघुनाथ प्यास आदि प्रमुख हैं।' इस काव्य संकलन को कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के एम.ए. हिन्दी, उत्तरार्द्ध के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है तथा इसका मराठी में अनुवाद डॉ. पद्मजा घोरपड़े ने किया है। डॉ. एन. सिंह ने ही एक और काव्य संकलन चेतना के स्वर सम्पादित किया, जिसमें हिन्दी दलित कविता के बाहर प्रतिनिधि कवियों की कविताएँ संकलित हैं।

- हिन्दी में दलित कविता की बाकायदा शुरुआत बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में हुई

हिन्दी में दलित कविता की बाकायदा शुरुआत बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में हुई। इसकी प्रेरणा डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा तो थी ही, महात्मा ज्योतिबा फुले का संघर्ष, मार्क्स की क्रांति दृष्टि तथा मराठी का दलित साहित्य भी रहा। इसके प्रारंभिक दौर में हम श्री माताप्रसाद और डॉ. रामशिरोमणि 'होरिल' जैसे कवियों के सृजन को देख सकते हैं। डॉ. होरिल ने अपने काव्य में प्रेमानुभूतियों को भी अभिव्यक्त किया है। उनके काव्य संग्रहों में 'करील के काँटे' और 'जीवन राग' प्रमुख हैं। श्री माताप्रसाद ने यूँ तो 'भीम शतक', 'एकलव्य' खण्डकाव्य और 'दिग्विजयी रावण' प्रबन्ध काव्य भी लिखे, लेकिन उसकी पहचान 'राजनीति की अर्द्ध सतसई' से हुई है। इसमें उन्होंने 350 दोहों में दलित, नारी और राजनीति को अपने दोहों का विषय बनाया है। इनके ये दोहे बहुत प्रभावकारी हैं तथा उनकी साधना और अनुभव को रेखांकित करते हैं। उनकी पीड़ा को महसूस करने के लिए यह एक ही दोहा पर्याप्त है-

'मनुष न पैदा होत यहाँ, जाति पेट से आय। कंटक बनि वह गडि रही, 'मित्र' कष्ट है पाय।

SGOU

श्री लालचन्द्र राही का नाम हिन्दी दलित कविता में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने सामाजिक स्थिति के कष्ट को लगभग सबसे अधिक भोगा है। वे मजदूरी करते हुए पढ़े और फिर अध्यापक बने, अतः उनके अनुभवों का फलक बहुत वड़ा है। सम्भवतः इसीलिए वे लिख पाए कि- 'मेरी स्थिति धोबी के कुत्ते से कम नहीं थी। मेरा नाम न स्कूल में था न कारखाने में। मेरे भाग्य में मूंगफली बेचना या कपबशी धोना ही था।' उनकी कविताओं का संग्रह 'मूक नहीं मेरा कविताएँ' सचमुच हमें दहला देने वाले अनुभवों से गुजरने को विवश करता है। उनकी कविताएँ हमारे समय का सच बयान करती हैं। उनकी एक कविता 'स्वतन्त्रता के बाद' का यह अंश पढने योग्य है- 'पन्द्रह अगस्त के दिन फूल चढ़ाने पर डण्डे मिले पाण्डे देवपाल के अछूत को / उसी की बेटी के साथ हुआ / छब्बीस जनवरी की रात को बलात्कार हुआ और मन्दिर अपवित्रा नहीं स्वतन्त्र भारत के एक छोटे से गाँव

▶ श्री लालचन्द्र राही का नाम हिन्दी दलित कविता में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है

डॉ. पुस्पोत्तम 'सत्यप्रेमी' हिन्दी दलित कविता के एक अन्य महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। डॉ. सत्यप्रेमी के अब तक तीन कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं-द्वार पर दस्तक', 'सवालों के सूरज' और 'मूक माटी की मुखरता'। इनकी कविता भी मोहभंग की कविता है। अपनी 'आँसू ही आँसू' कविता में वे लिखते हैं- 'आँसू ही आँसू हैं। मेरे भारत नम हुई है आँसू से हर आदमी की आँख / और स्वतन्त्रता, स्वराज्य व समता का सपना संजोती भारतमाता / संशय की पीड़ा भोग रही है।

▶ डॉ.पुस्पोत्तम'सत्यप्रेमी' हिन्दी दलित कविता के एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं

डॉ. सोहनपाल 'सुमनाक्षर' भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली के अध्यक्ष हैं। हिन्दी दलित साहित्य के प्रचार-प्रसार में इनकी भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रही है। अब तक इनके दो काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं- 'अंधा समाज बहरे लोग' तया 'सिन्धु घाटी बोल उठ', लेकिन इनकी कविता राजनीतिक बयान होने से नहीं बच सकी है। इसका एक उदाहरण उनकी कविता 'फूलन हमारा आदर्श हैं' से देखिये- 'फूलन / दलित शोषित समाज का प्रतीक है करो / तोहमत धरो वह हमारी ही नहीं है। चाहे उसे कितना भी बदनाम सारी नारी जाति की शौर्यगावा

▶ हिन्दी दलित साहित्य के प्रचार-प्रसार में. डॉ. सोहनपाल 'सुमनाक्षर' की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रही है

श्री मोहनदास नैमिशराय ऐसे दलित पत्रकार और कवि हैं, जिन्हें हिन्दी जगत में पर्याप्त सम्मान मिला है। देशभर के स्तरीय पत्र एवं पत्रिकाओं में उनकी रचनायें छपती रहती है। उन्होंने लगभग जिद्द पूर्वक स्वतन्त्र लेखन को अपनाया। 'लोकायन' और 'क्रान्तिधर्मी' पत्रिकाओं के वे सह सम्पादक और बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाडमय के सम्पादक रहे हैं। उनकी आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे (दोनों भाग) किसी हिन्दी दलित लेखक की पहली आत्मकथा मानी जाती है। अब तक उनका एक कविता संग्रह 'सफदर का बयान' प्रकाशित हुआ है। अपनी एक प्रसिद्ध कविता 'फर्क तय करना है' में उन्होंने दलित जीवन की एक महत्त्वपूर्ण समस्या को उठाया है कि जाति के कारण ही अपमान सूचक शब्द, जो कल तक गाँव और कस्वों में ही कहे जाते थे, अब महानगरों में भी क्यों कहे जाने लगे हैं-

▶ देशभर के स्तरीय पत्र एवं पत्रिकाओं में उनकी रचनायें छपती रहती है

एक ही मनुष्य जाति के होने पर भी जातिगत सम्बाधनों के आधार पर कसैले से लगने वाले स्वर कल तक जो गाँव और कस्बों के परिवेश में सुनाई देते थे। आज उजालों के प्रतीक महानगरों में भी वही जातिगत सम्वोधनों के आधार पर कसैले से लगने वाले स्वर सुनाई पड़ने लगे हैं।

डॉ. दयानन्द 'बटोही' पहले 'नयी लहर' और अब 'साहित्य यात्रा' अनियतकालीन पत्रिका के सम्पादक हैं। अपने दलित सरोकारों के कारण प्रताड़ित किए गये डॉ. दयानन्द 'बटोही' ने दलित कविता में अपनी अलग पहचान बनाई है। उनका काव्य संग्रह 'यातना की आँखें' नवगीत विधा में सामाजिक विसंगतियों को अभिव्यक्ति देता है, लेकिन पाठकों का ध्यान इनकी अन्य कविताओं ने ही खींचा है। उनकी एक प्रसिद्ध कविता हैं 'द्रोणाचार्य सुनें। उनकी परम्पराएँ सुनें इस कविता में उन्होंने विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक में दलित छात्रों के साथ हो रहे अन्याय को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है- 'मैं सिर्फ / द्रोण तुम्हारे रास्तों पर चले गुरु से कहता हूँ। अब दान में अंगूठा माँगने का साहस कोई नहीं करता प्रैक्टिकल में फेल करता है प्रथम अगर आता हूँ तो छठा या सातवाँ स्थान देता है। जाति गंध टाइटल में खोजता है / यह आत्मा और मन को बेमेल करता है।

▶ डॉ. दयानन्द 'बटोही' ने दलित कविता में अपनी अलग पहचान बनाई है

डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिन्दी दलित कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनके दिनों काव्य संग्रह 'गूँगा नहीं था में' तथा 'तिनका-तिनका आग' हिन्दी क्षेत्रों में काफी चर्चित रहे हैं। उनकी कविता की एक बानगी यहाँ प्रस्तुत है। वह अपनी 'दमन की दहलीज पर' कविता में लिखते हैं- 'तमाम विरोधों और दबावों के बावजूद जाति के जंगल का यह जीव/ अपनी मुक्ति के लिए अड़ा / अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए लड़ा है और आज /तमाम हौसलों के साथ हाथों में खंजर लिए वह दमन की दहलीज पर खड़ा है । और ललकार रहा है चीखकर बाहर निकल हरामजादे तेरी ऐसी की तैसी।

▶ डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिन्दी दलित कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं

यहाँ कुछ अन्य कवियों के काव्य संग्रहों का उल्लेख करना भी समीचीन रहेगा।

'शोपितनामा'- डॉ. मनोज सोनकर, 'तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती'- कंवल भारती, 'प्रयास' सूरजपाल चौहान, 'व्यवस्था के विषधर' डॉ. कुसुम वियोगी, 'उत्पीड़न की यात्रा' लक्ष्मी नारायण सुधाकर, 'कलम को दर्द कहने दो'- कर्मशील भारती, 'हार नहीं मानूँगा' ईश कुमार गंगनिया, 'सुनो ब्रह्मण'- मलखान सिंह, 'आक्रोश' डॉ. सी. बी. भारती आदि। इनके अतिरिक्त लगभग डेढ़ दर्जन कवि दलित कविता के क्षेत्र में संघर्ष कर रहे हैं। इन कवियों में सर्वश्री रत्नकुमार सांभरिया, डॉ. सुरेश पंचम, हरिकिशन सन्तोषी, आचार्य गुरु प्रसाद, रजनी तिलक, डॉ. हेमलता माहेश्वर, रघुनाथ प्यासा आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

▶ कुछ अन्य कवियों के काव्य संग्रहों का उल्लेख

हिन्दी दलित कविता के पहचान के स्तर पर जिन कवियों ने स्थापित किया है, उनमें डॉ. सुखबीर सिंह, डॉ. प्रेमशंकर, डॉ. एन. सिंह, डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन तथा

▶ कविताओं में अनुभूति की गहनता और शिल्प की प्रौढ़ता

SGOU

श्री ओमप्रकाश वाल्मीकि के नाम लिए जा सकते हैं। इनकी कविताओं में अनुभूति की गहनता और शिल्प की प्रौढ़ता तो देखते को मिलती ही है, साथ ही अभिव्यक्त अनुभवों की प्रामाणिकता भी इनकी कविताओं का प्राण है, जिसके कारण ये कविताएँ बोधक तो हैं ही, बेधक भी हैं।

▶ डॉ. सुखवीर सिंह हिन्दी के प्रतिष्ठित समीक्षक और कवि हैं

डॉ. सुखवीर सिंह हिन्दी के प्रतिष्ठित समीक्षक और कवि रहे हैं। कई आलोचनात्मक पुस्तकों के साथ-साथ उन्होंने कुछ काव्य संकलनों का सम्पादन भी किया। उनके तीन काव्य संग्रह 'अनन्तर', 'बयान बाहर' और 'सूर्याश' प्रकाशित हुए हैं। उनका 'बयान बाहर' काव्य संग्रह अपनी संवेदना और शिल्प के कारण बेहद चर्चित हुआ। यह हिन्दी की लम्बी कविताओं में अपना विशेष स्थान एवं महत्त्व रखता है। एक लम्बी कविता में उन्होंने आत्मकथात्मक शैली में किसी दलित के आगे बढ़ने की आकांक्षा में लहूलुहान होने की प्रक्रिया को रेखांकित किया है।

'उस दिन मैंने / दूसरों के आगे बढ़ने के लिए रास्ता छोड़ने की बन गयी लीक से / अलग हटकर अपना पाव जमा खुद को आगे बढ़ाना चाहा। तभी मैंने /आग को चिमट की नोंक पर नहीं अपनी हथेली पर सुलगते पाया।

▶ डॉ. प्रेमशंकर लम्बे समय से दलित कविता की रचना यात्रा से जुड़े हैं

डॉ. प्रेमशंकर लम्बे समय से दलित कविता की रचना यात्रा से जुड़े हैं। वह एक अनियतकालीन पत्रिका 'अम्बेडकरीय कविता' भी निकालते हैं। वे इस कविता को 'दलित कविता' के स्थान पर 'अम्बेडकरीय कविता' कहना उचित समझते हैं। अब तक उनके कुछ समीक्षात्मक ग्रन्थों के अतिरिक्त दो काव्य संग्रह 'नयी गंध' तथा 'कविता : रोटी की भूख तक' प्रकाशित हुए हैं। अपनी बात को उत्तेजना के साथ कहना उनकी कविताओं की विशेषता है। उनकी एक कविता 'वे सभ्य हैं' में यह प्रहारात्मक क्षमता देखते ही बनती है- 'वे सभ्य हैं/ आदमी से हाथ मिलाने के बाद हाथ धोते हैं माजते हैं और फिर / मुस्कुरा कर कहते हैं । हम एक हैं। फिर हाथ धोते हैं । ताकि / हाथ में आदमी की जाति न छप गयी हो।

डॉ. एन.सिंह, समीक्षक और कवि हैं। हिन्दी दलित साहित्य की स्थापना में ये अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। डॉ. एन. सिंह की मूलतः आक्रोश की कविता हैं। व्यवस्था पर चोट इनकी कविताओं का केन्द्रीय भाव है तथा सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय उनका लक्ष्य है। अब तक इनका एक काव्य संग्रह 'सतह से उठते हुए' प्रकाशित हुआ है। सीधी सपाट भाषा में सामाजिक विसंगतियों पर चोट करती इनकी एक कविता यहाँ प्रस्तुत है-

▶ हिन्दी दलित साहित्य की स्थापना में डॉ. एन.सिंह अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं

'सतह से उठते हुए मैंने जाना कि इस बस्ती पर किए जा रहे । श्रम में जितना दिल्ला मेरा है। इस धरती के हवा, पानी और इससे उत्पन होने वाले अन्न और धन में भी है। अब मैं समझ गया है। उस अंक गणित को जिसके कारण मेरे चमकण / मिट्टी में मिलकर दूसरों की झोली को भर देते हैं मोतियों से और मेरी इरोली में होती है। भूख, बेबसी और लाचारी इसलिए अब मेरे हाथ की कुदाल परती पर कोई नींव खोदने से

पहले कब्र खोदेगी उस व्यवस्था की जिसके संविधान में लिखा है। तेरा अधिकार सिर्फ कर्म में है। श्रम में है। फल पर तेरा अधिकार नहीं।

▶ डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' हिन्दी दलित कविता के अपेक्षाकृत युवा कवि हैं

डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' हिन्दी दलित कविता के अपेक्षाकृत युवा कवि हैं। उनके अब तक दो काव्य संग्रह 'नयी फसल' और 'क्रौंच हूँ मैं' प्रकाशित हुए हैं। इनकी एक कविता यहाँ उद्धृत है-'इन आँखों के सपने तो टूट गये लेकिन जिन आँखों में जन्मे ही नहीं / उनकी सोचो / तुमने तो कह ली/ अपनी और पराई भी अब खोल सको तो बेजुबान का मुँह खोलो।

▶ धर्म,दर्शन और पौराणिक मिथकों की पुनर्व्याख्या उनकी कविताओं की मुख्य विशेषता है

कवि और कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि अब किसी परिचय के मोहजाज नहीं हैं। हिन्दी दलित कविता के इस प्रतिष्ठित कवि के जब तक दो काव्य संग्रह 'सदियों का सन्ताप' और 'बस्स! बहुत हो चुका' प्रकाशित हुए हैं। धर्म, दर्शन और पौराणिक मिथकों की पुनर्व्याख्या उनकी कविताओं की मुख्य विशेषता है। उनकी एक कविता 'शायद आप जानते हों' का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है- 'तुम्हारे रचे शब्द तुम्हेंडसी साँप बनकर गंगा किनारे कोई वृक्ष ढूँड लो/कर लो भागवत का पाठ / आत्मतुष्टि के लिए कहीं अकाल मृत्यु के बाद भयभीत आत्म /भटकते-भटकते / किसी कुत्ते या सुअर की मृत देह में प्रवेश न कर जाए या फिर पुनर्जन्म की लालसा में / किसी डोम या चूहड़े के घर पैदा न हो जाए / चूड़े या डोम की आत्मा / ब्राह्मा का अंश क्यों नहीं है। मैं नहीं जानता शायद आप जानते हों।

▶ दलित कविता विकसित हो रही है, लेकिन भावों की एकरूपता उसकी सीमा है

हिन्दी दलित कविता की नित नयी संभावनाएँ खुल रही हैं, लेकिन उसकी कुछ सीमाएँ स्पष्ट भी होती जा रही हैं। जैसे प्रत्येक दलित कवि लगभग एक ही प्रकार की संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दे रहा है। इस पुनरावृत्ति का कारण सम्भवतः सभी कवियों का एक ही प्रकार की स्थितियों और अनुभवों से गुजरना रहा है। सच मायने में यह कविता अपमानित पीढ़ियों की कोख से जन्मी है। बावजूद इसके दलित कवियों की कविताएँ आत्माख्यान से निकलकर अपने शिल्प को निखारने का प्रयास कर रही हैं। वे अब विकास की प्रारम्भिक सीढ़ियाँ पार कर चुकी हैं।

3.1.2 सच यही है

सच यही है
मंदिर में आरती गाते हुए भी
नज़दीक की
मस्जिद तोड़ने की लालसा
हमारे भीतर जागती रहती है
और मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए भी
पास के मंदिर के बारे में भी
नागफ़नी की तरह
वैसी ही हलचल उगती है।

बात एक ही है
पहले सांप्रदायिक दंगे कराओ
फिर शांति-मार्च के ढेर सारे आयोजन

सच यही है
क़ब्रें पर फूल उगाने जैसा।
सच की कल्पना
कितनी कड़वी होती है

और वीभत्स भी
एक सच
जो पहले से ही तैयार होता है।
दूसरा सच
बाद में बनाया जाता है।
जैसे पहले क़ब्र बनाना-
फिर उस पर फूल उगाना

सच यही है।
घर के एक सुनसान कोने में
लुटी-पिटी-सी
कच्ची ज़मीन पर पसरी
एक अदद औरत।
गुमसुम-सी, अपने आपमें खोई हुई
घर से गए
अपने आदमी के लौटने की
मीठी कल्पना सीने से लगाए
दरवाज़े की ओर आँखें बिछाए
पिछले एक दिन और एक रात से
इंतज़ार कर रही है।
सच यही है।

बाहर
पुलिस की पदचापों से धरती गूँजती है
और भीतर उसका दिल दहलता है
पुलिस के बूट, ज़मीन को नहीं
उसकी छाती को रौंदते हैं जैसे।
एक सच
जो परसों रात उसने देखा था।
दूसरा सच
वह देखना नहीं चाहती
घर से गया हुआ उसका मर्द
अब कभी वापस लौटकर नहीं आएगा
सच यही है।
घर से गए
उसके आदमी की आँखें
किसी रामपुरिया चाक़ू से कटी-फटी
किसी कूड़े के ढेर के नज़दीक पड़ी होंगी
या उसका झुलसा चेहरा
और जला हुआ शरीर
किसी नहर-नदी-नाले के पास पड़ा होगा

सच यही है।
पुलिस लाख कोशिश करे भी
तो उस आदमी के हत्यारे को
पकड़ने में सफल नहीं होगी
क्योंकि हमारे भीतर
कहीं न कहीं
किसी न किसी रूप में
वह हत्यारा बैठा है

सच यही है।
हम आदमी भी हैं
और हत्यारे भी।
पहले लाशें बिछाते हैं
फिर राजनीति करते हैं
क्योंकि लाशें बिछाना
और लाशों की राजनीति करना
दोनों ही हमारी नियति बन चुकी है।

सच यही है।
घर-घर जाकर
कोई रोटी नहीं बाँटता
ढेर-सारे त्रिशूल, चाक़ू, कट्टे, दस्ती बम
बिन माँगे मिल जाते हैं।
जिन्हें हाथों में
नेज़ें-भालों की तरह सँभाले
हमारे भीतर हलाकू-चंगेज़ी उभर कर
सड़कों पर उतर आते हैं
हमारी संस्कृति-परंपरा-रिश्ते
पीछे छूट जाते हैं।
आगे होती है

SGOU

एक सर्पाकार आग
जो पहले आदमी को डँसती है
फिर मकान-दुकान जलाती है
और गाँव-क़स्बों के
हरे-भरे खेत-खलिहानों को
राख बनाती हुई
शहरों को भयावह जंगल में
बदल देती है।

सच यही है।
उसी राख को रौंदते हुए
क़ौम की खिदमत करने
अपने-अपने परचम लिए
हम निकल पड़ते हैं
उजड़ी बस्तियों को आबाद करने
बिल्कुल क़ब्रें पर फूल उगाने जैसा

सच यही है।
घर-घर में सूनी आँखों से
एक-एक औरत
घर से बाहर गए
अपने-अपने आदमी के
लौटने का इंतज़ार करती है,

सच यही है
वह क़तरा-क़तरा होकर
जीती है
और क़तरा-क़तरा होकर
मरती है।

- कविता सांप्रदायिक नफ़रत, राजनीतिक पाखंड और आम जन की पीड़ा को तीव्र यथार्थ के साथ उजागर करती है

कविता 'सच यही है' एक अत्यंत मार्मिक, कटु और यथार्थवादी चित्रण है आज के भारत में व्याप्त सांप्रदायिक हिंसा, राजनीतिक छल, और आम इंसान की पीड़ा का। यह कविता दर्शाती है कि धर्म के नाम पर लोगों के दिलों में नफ़रतें कितनी गहरी बसी हुई हैं। मंदिर और मस्जिद जैसे धार्मिक स्थलों में पूजा-पाठ या नमाज़ करते हुए भी, लोगों के भीतर दूसरे धर्म को मिटा देने की चाह बनी रहती है। कवि इस पाखंड को उजागर करते हुए बताता है कि पहले दंगे कराए जाते हैं और फिर उनके बाद शांति-मार्च की औपचारिकता निभाई जाती है - मानो यह कोई तयशुदा नाटक हो।

- कवि दिखाता है कि असली हत्यारा हमारे ही भीतर छिपा है - हम सभी में

कविता का सबसे हृदयविदारक दृश्य वह औरत है जो अपने घर में अकेली बैठी, अपने ग़ायब पति के लौटने की प्रतीक्षा कर रही है। परंतु सच यह है कि उसका पति अब शायद ही लौटे। वह दंगे में मारा जा चुका है, उसकी लाश या तो किसी गटर, नदी या कूड़े के ढेर के पास सड़ रही है। कवि कहता है कि पुलिस भी उसे मारने वाले को कभी पकड़ नहीं पाएगी, क्योंकि असली हत्यारा हमारे समाज के भीतर छुपा है - हम सब में। कविता इस कठोर सच्चाई की ओर इशारा करती है कि हम एक ही समय में आदमी भी हैं और हत्यारे भी।

- 'सच यही है' कविता सांप्रदायिक हिंसा, राजनीतिक पाखंड और इंसानियत के पतन की सच्चाई को उजागर करती है

दंगे, राजनीति, और हथियारों की आसानी से उपलब्धता से कवि यह दिखाता है कि इंसान की हैवानियत किस हद तक जा चुकी है। धर्म और परंपरा का नाम लेकर लोग इंसानियत को जला रहे हैं, और फिर उन्हीं जली हुई बस्तियों में 'सेवा' के नाम पर झूठा परचम लहरा रहे हैं। और अंत में, सबसे स्थायी पीड़ा उन स्त्रियों की है, जो अपने पुरुषों के लौटने की प्रतीक्षा में दिन-रात जलती रहती हैं - धीरे-धीरे मरती हुई।

SGOU

'सच यही ह' एक तीव्र सामाजिक, सांप्रदायिक और राजनीतिक आलोचना है जो किसी भी पाठक को अंदर को झकझोर देती है। यह कविता न केवल वर्तमान समाज का क्रूर चित्रण करती है, बल्कि यह हमारे भीतर छुपी हिंसा, घृणा और संवेदनहीनता की पोल खोलती है। भाषा सीधी और बेबाक है, कहीं-कहीं पर बहुत ही कठोर, लेकिन यह कठोरता ज़रूरी है क्योंकि कवि का उद्देश्य पाठक केन्द्रित और दिमाग को झकझोरना है, जगाना है।

कविता का सबसे सशक्त पहलू इसका यथार्थ है - यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि हमारे आस-पास की सच्चाई है। सांप्रदायिकता, लाशों पर राजनीति, और औरतों की चुप, अंतहीन पीड़ा - ये सब कुछ इतनी सच्चाई से सामने आते हैं कि यह कविता किसी अख़बार की हेडलाइन नहीं बल्कि एक जीवित दस्तावेज़ बन जाती है। 'क़ब्रें पर फूल उगाना' जैसी पंक्तियाँ समाज की दिखावटी हमदर्दी की पोल खोलती हैं। कविता की कमजोरी सिर्फ उन्हीं के लिए है जो कड़वे सच को झूठी दिलासा से ढंकना चाहते हैं। यह कविता मीठी भाषा, सांत्वना या धार्मिक शांति की बात नहीं करती - यह उस सड़े हुए ज़मीर को उजागर करती है जो हमारे भीतर बैठा हत्यारा है। और यही इसकी सबसे बड़ी ताकत है। कुल मिलाकर, 'सच यही है' एक क्रांतिकारी कविता है जो हमें आईना दिखाती है - एक ऐसा आईना जिसे देखकर शायद हममें से कई लोग असहज हो जाएँ, लेकिन जिससे मुँह मोड़ना भी अब मुमकिन नहीं।

▶ समाज की सांप्रदायिकता, दिखावटी हमदर्दी और अंदर छिपी हिंसा को बेनकाब करती है

3.1.3 झाड़ू और कलम

कल मेरे हाथ में झाड़ू था
आज क़लम
कल झाड़ू से मैं तुम्हारी गंदगी हटाता था
आज क़लम से
मैं तुम्हारे भीतर की गंदगी धोऊँगा
तुम वाचाल हो
मुझे मालूम है
तुम चतुर हो
मुझे एहसास है
तुम धूर्त और व्यभिचारी हो
मैं भुक्तभोगी हूँ
तुमने गंदगी फैलाने के लिए
वेद-पुराण-मनुस्मृति का सहारा लिया
कल उन्हें जलाने का
मुझे अधिकार न था
आज शब्दों की आँच से
मैं उन्हें जलाऊँगा
मुझे यह भी मालूम है
अकेले मनुस्मृति जलाने से
समाज की जड़ता पर कुछ होने वाला नहीं है
तुम्हारे भीतर की बेशर्म संस्कृति
के बीच पली-बढ़ी
ब्राह्मणी कंप्यूटराइज़्ड मेमोरी को
ध्वस्त करना होगा
तब तुम कदापि नहीं कह सकोगे
कि वेद की रचना ईश्वर ने की है
हाँ किसी भड़वे ने ज़रूर की होगी
हो सकता है वह भड़वा ही ईश्वर बन गया हो,
या ईश्वर भड़वा
तुम्हारी महान् संस्कृति के इतिहास में तो

व्यभिचार की अनगिनत घटनाएँ हैं
देवदासियों की दर्दनाक चीख़ें हैं
और तुम्हारे कामुक अट्टहास
अब तुम यह भी नहीं कह सकोगे
कि तुम ब्रह्म के मुख से
और हम उस साले ब्रह्म की टाँगों से पैदा हुए
जिसने अपने बेटी के साथ बलात्कार किया था
मुझे मालूम नहीं
तुम श्रेष्ठ ब्राह्मण हम पतित शूद्र
इस भ्रम से जल्द मुक्ति मिलेगी?
कल वेद-ग्रंथों का सहारा ले
तुमने मेरे हाथ में झाड़ू पकड़ाई थी
आज परिवर्तन के लिए
तुम्हें अपने हाथ में झाड़ू लेना ही होगा
वह दिन जल्द आएगा
चेतना का सूरज
उग चुका है।

कविता 'झाड़ू और क़लम' एक तीव्र और उग्र सामाजिक टिप्पणी है, जो भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, ब्रह्मणवाद और धार्मिक पाखंड पर सवाल उठाती है। यह कविता प्रतीकात्मक रूप से झाड़ू और क़लम जैसे दो अलग-अलग औज़ारों के माध्यम से एक दलित व्यक्ति की चेतना और संघर्ष को दर्शाती है। कल वह व्यक्ति झाड़ू से समाज की गंदगी (अर्थात जातिगत रूप से थोपे गए कार्य) साफ करता था, लेकिन आज उसके हाथ में क़लम है जिससे वह सामाजिक और मानसिक गंदगी को साफ करने का काम कर रहा है। कवि अपने अनुभवों के आधार पर यह बताता है कि किस प्रकार धार्मिक ग्रंथों - जैसे वेद, पुराण और मनुस्मृति - का इस्तेमाल करके समाज के उच्च वर्गों ने सदियों से दलितों का शोषण किया जा रहा है । अब वह इन्हीं ग्रंथों को 'शब्दों की आँच' से जलाने की बात करता है, क्योंकि अब उसके पास चेतना और शिक्षा का औज़ार है।

▶ जातिवाद और धार्मिक पाखंड पर तीखा प्रहार

कविता की भाषा बहुत तीखी, सीधी और उग्र है। इसमें भावनाओं की गहराई के साथ-साथ विद्रोह की लपट भी साफ नज़र आती है। कवि धार्मिक ग्रंथों और उनकी उत्पत्ति पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए कठोर शब्दों का इस्तेमाल करता है, जैसे 'भड़वा' और 'साले ब्रह्म', जो पारंपरिक साहित्यिक शिष्टाचार से अलग हैं, पर दलित साहित्य में यह भाषा पीड़ा की अभिव्यक्ति और सामाजिक प्रतिक्रिया का औज़ार बन जाती है। यह कविता केवल आक्रोश ही नहीं, बल्कि बदलाव की चेतावनी भी देती है। कवि यह साफ कहता है कि अकेले मनुस्मृति को जलाने से कुछ नहीं बदलेगा, बल्कि उस ब्राह्मणवादी सोच और सांस्कृतिक स्मृति को खत्म करना होगा जो सदियों से चली आ रही है।

▶ कविता की भाषा बहुत तीखी, सीधी और उग्र है

SGOU

- कविता अपनी सच्चाई और ईमानदारी से दलित आवाज़ को बुलंद करती है और सामाजिक बदलाव का संदेश देती है

इस कविता का सबसे बड़ा बल इसकी सच्चाई और ईमानदारी है। यह उस आवाज़ को बुलंद करती है जिसे ऐतिहासिक रूप से दबाया गया था । हालांकि इसकी उग्र भाषा और धार्मिक प्रतीकों पर आक्रामक आलोचना कुछ पाठकों को असहज कर सकती है, लेकिन यह दलित चेतना और सामाजिक न्याय की माँग को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। कुल मिलाकर, यह कविता एक सामाजिक दस्तावेज़ के रूप में सामने आती है जो केवल विरोध नहीं करती, बल्कि बदलाव की शुरुआत का संकेत भी देती है। यह दिखाती है कि अब दलितों के हाथ में झाड़ू के साथ-साथ क़लम भी है, और चेतना का सूरज अब उग चुका है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

दलित कविता भारतीय साहित्य की वह धारा है जो समाज के हाशिए पर पड़े दलित वर्ग की पीड़ा, संघर्ष और अस्मिता को स्वर देती है। यह कविता जातिवाद, ब्राह्मणवाद और सामाजिक अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध का माध्यम है। इसकी भाषा सीधी, तीखी और यथार्थपरक होती है। कविता 'सच यही है' सांप्रदायिक हिंसा, राजनीति और आम आदमी की पीड़ा का मार्मिक चित्रण है। यह दिखाती है कि कैसे धर्म के नाम पर नफ़रतें पनपती हैं, औरतें अपने मरे हुए पतियों की प्रतीक्षा करती हैं, और समाज में हिंसा व हथियार आसानी से फैलते हैं जबकि रोटी बाँटने वाला कोई नहीं होता। 'झाड़ू और क़लम' एक क्रांतिकारी दलित चेतना का दस्तावेज़ है। यह उन आवाज़ों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें सदियों तक दबायी गयी थी । कवि न केवल सामाजिक असमानता को उजागर करता है, बल्कि ज्ञान, शिक्षा और चेतना को परिवर्तन का माध्यम मानता है। हालांकि भाषा उग्र है और भावनात्मक भी, पर यह उस पीड़ा और संघर्ष की सच्चाई है जिसे दलित समाज ने झेला है। यह कविता हमें न केवल सोचने पर मजबूर करती है बल्कि यह भी दिखाती है कि साहित्य अब सिर्फ सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का औज़ार भी बन चुका है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी दलित कविता के बारे में टिप्पणी लिखिए।
2. कविता 'सच यही है' का संक्षिप्त सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
3. कविता में कवि ने समाज के किस यथार्थ को उजागर किया है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. कविता 'झाड़ू और क़लम' के भाव और विचार को स्पष्ट कीजिए ।
5. कविता में प्रयुक्त भाषा और शैली की विशेषताओं पर टिप्पणी कीजिए।
6. 'झाड़ू' और 'क़लम' प्रतीक के रूप में किन-किन सामाजिक अवधारणाओं को दर्शाते हैं? स्पष्ट कीजिए।
7. 'झाड़ू' और 'क़लम' कविता को दलित साहित्य की श्रेणी में क्यों रखा जा सकता है? कारण सहित समझाइए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाल - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश, वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र -11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल, भारती - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

'गूँगा नहीं था मैं', 'ठाकुर का कुआँ' - जयप्रकाश कर्दम

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'गूँगा नहीं था मैं' कविता के बारे में जानता है
- 'ठाकुर का कुआँ'कविता से परिचय प्राप्त करता है
- कविता की भाषा और शैली को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

'गूँगा नहीं था मैं' समकालीन दलित साहित्य की एक प्रभावशाली कविता है, जिसे प्रसिद्ध दलित साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम ने लिखा है। यह कविता एक दलित छात्र के अनुभवों के माध्यम से समाज में व्याप्त जातीय भेदभाव, सामाजिक असमानता और सवर्ण वर्चस्व की कठोर सच्चाई को उजागर करती है। कविता की मूल भावना यह है कि दलित समुदाय के लोग केवल इसलिए चुप रहते हैं क्योंकि उनका प्रतिरोध अक्सर और अधिक अन्याय को जन्म देता है। कवि स्वयं इस कविता में एक घटना का वर्णन करता है जब स्कूल में एक सवर्ण छात्र ने उसे अपमानित किया, लेकिन उसने विरोध नहीं किया, क्योंकि उसे डर था कि कहीं यह विरोध बड़े जातीय संघर्ष का कारण न बन जाए। यह कविता हमें यह सोचने पर विवश करती है कि आज़ादी और लोकतंत्र के बावजूद, समाज का एक बड़ा हिस्सा अब भी बराबरी और आत्मसम्मान के अधिकार से वंचित है। जयप्रकाश कर्दम ने बहुत ही सरल और प्रभावशाली भाषा में बताया है कि चुप्पी भी एक प्रकार का प्रतिरोध हो सकता है।

'ठाकुर का कुआँ' दलित साहित्य की एक अहम रचना है। लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वयं एक दलित परिवार से थे और उन्होंने अपने जीवन में भेदभाव और सामाजिक शोषण का कड़वा अनुभव किया था । इस कविता की पृष्ठभूमि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त जातीय वर्चस्व, संसाधनों पर सवर्णों का कब्जा, और दलितों की पीढ़ियों से चली आ रही आर्थिक-सामाजिक बेबसी है। यह कविता उस यथार्थ को आवाज़ देती है, जो अक्सर इतिहास और मुख्यधारा साहित्य में उपेक्षित रह गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आत्मसम्मान, आत्मानुभव, बेबसी, चुप्पी प्रतिरोध, आत्मानुभव, सामाजिक असमानता, आत्म सम्मान, प्रतीकात्मक रचना, सामाजिक अनयाय

Discussion / चर्चा

3.2.1 'गूँगा नहीं था मैं'

गूँगा नहीं था मैं
कि बोल नहीं सकता था
जब मेरे स्कूल के
मुझसे कई क्लास छोटे
बेढँगे से एक जाट के लड़के ने
मुझसे कहा था-
"अरे ओ मोरिया!
ज्यादे बिगड़े मत,
कमीज कू पेंट में दबा कै
मत चल।"
और मैंने चुपचाप अपनी क़मीज़
पैंट से बाहर निकाल ली थी
गूँगा नहीं था मैं
न अक्षम, अपाहिज या जड़ था
कि प्रतिवाद नहीं कर सकता था
उस लड़के के इस
अपमानजनक व्यवहार का
लेकिन,
अगर मैं बोल जाता
जातीय अहं का सिंहासन डोल जाता
सवर्ण छात्रों में
जंगल की आग की तरह
यह बात फैल जाती कि
'ढेढों के दिमाग़ चढ़ गया है,
मिसलगढ़ी का एक चमार का लड़का
क़ाज़ीपुरा के
एक जाट के छोरे सै
अड़ गया है।'
आपसी मतभेदों को भुलाकर
तुरत-फुरत, स्कूल के
सारे सवर्ण छात्र
गोलबंद हो जाते, और
खेल-अध्यापक से हॉकियाँ ले-लेकर
दलित छात्रों पर हमला बोल देते
इस हल्ले में
कई दलित छात्रों के हाथ-पैर टूटते,
कइयों के सिर फूट जाते
और फिर,
स्कूल-परिसर के अंदर
झगड़ा करने के जुर्म में
हम ही स्कूल से
'रस्टीकेट' कर दिए जाते।

जयप्रकाश कर्दम की कविता 'गूँगा नहीं था मैं' एक दलित छात्र के आत्मानुभव के माध्यम से जातीय भेदभाव और सामाजिक असमानता को उजागर करती है। यह कविता उस चुप्पी की व्यथा है जो विवशता से जन्मी है, न कि कमजोरी से। कवि बताता है कि वह गूंगा नहीं था, बोल सकता था, विरोध कर सकता था जब एक सवर्ण (जाट) छात्र ने उसे अपमानजनक लहजे में आदेश दिया कि वह कमीज़ को पैंट में दबाकर न चले। लेकिन उसने प्रतिवाद नहीं किया, क्योंकि उसे पता था कि उसका विरोध जातीय टकराव को जन्म देगा, जिसके गंभीर परिणाम दलित छात्रों को ही भुगतने पड़ेंगे उन्हें को ही स्कूल से निकाल दिया जाएगा, उन पर ही हिंसा की जाएगी। यह कविता दलित समाज की उस कठोर सच्चाई को दिखाती है जहाँ आत्मसम्मान की कीमत कभी-कभी चुप रहकर चुकानी पड़ती है। स्कूल जैसी जगह, जो समानता और ज्ञान का प्रतीक होनी चाहिए, वहाँ भी जातीय वर्चस्व और भेदभाव मौजूद है। कविता

▶ जातीय भेदभाव और दलितों की मजबूर चुप्पी को यथार्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है, जो संघर्ष की सूझ-बूझ और आत्मसम्मान की पहचान है

SGOU

की भाषा सरल, सजीव और यथार्थ से जुड़ी हुई है, जिसमें लोकभाषा का प्रभाव भी देखा जा सकता है। जयप्रकाश कर्दम इस कविता के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि दलितों की चुप्पी कमजोरी नहीं, बल्कि सोची-समझी रणनीति होती है, क्योंकि वे जानते हैं कि अन्याय के खिलाफ बोलना कभी-कभी और अधिक अन्याय को न्योता देना होता है। यह कविता दलित चेतना, आत्मसम्मान और सामाजिक संघर्ष की एक सशक्त अभिव्यक्ति है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है।

3.2.2 'ठाकुर का कुआँ'

चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का।
भूख रोटी की

रोटी बाजरे की
बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का।
बैल ठाकुर का

हल ठाकुर का
हल की मूठ पर हथेली अपनी
फ़सल ठाकुर की।
कुआँ ठाकुर का
पानी ठाकुर का
खेत-खलिहान ठाकुर के
गली-मुहल्ले ठाकुर के
फिर अपना क्या?
गाँव?
शहर?
देश?

'ठाकुर का कुआँ' कविता भारतीय ग्रामीण समाज में व्याप्त जातीय असमानता और सामाजिक शोषण की तीव्र अभिव्यक्ति है। कवि यह दिखाता है कि एक दलित व्यक्ति के पास चाहे श्रम हो, भूख हो, मेहनत करने की शक्ति हो लेकिन उसके पास न संसाधन हैं, न ज़मीन, न पानी, न स्वामित्व। कविता में हर वस्तु मिट्टी, तालाब, खेत, बैल, हल, कुआँ सब कुछ ठाकुर (सवर्ण ज़मींदार) का है। यहाँ तक कि दलित की मेहनत से उगाई गई फ़सल भी ठाकुर की होती है। केवल "हल की मूठ पर हथेली अपनी" है, यानी मेहनत दलित की है, पर फल ठाकुर का। अंत में कवि सवाल करता है कि जब मिट्टी,

▶ कविता ग्रामीण जातीय शोषण और दलितों के बिना अधिकार के जीवन को सवाल करती है

पानी, खेत, कुआँ, गली-मुहल्ले सब ठाकुर के हैं तो फिर "अपना क्या?" यह सवाल सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे दलित समुदाय के अस्तित्व का बन जाता है।

▶ जातिगत असमानता और दलितों के श्रम के शोषण को संक्षिप्त लेकिन गहन रूप में दर्शाती है

ओमप्रकाश वाल्मीकि की यह कविता एक अत्यंत प्रभावशाली प्रतीकात्मक रचना है, जो भारत के जाति आधारित सामाजिक ढांचे पर तीखा प्रहार करती है। कविता की विशेषता इसकी संक्षिप्तता और गहराई है। केवल कुछ पंक्तियों में कवि ने यह बता दिया कि दलितों के पास न संसाधन हैं, न अधिकार केवल श्रम और अभाव है। 'हल की मूठ पर हथेली अपनी' पंक्ति यह दर्शाती है कि मेहनत तो दलित करता है, लेकिन फल कोई और ले जाता है। कविता में बार-बार "ठाकुर का" दोहराया गया है, जिससे एक भयानक सामाजिक असमानता का एहसास होता है।

▶ सरल ग्राम्य भाषा में लिखी यह कविता दलितों की जमीन और अधिकारहीनता को उजागर करती है और उनकी अस्मिता पर सवाल उठाती है

भाषा अत्यंत सरल और ग्राम्य शैली की है, जिससे कविता यथार्थ के बहुत करीब है। यह कविता न केवल सामाजिक अन्याय की व्याख्या करती है, बल्कि सवाल उठाती है कि एक दलित का कोई हिस्सा क्या अपने देश में भी है? ओमप्रकाश वाल्मीकि ने इस कविता के माध्यम से दलित विमर्श को जनमानस के बीच बहुत सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया है। दलित को अपना कहने केलिए कुछ भी नही है। उसकी अस्मिता -पहचान न गॉव में, व शहर में न पूरे दिशामें है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

जयप्रकाश कर्दम की कविता 'गूँगा नहीं था मैं' और ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'ठाकुर का कुआँ' दोनों कविताएँ भारतीय समाज में व्याप्त जातीय भेदभाव और सामाजिक असमानता की तीव्र अभिव्यक्तियाँ हैं। 'गूँगा नहीं था मैं' एक दलित छात्र के अनुभव को दर्शाती है, जो स्कूल में अपमानित होता है लेकिन प्रतिरोध नहीं करता, क्योंकि उसे डर है कि उसका विरोध पूरे सवर्ण समाज को उसके खिलाफ खड़ा कर देगा और अंततः नुकसान उसी का होगा। यह कविता 'चुप्पी' को कमजोरी नहीं, बल्कि सामाजिक विवशता के रूप में प्रस्तुत करती है। दूसरी ओर, 'ठाकुर का कुआँ' कविता ग्रामीण जीवन की उस कठोर सच्चाई को उजागर करती है जहाँ दलित मेहनत करता है लेकिन उसके पास कुछ भी अपना नहीं होता न मिट्टी, न पानी, न खेत, न कुआँ। सभी संसाधनों पर ठाकुरों (सवर्णों) का अधिकार है, और दलित केवल भूख, प्यास और श्रम का स्वामी रह जाता है। दोनों कविताओं में दलित चेतना, अधिकारहीनता और शोषण के खिलाफ एक गहरी वेदना और प्रतिरोध की भावना है। इनकी भाषा सरल, स्पष्ट और सशक्त है, जो पाठक को सीधा प्रभावित करती है । कुल मिलाकर, ये रचनाएँ केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज़ हैं जो हाशिए पर खड़े वर्ग की पीड़ा, संघर्ष और अस्मिता की मार्मिक तस्वीर पेश करती हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'गूँगा नहीं था मैं' कविता के माध्यम से जयप्रकाश कर्दम किस सामाजिक सच्चाई को उजागर करते हैं?
2. 'गूँगा नहीं था मैं' कविता में वर्णित घटना से आप दलित समाज की स्थिति के बारे में क्या समझते हैं? विस्तार से उत्तर दें।
3. 'ठाकुर का कुआँ' कविता किस सामाजिक यथार्थ को उजागर करती है? विस्तार से समझाइए।
4. ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'ठाकुर का कुआँ' कविता के माध्यम से समाज के किस पक्ष पर प्रश्न उठाया है? अपने विचार लिखिए।
5. "'गूँगा नहीं था मैं' कविता की 'चुप्पी' दलित की कमजोरी नहीं, उसकी मजबूरी है "- आलेचना कीजिए।
6. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में 'अस्मिता की पहचान पर विचार कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश, वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल, भारती - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे
6. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

लड़की ने डरना छोड़ दिया - श्योराजसिंह बेचैन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- नारी सशक्तीकरण के महत्व को समझता है
- कवि श्योराजसिंह बेचैन के विचारों से अवगत होता है
- श्योराजसिंह बेचैन की रचनाओं से परिचित होता है
- कविता से प्रेरणा लेकर खुलकर बोलने और सोचने की आदत अपनाता है

Background / पृष्ठभूमि

'लड़की ने डरना छोड़ दिया' कविता श्योराजसिंह बेचैन द्वारा रचित है, जो दलित और नारी विमर्श के समकालीन कवि हैं। इस कविता का संदर्भ भारतीय समाज की उस यथार्थ से है, जहाँ लड़कियाँ परंपरागत सामाजिक और सांस्कृतिक बंधनों, पितृसत्तात्मक मानसिकता, और जातिगत भेदभाव के कारण अक्सर दबा दी जाती हैं। परन्तु समय के साथ शिक्षा और जागरूकता ने महिलाओं के भीतर नई चेतना का संचार किया है। यह कविता इसी परिवर्तन और नई सोच की अभिव्यक्ति है, जहाँ लड़की अब निडर होकर अपनी आवाज़ उठाती है, सामाजिक बंदिशों को चुनौती देती है, और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए तैयार होती है। कविता उस नारी शक्ति का जश्न है जो डर को छोड़कर अपनी पहचान, स्वतंत्रता और सम्मान के लिए आगे बढ़ती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आत्मनिर्भरता, पितृसत्तात्मक समाज, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तन, वातावरण, प्रभावशाली भाषा, जल्दबाजी

Discussion / चर्चा

3.3.1 श्यौराज सिंह बेचैन

5 जनवरी 1960 को उत्तर प्रदेश के बदायूँ ज़िले के नंदरौली गाँव में जन्मे श्यौराज सिंह बेचैन के पिता चर्मकार का काम किया करते थे। अपने परिवेश, अपने वातावरण

और अपने अनुभव से उन्होंने बचपन में ही कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था। दिल्ली आने के बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई की। दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर श्यौराज सिंह बेचैन कहानियाँ और आत्मकथा लेखन भी किया है। उन्होंने दो दर्जन से अधिक किताबें लिखी हैं। 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', 'चमार की चाय', 'क्रौंच हूँ मैं', 'नई फसल', 'सामाजिक न्याय और दलित साहित्य' उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। लेखन के साथ-साथ उन्होंने राजेंद्र यादव के साथ 'हंस' के प्रथम दलित विशेषांक का संपादन भी किया है।

▶ उनकी प्रमुख रचनाएँ दलित अनुभवों पर आधारित हैं

3.3.2 रचनाएँ

'मेरा बचपन मेरे कन्धों पर'(आत्मकथा); चमार की चाय, क्रौंच हूँ मैं, नयी फसल (कविता संग्रह); सामाजिक न्याय और दलित साहित्य, हिन्दी दलित पत्राकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव (शोध-प्रबन्ध); लिमका बुक ऑफ़ रिकार्ड (1999) में दर्ज; अम्बेडकर, गाँधी और दलित पत्रकारिता, समकालीन हिन्दी पत्रकारिता में दलित उवाच, दलित क्रान्ति का साहित्य; मूल खोजो विवाद मिटेगा, अन्याय कोई परम्परा नहीं, साहित्य में दलित जीवन के प्रश्न, दलित दखल, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, उत्तर सदी के कथा साहित्य में दलित विमर्श, दलितेतर वर्ग के उपन्यास : दलित समस्या और समाधान, प्रधान सम्पादकः बहुरि नहीं आवना, सत्ता विमर्श और दलित हंस के प्रथम दलित विशेषांक (2004) के अतिथि सम्पादक। दैनिक हिन्दुस्तान, जनसत्ता, अमर उजाला, भास्कर, राष्ट्रीय सहारा आदि में विशेष लेख; हंस, कथादेश, जनसत्ता, बयान, पक्षधर, अपेक्षा आदि में कहानियाँ। आत्मकथा : अंग्रेज़ी में 'माई चाइल्डहुड ऑन माई शोल्डर्स' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित। तहलका में 35 किश्तें, पंजाबी, जर्मन, अंग्रेज़ी, मराठी, मलयालम, उर्दू, कन्नड़ में अनुवाद।

▶ मुख्य रचनाएँ दलित जीवन, सामाजिक न्याय और दलित पत्रकारिता पर केंद्रित हैं

साहित्यिक यात्राएँ : पेरिस (फ्रांस), जोहान्सबर्ग (अफ्रीका), विश्व हिन्दी सम्मेलन सूरीनाम, वैंकुवर (कनाडा), हॉलैंड और ग्रेट ब्रिटेन।

3.3.3 पुरस्कार/सम्मान

इण्टरनेशनल लिटररी अवार्ड-यू.एस.ए. (थर्ड अम्बेडकर इण्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस, पेरिस में); सुब्राह्मण्य भारती सम्मान; साहित्य भूषण सम्मान, उ.प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ; बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर सम्मान महू-संस्थान म.प्र.; कबीर सेवा सम्मान, स्वामी अछूतानन्द अति विशिष्ट सम्मान उ. प्र.; डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अवार्ड दिल्ली, नेशनल अम्बेडकर अवार्ड (भा.द.सा. अकादमी, दिल्ली) 2014; मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी का कृति केन्द्रित प्रथम पुरस्कार।

▶ श्यौराज सिंह बेचैन ने कई देशों की साहित्यिक यात्राएँ की हैं और उन्हें कई महत्वपूर्ण पुरस्कार भी मिले हैं

श्योराजसिंह बेचैन की कविता 'लड़की ने डरना छोड़ दिया' स्त्री सशक्तीकरण और नारी चेतना का एक प्रेरणादायक गीत है। यह कविता एक लड़की की चुप्पी, डर और परंपरागत बंधनों से आज़ादी की कहानी कहती है। पहले वह डरती, सहमी रहती थी,

▶ नारी सशक्तिकरण और सामाजिक बंधनों के खिलाफ एक प्रेरणादायक गीत है, जो एक लड़की के डर से आत्मनिर्भरता की यात्रा को दर्शाती है

पर समय और शिक्षा ने उसकी सोच को बदल दिया। अब वह न केवल आत्मनिर्भर बनी है, बल्कि सामाजिक कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, जल्दी शादी, और मानसिक जड़ता के खिलाफ़ आवाज़ उठाने लगी है। कविता में लड़की का संघर्ष और उसकी मानसिक मजबूती बेहद प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की गई है। श्योराजसिंह बेचैन, जो दलित और नारी विमर्श के समकालीन कवि हैं, अपनी सरल लेकिन प्रभावशाली भाषा के माध्यम से महिलाओं के अधिकार और समाज में उनकी भूमिका को नए दृष्टिकोण से देखने को मजबूर करते हैं। इस कविता के जरिये वे पितृसत्तात्मक समाज की उस सोच को चुनौती देते हैं, जिसमें लड़की को कमजोर और पराधीन माना जाता था। यह कविता न केवल एक लड़की की कहानी है, बल्कि पूरे समाज में बदलाव और समानता की उम्मीद जगाने वाली आवाज़ भी है।

3.3.4 लड़की ने डरना छोड़ दिया।

अक्षर के जादू ने
उस पर असर बड़ा बेजोड़ किया,
चुप्पा रहना छोड़ दिया,
लड़की ने डरना छोड़ दिया।
हँसकर पाना सीख लिया,
रोना-पछताना छोड़ दिया।
बाप का बोझ नहीं
होगी वह, नहीं पराया धन होगी
लड़के से क्यों
कम होगी, वह उपयोगी
जीवन होगी।
निर्भरता को
छोड़ेगी, ज़ेहनी जड़ता को तोड़ेगी
समता मूल्य
जिएगी अब वह
एकतरफ़ा क्यों ओढ़ेगी।
जल्दी नहीं करेगी शादी
देर से 'माँ' पद पाएगी।
नाज़ुक क्यों,
फ़ौलाद बनेगी,
दम-खम काम में लाएगी।
न दहेज को
सहमत होगी, क़ौम की कारा तोड़ेगी
घुट-घुटकर
अब नहीं मरेगी,
मंच पै चढ़कर बोलेगी।
समय और शिक्षा
ने उसके चिंतन का रुख़
मोड़ दिया।
चुप्पा रहना छोड़
दिया, लड़की ने डरना छोड़ दिया।
दूर-दूर से चुग्गा
लाकर नीड़ में चिड़िया काती है।
लेकिन लड़की पल
कर बढ़कर, शादी कर
उड़ जाती है।
लड़की सेवा करे
बुढ़ापे में तो क्यूँ लड़का चाहें?
इसी प्रश्न के
समाधान ने भीतर तक झकझोर दिया
चुप्पा रहना छोड़
दिया, लड़की ने डरना छोड़ दिया।

SGOU

कविता 'लड़की ने डरना छोड़ दिया' एक लड़की के अंदर आए बदलाव और उसकी आत्मनिर्भरता की कहानी कहती है। पहले वह लड़की समाज की परंपराओं, रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण डरती और चुप रहती थी। उसे लगता था कि वह "बाप का बोझ" है, "पराया धन" है, जिसका कोई अपना अस्तित्व नहीं है। वह जल्दी शादी करने, दहेज देने जैसी सामाजिक अपेक्षाओं को स्वीकार करती थी, और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने में असमर्थ थी। लेकिन शिक्षा और समय ने उसके सोचने-समझने के तरीके को बदल दिया। अब वह अपनी हँसी को अपनाने लगी है, रोने-पछताने को छोड़ दिया है, और खुद को कमजोर नहीं बल्कि सक्षम मानने लगी है। वह मानती है कि वह लड़कों से कम नहीं है, वह अपनी ज़िंदगी खुद बनाएगी, निर्भरता और मानसिक जड़ता को तोड़ेगी। अब वह जल्दबाज़ी में शादी नहीं करेगी, अपने जीवन और मातृत्व के फैसले खुद समय लेकर करेगी। वह दहेज जैसी कुरीतियों को स्वीकार नहीं करेगी और पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देगी।

- शिक्षा और समय के साथ अपनी ताकत पहचानती है और पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती देती है

कविता में लड़की के आत्मविश्वास और हिम्मत को इस तरह चित्रित किया गया है कि वह अपने लिए सवाल उठाने लगी है - कि अगर वह भी अपने बूढ़े माता-पिता की सेवा करती है, तो बेटे की क्या ज़रूरत है? अब वह अपने विचारों को मुखर करने के लिए मंच पर चढ़ेगी, अपनी आवाज़ को दबने नहीं देगी। कुल मिलाकर यह कविता उस नारी जागरण की गाथा है, जो परंपरागत बंधनों और भय से मुक्त होकर समाज में बराबरी का स्थान पाने की ओर बढ़ रही है। कविता का हर पद लड़की की हिम्मत, उम्मीद और बदलाव की प्रेरणा देता है।

- परंपराओं को चुनौती देकर अपनी आवाज़ उठाने और समाज में बराबरी का स्थान पाने की कोशिश कर रही है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

यह कविता एक लड़की के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ती है। शुरुआत में वह डरती और चुप रहती थी, क्योंकि उसे लगता था कि वह बाप की संपत्ति या बोझ है, और समाज की कुरीतियों जैसे दहेज, जल्दी शादी को स्वीकार करना उसका ही फर्ज है। लेकिन शिक्षा और समय के साथ उसकी सोच बदल गई। उसने डरना, रोना, पछताना छोड़ दिया। अब वह खुद को लड़कों के बराबर समझती है और निर्भय होकर अपने जीवन के फैसले खुद लेना चाहती है। वह पितृसत्तात्मक कुरीतियों, दहेज प्रथा, और मानसिक जड़ता को तोड़ना चाहती है। लड़की ने न केवल अपने डर को हराया, बल्कि समाज में अपनी आवाज़ बुलंद करने की ठानी है। अब वह अपने अधिकारों के लिए खुलकर लड़ने वाली, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर नारी बन गई है। कविता नारी सशक्तिकरण का प्रतीक है, जो समाज में बदलाव की आशा जगाती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. श्योराजसिंह बेचैन का संक्षिप्त परिचय दीजिए और उनके साहित्य के प्रमुख विषयों का उल्लेख कीजिए।
2. कविता 'लड़की ने डरना छोड़ दिया' में लड़की ने किन सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया है? विस्तार से लिखिए।
3. आपके अनुसार यह कविता केवल एक व्यक्ति की बात करती है या पूरे समाज की सोच को बदलने का प्रयास करती है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, लिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश, वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल,भारती - दलित विमर्श की भूमिका- इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

बस्स! बहुत हो चुका - ओमप्रकाश वाल्मीकि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्यिक व्यक्तिव्य की जानकारी प्राप्त करता है
- बस्स बहुत हो चुका कविता से अवगत होता है
- दलित वर्ग की परिस्थितियों को समझता है
- दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि की भूमिका पहचानता है।

Background / पृष्ठभूमि

दलित साहित्य के प्रमुख लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखी गई कविता है। 'बस्स! बहुत हो चुका' इसी नाम से उनका एक कविता संग्रह (1997) में प्रकाशित हुआ था। यह संग्रह और विशेष रूप से यह कविता, दलित चेतना, जातिगत शोषण, और मौन के प्रतिकार का प्रतिनिधित्व करती है। पृष्ठभूमि के रूप में, यह कविता उस ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ से जुड़ी है, जहाँ भारतीय समाज में दलित समुदाय को सदियों तक अपमानजनक कार्यों, जैसे सफाई करना, मैला ढोना, और झाड़ू लगाना-इन सबसे जोड़ा गया। दलितों को उनके मानवीय अधिकारों से वंचित किया गया और उन्हें केवल 'सेवक' या 'अछूत' की दृष्टि से देखा गया।

ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वयं दलित पृष्ठभूमि से आते थे और उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साहित्य के माध्यम से स्वर दिया। इस कविता में झाड़ू, गंदगी से भरी बाल्टी, और पसीने से भीगी हथेलियाँ केवल प्रतीक नहीं, बल्कि पूरी दलित पीढ़ी के संघर्ष और अपमान की विरासत हैं। कविता उस चुप्पी के टूटने की घोषणा है, जिसे सदियों तक दलितों पर थोपा गया। जब कवि अंत में कहता है 'बस्स! बहुत हो चुका चुप रहना' तो यह केवल एक व्यक्ति की पीड़ा नहीं, बल्कि पूरे समुदाय की जागरूकता और विद्रोह की आवाज़ है। प्रचलित व्यवस्था के प्रति शक्तिशाली असहिष्णुता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

खामोश, सामाजिक असमानता, उपेक्षा, असहिष्णुता, अमानवीयता और अन्याय, सनसनाहट

Discussion / चर्चा

3.4.1 ओमप्रकाश वाल्मीकि

▶ दलितों के लंबे समय से चले आ रहे शोषण और पीड़ा को ज़बरदस्त आक्रोश और नई चेतना के साथ प्रस्तुत करती है

ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा रचित यह कविता 'बस्स! बहुत हो चुका' नामक उनके काव्य-संग्रह का है, जो दलित साहित्य में विशेष स्थान रखती है। यह कविता सदियों से जातिगत शोषण, अपमानजनक कार्यों और सामाजिक बहिष्कार का सामना करते आ रहे दलित समुदाय की पीड़ा, आक्रोश और नयी चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति है। कविता में झाड़ू, गंदगी से भरी बाल्टी और पसीने से भीगी हथेलियाँ केवल प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे उस इतिहास की स्मृतियाँ हैं जो दलितों पर थोपी गई अमानवीयता और अन्याय को दर्शाती हैं।

3.4.2 बस्स! बहुत हो चुका

जब भी देखता हूँ मैं
झाड़ू या गंदगी से भरी बाल्टी-कनस्तर
किसी हाथ में
मेरी रगों में
दहकने लगते हैं
यातनाओं के कई हज़ार वर्ष एक साथ
जो फैले हैं इस धरती पर
ठंडे रेतकणों की तरह।
मेरी हथेलियाँ भीग-भीग जाती हैं
पसीने से
आँखों में उतर आता है
इतिहास का स्याहपन
अपनी आत्मघाती कुटिलताओं के साथ।
झाड़ू थामे हाथों की सरसराहट
साफ़ सुनाई पड़ती है भीड़ के बीच
बियाबान जंगल में सनसनाती हवा की तरह।
वे तमाम वर्ष
वृत्ताकार होकर घूमते हैं
करते हैं छलनी लगातार
उँगलियों और हथेलियों को
नस-नस में समा जाता है ठंडा-ताप।
गहरी पथरीली नदी में
असंख्य मूक पीड़ाएँ
कसमसा रही हैं
मुखर होने के लिए रोष से भरी हुईं।
बस्स!
बहुत हो चुका
चुप रहना
निरर्थक पड़े पत्थर
अब काम आएँगे संतप्त जनों के!

▶ जातीय शोषण और पीढ़ियों की पीड़ा का प्रतीक हैं

यह कविता उन भावनाओं और इतिहास की यातनाओं को व्यक्त करती है जो एक व्यक्ति तब महसूस करता है जब वह किसी के हाथ में झाड़ू या गंदगी से भरी बाल्टी देखता है। यह झाड़ू केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि जातीय शोषण, सामाजिक भेदभाव और पीढ़ियों की पीड़ा का प्रतीक बन जाती है। यह व्यक्ति उन लाखों वर्षों की पीड़ा को महसूस करता है, जो दलित और वंचित समाज ने झेली है। झाड़ू थामे हाथों की आवाज़ भी उसे जंगल में बहती हवा जैसी लगती है खामोश पर डरावनी। अंत में कवि कहता है कि अब चुप रहना नहीं चलेगा, अब समय आ गया है कि पीड़ित लोग उठ खड़े हों, और विरोध करें।

SGOU

3.4.3 आलोचनात्मक दृष्टिकोण

कविता में गहरी सामाजिक असमानता, जातीय शोषण और सदियों पुरानी पीड़ा की बात की गई है। झाड़ू और गंदगी की बाल्टी जैसे प्रतीकों के माध्यम से कवि ने दलित समाज की दशा को दिखाया है।

▶ दलित समाज के जातिगत शोषण और पीड़ा को दर्शाया गया है

झाड़ू, बाल्टी, कनस्तर ये वस्तुएं प्रतीक हैं उस जातिगत कार्य विभाजन के, जिसमें एक वर्ग को सिर्फ सफाई और गंदगी से जुड़े कामों तक सीमित कर दिया गया है। ठंडी रेत, पथरीली नदी, सिरहन, सनसनाहट ये सारे बिंब मानसिक यातना और इतिहास के बोझ को दर्शाते हैं। कविता की भाषा भावनात्मक और प्रतीकात्मक है। कहीं-कहीं पर कविता गद्यात्मक लगती है, परंतु यही शैली इसे और अधिक सशक्त और प्रभावशाली बनाती है। कवि की संवेदनाएं बहुत तीव्र हैं और पाठक को झकझोर देती हैं। यह कविता एक प्रकार की सामाजिक पुकार है अब और नहीं, अब बदलाव चाहिए। यह दलित चेतना और आत्म-सम्मान की आवाज़ है। यह कविता सिर्फ एक वर्ग की नहीं, बल्कि पूरे समाज की आत्मा को झकझोरने वाली रचना है। यह याद दिलाती है कि चुप्पी भी एक अपराध है, और अब समय है कि हम अन्याय के खिलाफ बोलें और कुछ ठोस कदम उठाये।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'बस्स! बहुत हो चुका' ओमप्रकाश वाल्मीकि की एक सशक्त और प्रतिरोधपूर्ण कविता है, जो दलित समाज की पीड़ा, अपमान और जागरूकता को स्वर देती है। कविता में झाड़ू और गंदगी से भरी बाल्टी जैसे प्रतीकों के माध्यम से दलितों की पीढ़ियों से चली आ रही गुलामी, जातीय शोषण और मानसिक यंत्रणा को व्यक्त किया गया है।

कवि जब इन प्रतीकों को देखता है तो उसे अपने पूर्वजों की याद आती है जिन्होंने यही काम करते हुए अपमान और पीड़ा की जिन्दगी जिये है। उसकी हथेलियाँ पसीने से भर जाती हैं और आँखों में इतिहास का स्याहपन उतर आता है। ये पंक्तियाँ उस मानसिक और भावनात्मक यातना को दर्शाती हैं, जो सदियों से दलित समाज झेलता आया है।

कविता का अंतिम वाक्य 'बस्स! बहुत हो चुका चुप रहना' इस पूरे शोषण के विरुद्ध एक विद्रोही घोषणा है। यह अब मौन नहीं रहने का संकल्प है, बल्कि सामाजिक अन्याय के खिलाफ़ एक स्पष्ट और बुलंद आवाज़ है। कविता के माध्यम से ओमप्रकाश वाल्मीकि सिर्फ दलित समाज की बात नहीं करते, बल्कि पूरे भारतीय समाज को सच्चायी का सामना करने और सुधार की ज़रूरत की ओर इशारा करते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता में दलित समाज की अवस्था कैसे दर्शाती हैं?
2. 'बस्स! बहुत हो चुका' कविता दलित चेतना का प्रतिनिधित्व किस प्रकार करती है? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
3. 'बस्स! बहुत हो चुका चुप रहना' - यह पंक्ति किस सामाजिक बदलाव की माँग करती है? इस पंक्ति की समकालीन प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार, दलिम्बाले - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र- वाणी प्रकाशन, 2020.
2. ओमप्रकाश, वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र- 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. अभय कुमार, दुबे - आधुनिकता के आइने में दलित- वाणी प्रकाशन, 2014.
4. कँवल, भारती - दलित विमर्श की भूमिका- इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 04

दलित आत्मकथा

SGOU

Unit 1: हिन्दी दलित आत्मकथाएँ - संक्षिप्त परिचय

Unit 2: ओमप्रकाश वाल्मीकि - सामान्य परिचय

Unit 3: जूठन - ओमप्रकाश वाल्मीकि

Unit 4: दलित जीवन का दस्तावेज़ - जूठन - कथानक, जूठन के नामकरण की यथार्थता

इकाई 1

हिन्दी दलित आत्मकथाएँ - संक्षिप्त परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिंदी आत्मकथा लेखन के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- प्रमुख रचनाकारों का परिचय मिलता है
- प्रमुख दलित आत्मकथाओं के बारे में जानता है

Background / पृष्ठभूमि

आत्मकथा लेखन की समृद्ध पृष्ठभूमि के बावजूद हिंदी में दलित आत्मकथा की धारा कमजोर दिखायी देती है। मराठी दलित आत्मकथाओं में से कई आत्मकथाओं का हिंदी में अनुवाद हुआ है जिनमें 'बलुतं' (अछूत), 'आठवणींचे पक्षी' (यादों के पंछी), 'उपरा' (पराया), 'उचत्या' (उठाईगीर), 'अक्करमाशी' (दोगला), 'कोल्हाट्याचं पोर' (छोरा कोल्हाटी का) आदि की काफी चर्चा हिंदी दलित साहित्य में हुई है। हिंदी दलित साहित्य में 1975 में भगवानदास द्वारा लिखी गई 'मैं भंगी हैं' पहली दलित आत्मपरक रचना है जिसमें भंगी समाज की व्यथाओं का यथार्थ और वास्तविकता के साथ चित्रण हुआ है। लेकिन जयप्रकाश कर्दम इसे आत्मकथा मानने से इन्कार करते हुए कहते है, "लेकिन मैं भंगी हूँ यथार्थ आत्मकथा नहीं अपितु भंगी समाज का एक तरह से इतिहासगत और समाजशास्त्रीय अध्ययन है।" इसके लंबे अंतराल के बाद 1995 में मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' का पहला भाग प्रकाशित हुआ जिसे सही मायने में हिंदी की पहली दलित आत्मकथा कहा जा सकता है। नैमिशराय ने मेरठ के चमार समाज की व्यथावेदनाओं का चित्रण अपनी आत्मकथा में बेबाकी से किया है। इसी आत्मकथा का दूसरा भाग 2000 में प्रकाशित हुआ है। श्री. ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' 1997 में तो कौसल्या वैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' 1999 में प्रकाशित हुई। 'जूठन' की हिंदी साहित्य में काफी चर्चा भी हुई है, इसके अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुए है। इनके अलावा सूरजपात चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत', के नाथ की 'तिरस्कार', डी. आर. जाटव की 'मेरा सफर मेरी मंजील' 2000, नवेंदु महर्षि की 'इंसान से ईश्वर तक', रमाशंकर आर्य की 'घुटन' तथा मातप्रसाद की 'झोपडी से राजभवन' में दलित समाज की विभिन्न स्थितियों का गंभीरता से चित्रण किया गया है। श्री श्योराजसिंह 'बेचैन' की आत्मकथा 'चमारका' का प्रकाशन हजारीबाग (बिहार) से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'युध्दरत आम आदमी' में अक्तूबर-दिसंबर 1998 के अंक से होता रहा। अब हिंदी दलित साहित्य में 'आत्मकथा' विधा को अच्छे दिन आने के आसार दिखाई देते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

'अर्द्धकथा', प्रामाणिकता, निर्ममता, हिंदी दलित साहित्य, सामाजिक शोषण, जातीय उत्पीड़न, जातिगत भेदभाव, शिक्षकों का भेदभाव, आर्थिक स्थिति

Discussion / चर्चा

4.1.1 हिन्दी दलित आत्मकथाएँ

हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन की लंबी परंपरा रही है। 1641 में लिखी गयी जैन कवि बनारसीदास की पद्यात्मक कृति 'अर्द्धकथा' नामक हिंदी की पहली आत्मकथा मानी जाती किंतु गद्य की दृष्टि से स्वामी दयानंद सरस्वती की 'स्वकथित आत्मचरित्र' (1879) पहली आत्मकथा है। द्विवेदी युग में स्वामी दयानंद (मुझमें देवजीवन का विकास), सन्तराम बी. ए. (मेरे जीवन अनुभव), राधाचरण गोस्वामी (मेरा संक्षिप्त जीवन चरित्र) आदि मौलिक आत्मकथाएँ मिलती है। छायावादोत्तर काल तथा स्वातंत्र्योत्तर काल में भी हिंदी आत्मकथाएँ प्रचुर मात्रा में लिखी गयी है जिनमें बाबू गुलाबराय की 'मेरी असफलताएँ', श्यामसुंदर दास की 'मेरी आत्मकहानी', राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी जीवन यात्रा', वियोगी हरि की 'मेरी जीवनगाथा' आदि कई आत्मकथाएँ है। इनके अलावा यशपाल, सेठ गोविंददास, उग्र, नंददुलारे वाजपेयी, बच्चन, बलराज साहनी, वृंदावनलाल वर्मा आदि साहित्यिकों की आत्मकथाएँ भी चर्चित रही है।

▶ बनारसीदास की पद्यात्मक कृति 'अर्द्धकथा' हिंदी की पहली आत्मकथा मानी जाती है

हिंदी साहित्य में दलित आत्मकथनों की संख्या कम है, इसका कारण बताते हुए महीप सिंह कहते है, 'आत्मकथा लिखने के लिए जिस प्रकार की स्पष्टता, प्रामाणिकता, निर्ममता और बेबाकी की आवश्यकता होती है वह भारतीय चरित्र में नहीं है।' हिंदी भाषी क्षेत्र की जटिल मानसिकता में इस चारित्रिक अभाव को ढूँढते हुए मोहनदास नैमिशराय लेखक की दुविधा स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्हीं के शब्दों में, - 'दलित कथाकार को पहले स्वयं अपने समाज/जाति/परिवार और रिश्तेदारों से जूझना पडता है। बाद में सवर्ण जाति के समीक्षकों से भी उलझना ज़रूरी हो जाता है। जो शालीनता तथा अश्लीलता की विपरीत शब्दावलियों के बहाने ऐसे कथाकारों को कोसना नहीं भूलते।' संख्यात्मक कमी होने पर भी हिंदी दलित आत्मकथन की क्षमता के प्रति आश्वस्त होनेवाली डॉ विमल खांडेकर लिखती है. 'सैकडों हिंदी साहित्यिक रचनाएँ जहाँ दलित जीवन की वास्तविकता को उनके सच्चे साफ रूप में अभिव्यक्ति देने में सक्षम नहीं हो सकती, वहाँ केवल एक दलित आत्मकथन संपूर्ण व्यवस्था और उससे जुडी शोषण, जटिलता, घृणित परंपरा और साजीश को हमारे समक्ष खोलकर रख देती है।

▶ दलित आत्मकथा सामाजिक सच्चाई को बेबाकी से दिखाती है

कहा जा सकता है कि 'बलुतं' से शुरू हुई मराठी आत्मवृत्त की धारा काफी सशक्त और प्रभावी रही है। संख्या, आशय और विभिन्न सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व उसमें है। हिंदी दलित साहित्य में 'अपने-अपने पिंजरे' से शुरू हुई यह विधा धीरे धीरे विकसित हो रही है। संख्यात्मक कमी के बावजूद सशक्त अभिव्यक्ति के कारण यह निरंतर आगे बढ़ती रहेगी। मराठी के दलित आत्मकथाओं के अनुवाद हिंदी साहित्य जगत में काफी चर्चित रहे हैं।

▶ मराठी में दलित आत्मकथाएँ प्रभावी रही हैं

हिन्दी दलित साहित्य में भी बहुत सी ऐसी विधाएँ हैं जिसके द्वारा हिन्दी का दलित साहित्यकार अपने विचार दूसरों तक पहुँचाता है। जिनमें आत्मकथा, संस्मरण, पत्रकारिता, आलोचना, निबन्ध, नाटक, जीवनी, पोस्टर पोयट्री आदि हैं। चन्द्र कुमार वरठे ने अपनी पुस्तक दलित साहित्य आन्दोलन में आत्मकथा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है, तो उसे आत्मकथा कहते हैं, किन्तु अपने चरित्र का विश्लेषण करना सरल नहीं है। क्योंकि यदि लेखक अपने गुणों का वर्णन करता है, तो आत्म प्रशंसक कहलाता है, यदि दोषों का उल्लेख करता है, तो यह भय बना रहता है कि कहीं श्रद्धालु जनों की श्रद्धा ही न समाप्त हो जाये और यदि वह अपने दोषों का उल्लेख नहीं करता तो सच्चा आत्मकथा लेखक होने का अधिकारी नहीं है।

▶ आत्मकथा लेखन आत्मविश्लेषण की चुनौती है

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा कोई नई विधा नहीं है। इसकी एक प्रदीर्घ परम्परा देखने को मिलती है। डॉ. लाल साहब सिंह ने हिन्दी के नवीन इतिहास' में लिखा है कि- 'आत्मकथा में लेखक अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन और एक व्यापक पृष्ठ भूमि में अपने जीवन का महत्त्व प्रतिष्ठापित करता है। वह अपने परिवेश के साथ पूरी जीवन्तता से जुड़ा होता है।' हमारे देश की आज़ादी से पहले जो राजनैतिक नेता जेलों में बन्द रहे उन्होंने भी जेलों में रहकर आत्मकथा लेखन किया। जिनमें पण्डित जवाहर लाल नेहरु की 'मेरी कहानी' राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी जीवन यात्रा' डॉ. श्याम सुन्दर दास की 'मेरी आत्म कहानी वियोगी हरि की 'मेरा जीवन प्रवाह' आदि। डॉ. परमानंद ने भी आत्मकथा लिखीं, परन्तु इन आत्मकथाओं में दलित पीड़ा कहीं से कहीं तक भी दिखायी नहीं देती।

▶ प्रारंभिक आत्मकथाओं में दलित पीड़ा का अभाव रहा है

दलित आत्मकथाओं का उद्देश्य दलित समाज के विविध स्तंभों को खडा करके उनको शोषण के विरूद्ध आगे बढ़ाते हुए, सामाजिक व्यवस्था तथा उनके सम्बन्धों की जाँच करना है। जब कोई भी दलित साहित्य का रचनाकार आत्मकथा का लेखन करता है, तो उसके पीछे उसकी आवाज के साथ-साथ पूरे दलित समाज की पुकार होती है। वैसे दलित आत्मकथाओं का आरम्भ मूल रूप से दलित साहित्य में ही देखने को मिलता है। डॉ. वरठे के अनुसार 'दलित साहित्य में आत्मकथा लेखन पत्रिका 'अस्मितादर्श' त्रैमासिक के माध्यम से प्रकाश में आया, 'मी आणि माझे लेखन' (मैं और मेरा लेखन) शीर्षक से दलित साहित्यकारों के आत्मकथन अस्मितादर्श के (1967) दीपावली अंक

▶ दलित आत्मकथाएँ शोषण के विरुद्ध आवाज और जागृति हैं

SGOU

में प्रकाशित हुए हैं। जिसके अन्तर्गत दया पवार का "बलूत', बेबी काम्बले का "जिण आमुच', लक्ष्मण माने का "उपाश', और शरण कुमार लिम्बाले का 'अक्करमाशी' आता है।

हिन्दी की दलित आत्मकथाओं में बहुत सी आत्मकथाएँ सामने आ चुकी है। जिनमें प्रमुख आत्मकथाएँ निम्नलिखित हैं-

▶ 'जूठन' जैसी आत्मकथाएँ जाति भेद की गहरी सच्चाई दिखाती हैं

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' एक बहुचर्चित आत्मकथा है। वाल्मीकि जी ने अपनी आत्मकथा का आरम्भ प्राथमिक विद्यालय में पढ़ रहे स्वयं एक अछूत बालक के साथ उसके सवर्ण गुरु के अनुदार व्यवहार को प्रदर्शित करते हुए कहा है कि- 'एक रोज़ हेडमास्टर कलीराम ने अपने कमरे में बुलाकर पूछा क्या नाम है वे तेरा? ओम प्रकाश, मैंने डरते-डरते धीमें स्वर में अपना नाम बताया। हेडमास्टर को देखते ही बच्चे सहम जाते थे। पूरे स्कूल में उनकी दहशत थी। चूहड़े का है? हेडमास्टर का दूसरा सवाल उछला जी' उदधृत वक्तव्य सिद्ध करता है कि शिक्षित होते हुए भी व्यक्ति जाति भेद के अंधविश्वासों से नहीं निकल पाते। वे द्रोणाचार्य की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए एकलव्य को शिक्षा प्राप्त करने में अड़चन पैदा करते हैं।

▶ शिक्षकों का दलित छात्रों के प्रति भेदभाव उनकी शिक्षा बाधित करता है

नैतिकता की दृष्टि से अगर हम विचार करें तो, यदि एक अध्यापक छात्रों में सफाई के गुण उत्पन्न करने का प्रयत्न करे, तो एक अच्छी नीति है और राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत प्रशंसनीय भी। परन्तु यहाँ बेगारी थी, अछूत होने की सज़ा थी। भारतीय गाँवो में यह स्थिति अब भी देखने को मिल जाती है। बहुत से दलित छात्र इस कारण पढ़ भी नहीं पाते, पढ़ते भी हैं तो आगे बढ़ नहीं पाते, जो एक शोचनीय विषय है। शिक्षकों द्वारा दलित छात्रों के साथ उत्पीड़न तथा कठोर यातनाएँ प्राथमिक स्कूल से ही आरम्भ हो जाती है। बड़ी कक्षा में पहुँचने पर उत्पीड़न व भेदभाव के पथ बदल जाते हैं। क्योंकि अस्पृश्यता शारीरिक रूप से हटकर बौद्धिक व मानसिक रूप में बदल जाती है। अध्यापक दलित छात्रों को प्रेक्टिकल में कम अंक देकर फेल कराते हैं या उनका भविष्य अंधकारमय बनाने का प्रयत्न करते हैं। इसके पीछे क्या सामाजिक मान्यताएँ हैं? क्या राजनीति है? यह एक विस्तार का विषय है परन्तु जो बात स्पष्ट दिखायी देती है, वह शिक्षक का अविकसित मस्तिष्क या अपनी यथास्थितिवादी व्यवस्था के समाप्त होने के ख़तरे से भयभीत होना है, क्योंकि जब उनको यह दिखायी देता है कि हमारे पैरों तले जो वर्ग दबा रहता था, वह आज जागरूक होकर हमको पीछे छोड़ने की चेष्टा कर रहा है, तो उनको ईर्ष्या होती है और सवर्ण समाज दलितों के साथ अनुचित व्यवहार करने लगता है। परन्तु इस तथ्य को उद्धृत करने का उद्देश्य मात्र इतना ही नहीं है कि प्राइमरी अध्यापक दलित छात्रों को कुशल व्यवहार दिखायें। बल्कि जो लोग बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग तथा सचेत नहीं है। उन्हें एक रास्ता मिले तथा वह आगे बढ़े। जैसा वाल्मीकि जी ने एक प्रसंग में दिखाया भी है कि जब छात्र ओम प्रकाश के पिता उस समय अचानक रास्ते से गुज़र रहे थे। तब उन्होंने स्कूल में अपने प्रिय बच्चे को झाड़ू लगाते हुए देखा, जैसा वह सोच भी नहीं सकते थे। अतः उनका क्रोध में आना

स्वाभाविक था। इस आवेश में आकर उन्होंने झाड़ू अपने बच्चे के हाथ में से लेकर फेंक दी तथा बड़ी हिम्मत के साथ एक ऐसे अध्यापक का सामना किया जो दोषपूर्ण ही नहीं अपितु हमारी शिक्षा प्रणाली पर एक धब्बा है। वाल्मीकि जी ने उनके शब्दों को कुछ इस प्रकार कहा है कि 'कौन सा मास्टर है वो द्रोणाचार्य की औलाद जो मेरे लड़के से झाड़ू लगवावे है।'

- वाल्मीकि की आत्मकथा में अशिक्षा, अंधविश्वास और दरिद्रता की मानसिक यंत्रणा उभरती है

वाल्मीकि जी की इस आत्मकथा पर बहुत से विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किये हैं। डॉ. रजत रानी मीनू, ज्ञान प्रकाश विवेक को उद्धृत करते हुए लिखती हैं कि 'आत्म कथा में अशिक्षा का घटाकोप, अंध विश्वासों के कुहासे, कमतरी के अहसास की मानसिक यंत्रणा है। दरिद्रता एक रोग की तरह पसरी है।' ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ पर प्रकाश जी आत्मकथाओं को मार्क्सवादी नजरिये से देखते हैं यही कारण है कि उनको दरिद्रता एक रोग की भाँति मुख्य समस्या लगती है। "जूठन' के संबंध में उनका वक्तव्य है- "लिखते समय उस तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताडनाओं को एक बार फिर जीना पडा, उस दौरान गहरी मानसिक यंत्रणाएँ मैं ने भोगी। स्वयं को परत-दर-परत उघेडते हुए कई बार लगा - कितना दुःखदायी है यह सब।"

- दलित आत्मकथाएँ दलित समाज के सच्चे दस्तावेज़ हैं

दलित आत्मकथाओं को यदि दलित समाज के दस्तावेज़ कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। 'अपने-अपने पिंजरे' मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित उनकी महत्त्वपूर्ण आत्मकथा है। इसमें मेरठ के चमार गेट में जन्में, पले बड़े बालक नैमिशराय के जीवन की कुछ ऐसी घटनाएँ पढ़ने को मिलती है, जो दलित साहित्य की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। अब वह दलित साहित्य में पथ-प्रदर्शक का कार्य भी कर रही है। वहीं पर रह रहे चमारों के अर्थाभाव, शोषण और बेगारी का यथार्थ चित्रण इस आत्मकथा में दिखायी देता है।

- नैमिशराय का परिवार सम्पन्न था, पर जाति-भेद और शोषण से जूझता रहा

चमार दरवज्जे के मोहनदास नैमिशराय का परिवार अन्य चमारों से सम्पन्न अवश्य हैं, लेकिन कथित छोटी जाति से होने के दंश से उनका परिवार तथा वह स्वयं भी ऐसी अवस्था का सामना करने के लिए मजबूर हुए हैं। जो किसी भी आधार पर मानवता के खिलाफ है। कभी चप्पलों को केदार उनका शोषण करता है, तो कभी सवर्ण हिन्दुओं और नवाबों ने उनका शारीरिक, आर्थिक तथा मानसिक शोषण किया। इस बात को वह स्वयं स्वीकारते हुये कहते हैं कि 'हिन्दू धर्म व्यवस्था, परम्परा तथा रूढ़ियों के प्रति अजीब सी घृणा मेरे भीतर कहीं गहरे जाकर बैठ गई थी। बचपन से ही मुझे यह सवाल बार-बार परेशान करता था कि मंदिरों में मूर्तियों का औचित्य क्या है?..

- नैमिशराय ने सम्पन्नता के बावजूद दलित पीड़ा को समझा और सामाजिक जागरूकता का संदेश दिया

नैमिशराय ने अपनी इस आत्मकथा में इस बात पर बल दिया है कि वह स्वंय दलित समाज के अन्य लोगों से सम्पन्न जीवन व्यतीत कर रहे थे। यह एक परिपक्व सोच का परिणाम है कि कोई भी मनुष्य कम अभावों में रहने के उपरान्त भी अपने समाज की पीड़ा को भोगें। वह उन मनुष्यों से कहीं ठीक है जो गुलामी का जीवन व्यतीत करने के बाद भी उससे निकलने की चेष्टा न करें। परन्तु दलित साहित्य का उद्देश्य गुलाम को गुलामियत का एहसास कर के उसको इस दल-दल से निकालते हुए आगे बढ़ाना है।

SGOU

- नैमिशराय का परिवार आर्थिक रूप से मजबूत था

नैमिशराय जी के अनुसार उन दिनों उनके घर की स्थिति खासकर मेरठ के चमारों की आर्थिक स्थिति से कहीं बेहतर थी। पिता सरकारी नौकर थे और 'बा' नगर पालिका के मेम्बर चुने जा चुके थे। बालक मोहन को उन दिनों स्कूल जाते समय हर रोज 10 पैसे जेब खर्च को मिलते थे। जो उस समय में बहुत बड़ी बात थी। एक दलित छात्र के लिए उस समय के 10 पैसे का मूल्य आज लगभग 20 रूपया होगा। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि नैमिशराय जी की आर्थिक स्थिति उस समय सुदृढ़ थी।

- नैमिशराय की आत्मकथा जातीय उपेक्षा और वर्गीय पीड़ा का यथार्थ चित्रण है

'अपने-अपने पिंजरे की भाषा शैली उपन्यासात्मक है। नैमिशराय जी ने पूरे मेरठ के चमारों की पीड़ा का विस्तार से यथार्थ पूर्ण वर्णन करने का प्रयास अपनी आत्मकथा में किया है। लेखक अपनी वर्गीय पीड़ा को लेकर पूरी आत्मकथा में विचार करते दिखायी दिया है। जातीय उपेक्षा के दर्शन भी हमें जगह-जगह पर देखने को मिलते हैं। चाहे गाँव हो या शहर मठ हो या मंदिर अथवा गंगा का घाट ही क्यों न हो। मेले में आये तीर्थ यात्रियों को भी जाति भेद की बीमारी परेशान करती थी, वहाँ पर भी लोग इस ओर लगे रहते थे कि हमारी जाति के लोग किस ओर है। जो सोच मनुवादी हिन्दू धर्म व्यवस्था को न्याय के कटघरे में एक बार पुनः खड़ा करती है। अतः मोहनदास नैमिशराय जी की यह आत्मकथा हिन्दी दलित साहित्य की सर्वश्रेष्ठ आत्मकथाओं में से एक है।

- 'तिरस्कृत' दलित उत्पीड़न और पीड़ा की संवेदनशील आत्मकथा है

सूरज पाल चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत' भी उत्कृष्ट आत्मकथाओं में एक है। यह आत्मकथा जातीय उत्पीड़न की मार्मिक घटनाओं को व्याख्यायित करती है। इस आत्मकथा में भी एक अध्यापक द्वारा एक छात्र का शोषण किया जाता है। इस आत्मकथा का सबसे संवेदनशील संदर्भ उसका आरंभ है। जो आत्मकथाकार की माँ से सम्बन्ध रखता है। इस अध्याय में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लेखक के जीवन का यह पहला अध्याय है अर्थात बचपन है। जिसमें अंधविश्वासों, रूढ़ियों तथा अशिक्षा और झाड़ फेंक में विश्वास करने के कारण लेखक अपनी माँ से बिछड़ जाता है। उसके बाद उसके जीवन में कष्टों का आरम्भ हो जाता है, अर्थात् आत्मकथाकार के जीवन पर हताशा और निराशा की वर्षा होने लगती है। सूरज पाल चौहान स्वयं स्वीकारते हुए कहते हैं कि 'सात आठ की उम्र रही होगी मेरी। उस दिन माँ हाथ में काँसे का कटोरा थामे घर-घर घूम रही थी। मैं हैरान था कि वह ऐसा क्यों कर रही है।' इस आत्मकथा में और भी बहुत से ऐसे प्रसंग आये हैं, जो आत्मकथाकार की पीड़ा को बड़ी मार्मिकता तथा सहृदयता से प्रस्तुत करते हैं। एक जगह चौहान जी अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'आखिरकार माँ ने बड़े अनमने मन से मेरे हाथ में झाड़ू और टोकरा थमा ही दिये। झाड़ू और टोकरा उठा कर मैं 'ठाकुर प्रताप के संग-संग चल पड़ा। 'ठाकुर का घेर और दगंड़ा बहुत लंबा चौड़ा था। इतने बड़े मैदान में झाड़ू लगाते-लगाते मेरी कमर दोहरी हो गयी। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि माँ को इतने बड़े घेर दगड़े को झाड़ते व गाय भैंस का गोबर उठाते हुए कितनी पीड़ा होती होगी।' यह एक दलित आत्मकथाकार की पीड़ा ही नहीं हैं, अपितु इसमें छुपी हुई हज़ारों लाखों दलितों की संवेदना भी है कि किस प्रकार यह मनुवादी समाज दलितों पर अत्याचार करता आ रहा है और इस सबके

उपरान्त भी दलित विकास के पथ पर अग्रसर है। अतः चौहान जी द्वारा लिखित यह आत्मकथा हिन्दी दलित साहित्य की धीरे-धीरे अमूल्यनिधि बन गई है।

- कौशल्या बैसंत्री की आत्मकथा दलितों की शिक्षा और सामाजिक असमानता की पीड़ा दिखाती है

कौशल्या बैसंत्री ने अपनी आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में लिखा है कि- 'जब कन्या पाठशाला में पाँचवीं कक्षा में प्रवेश लिया तब स्कूल की फीस ज्यादा थी एक रूपया बारह आने। परन्तु तब सब पढ़ रहे थे। बच्चों की फीस देना माँ बाप के सामर्थ्य के बाहर थी। बाबा ने हेड मास्टर से बड़ी विनती की कि वे फीस नहीं दे सकते। बहुत मुश्किल से वह मान गई और कहा पढ़ाई अच्छी न करने पर निकाल देगें। बाबा ने हेड मिस्ट्रस के चरणों के पास अपना सिर झुकाया दूर से, क्योंकि वे अछूत थे स्पर्श नहीं कर सकते थे। यह मात्र कौशल्या बैसंत्री के ही विचार नहीं है बल्कि आज भी बहुत से ऐसे दलित हैं जो अपनी पीड़ा को लिखना या दिखाना तो दूर मुँह से कह भी नहीं पाते। दलितों की ऐसी संवेदनाओं को हमें समझना होगा और एक आज़ाद हिन्दुस्तान में उनको भी पूर्ण आजादी देनी होगी।

- 'झोपड़ी से राजभवन' आत्मकथा संघर्ष और प्रेरणा से भरे दलित जीवन की कहानी है

'झोपड़ी से राजभवन' माता प्रसाद की एक प्रसिद्ध आत्मकथा है। जिस आत्मकथा से यह बात स्पष्ट होती है कि लेखक को राज भवन विरासत में प्राप्त नहीं हुआ है। उसकी तात्पर्यता तथा संघर्ष शीलता ही उसकी प्रगति का कारण बनी है। इस आत्मकथा में तीन अध्याय हैं। पहला अध्याय दलित जीवन के दर्द जिसमें साधन हीन तथा अभाव ग्रस्त युवक - युवतियों को संघर्ष के माध्यम से जीवन को प्रभावित करने की प्रेरणा दी गयी है और माता प्रसाद ने बचपन में शिक्षा करते समय जमींदार की बेगार करने से लेकर भूखे पेट पढ़ने जाने तक का वर्णन इस आत्मकथा में बड़ी उत्कृष्टता से किया गया है।

- राजनीति में छुआछूत सहकर पढ़ाई के दम पर सफलता पाई और दलित समाज की सेवा की

दूसरा अध्याय राजनीति के अखाड़े में है। इसमें माता प्रसाद जी का राजनीति का वर्णन है। वह छुआछूत के कई बार शिकार हुए किन्तु पढ़ने लिखने में अच्छा छात्र होने के कारण अध्यापकों के निकट रहे। सन् 1957 में वह विधायक बनकर राजनीति के पथ पर आगे बढ़ते गये। यह पाँच बार एम.एल.ए., दो बार एम.एल.सी. तथा मंत्री बने। यह दलित समाज की सेवा के लिये सदैव तत्पर रहे।

- माता प्रसाद ने अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में प्रभावशाली कार्य किया और लेखन में सक्रिय रहे

अपने तीसरे अध्याय में माता प्रसाद ने बताया है कि अरुणाचल प्रदेश के राज्य पाल के रूप में इन्होंने साढे पाँच वर्ष प्रभावित कार्य किया और डॉ. अम्बेडकर पाण्डुलिपि निर्माण समिति के चेयरमेन के रूप में पाण्डुलिपि तैयार की। इन्होंने हिन्दी सम्मेलन में 'भारत का प्रतिनिधित्त्व भी किया, एक बार केन्द्र सरकार ने कुछ मतभेदों के कारण इनसे त्याग पत्र माँगा। इस पर इन्होंने उत्तर दिया कि मेरा कार्यकाल समाप्ति पर है किसी को यहाँ पर नियुक्त कर दिया जाये, मैं इस्तीफा क्यों दूँ। इसके बाद प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और ग्रहमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी राष्ट्रपति से मिलने गये। राष्ट्रपति ने असम के राज्यपाल को इनकी जगह नियुक्त कर दिया तो माता प्रसाद जी वहाँ से वापस आ गये। केन्द्र सरकार के कहने के बाद भी माता प्रसाद जी ने त्याग पत्र

नहीं दिया था। इस बात को समाचार पत्रों ने खूब हवा दी और एक चर्चा का विषय बनाया। जब यह राज्यपाल थे, तब भी इन्होंने खूब लिखा और अब भी इनका लेखन कार्य चल रहा है।

▶ दलित फुटकर आत्मकथाएँ समाज की पीड़ा बयाँ करती हैं

कुछ फुटकर आत्मकथाएँ भी दलित साहित्य में प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें भगवान दास द्वारा लिखित आत्मकथा 'मैं भंगी हूँ' एक चर्चित आत्मकथा है। जिसमें भँगी जाति के अपमान की असहाय पीड़ा का वर्णन बडी सहनशीलता से किया गया है। डॉ. आर. जाटव की आत्मकथा "मेरा सफर मेरी मंजिल' में लेखक ने अपनी बाल्यावस्था की कठिनाईयो को पार करते हुए अपने विद्यार्थी जीवन की पीड़ा को प्रकट किया है। अतः दलित साहित्य की यह विधा धीरे-धीरे अपनी पहचान बनाते हुए ऐसी मंजिल पर पहुँच रही है, जिस पर पहुँचने के उपरान्त मात्र दलित साहित्य को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण हिन्दी वाड्मय को एक नयी ऊँचाई मिलेगी।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन की एक लंबी परंपरा रही है, जिसकी शुरुआत बनारसीदास की 'अर्द्धकथा' (1641) से मानी जाती है। गद्य में पहली आत्मकथा स्वामी दयानंद सरस्वती की "स्वकथित आत्मचरित्र' (1879) मानी जाती है। धीरे-धीरे यह विधा विकसित होती गई और छायावादोत्तर काल में कई साहित्यकारों ने आत्मकथाएँ लिखीं। लेकिन दलित आत्मकथा लेखन का उद्भव एक विशेष सामाजिक ज़रूरत से हुआ। दलित आत्मकथाएँ सिर्फ लेखक की व्यक्तिगत कहानी नहीं होतीं, बल्कि पूरे दलित समाज की सामूहिक पीड़ा, शोषण, संघर्ष और चेतना की कहानी हैं। डॉ. विमल खांडेकर मानती हैं कि जहाँ सैकड़ों रचनाएँ दलित जीवन का सही चित्रण नहीं कर पातीं, वहाँ एक सच्ची आत्मकथा पूरी व्यवस्था को उजागर कर सकती है। हिंदी में दलित आत्मकथा लेखन 'अपने-अपने पिंजरे' से शुरू हुआ, जबकि मराठी में यह परंपरा 'बलूतं' से मानी जाती है। प्रमुख दलित आत्मकथाओं में ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन', मोहनदास नैमिशराय की 'अपने-अपने पिंजरे', सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत', कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप', माता प्रसाद की 'झोपड़ी से राजभवन' और भगवानदास की 'मैं भंगी हूँ' प्रमुख हैं। इन आत्मकथाओं में जातिगत भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक शोषण, शिक्षा में बाधाएँ और मानसिक उत्पीड़न को बेहद ईमानदारी से व्यक्त किया गया है। इन रचनाओं की भाषा सहज, मार्मिक और यथार्थ से भरपूर होती है। दलित आत्मकथाएँ हिंदी साहित्य में न सिर्फ सामाजिक बदलाव का दस्तावेज़ बनकर सामने आई हैं, बल्कि इन्होंने साहित्यिक दृष्टि से भी आत्मकथा विधा को समृद्ध किया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन की परंपरा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. दलित आत्मकथा लेखन की विशेषताएँ क्या हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में चित्रित सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट कीजिए।

4. 'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा के माध्यम से मोहनदास नैमिशराय ने कौन-कौन सी सामाजिक समस्याएँ उजागर की हैं?
5. सूरज पाल चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
6. दलित आत्मकथाओं का हिंदी साहित्य में क्या महत्व है? विस्तार से लिखिए।
7. आत्मकथा की शैलिगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - शरणकुमार लिम्बाले - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - ओमप्रकाश वाल्मीकि - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. आधुनिकता के आइने में दलित - अभय कुमार दुबे - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. दलित विमर्श की भूमिका - कँवल भारती - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
2. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
3. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
4. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चौबे
5. दलित साहित्य का समाज शास्त्र - हरिनारायणाकूर।
6. दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार - रमणिका गुप्ता

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

ओमप्रकाश वाल्मीकि - सामान्य परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- ओमप्रकाश वाल्मीकि के जीवन और संघर्षों को समझता है
- 'जूठन' आत्मकथा के माध्यम से भारतीय समाज की जातिगत असमानता को पहचानता है
- दलित साहित्य के महत्व और सामाजिक भूमिका को जानता है
- भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठाने की प्रेरणा प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

ओमप्रकाश वाल्मीकि एक प्रसिद्ध दलित साहित्यकार थे, जिनका जन्म 30 जून 1950 को उत्तर प्रदेश के मुज़फ्फरनगर ज़िले के बरला गाँव में हुआ था। वे वाल्मीकि समुदाय के थे, जो समाज में बहुत ही निचली जाति मानी जाती थी। बचपन से ही उन्हें शिक्षा, समाज और जीवन के हर क्षेत्र में जातिगत भेदभाव और शोषण का सामना करना पड़ा। उनके जीवन के ये कठोर अनुभव उनकी लेखनी का आधार बने। वे न केवल एक साहित्यकार, बल्कि दलित चेतना के प्रवक्ता भी थे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जातिगत भेदभाव, अत्याचार, त्यागी, तिरस्कार, झाड़ू लगवाना, सामाजिक उत्पीड़न, सवर्ण समाज, अमानवीय व्यवहार, ज़ुल्म, मानसिक पीड़ा, स्कूल, ज़बरदस्ती, मानवाधिकार उल्लंघन

Discussion / चर्चा

- ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित जीवन की कठिनाइयों के बीच संघर्ष कर हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त की

4.2.1 ओमप्रकाश वाल्मीकि

दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून, सन् 1950 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर जनपद से जुड़े बरला नामक गाँव में हुआ। यह एक दलित परिवार था, जो कि अत्यंत निचले और निम्न पायदान पर था। इनका बचपन काफ़ी

सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों में बीता। माता-पिता के स्नेह के अतिरिक्त सम्पूर्ण जीवन कष्टप्रद और संघर्षमय रहा। बचपन से ही लेखक ने दलित जीवन की पीड़ा को झेला। प्रारम्भिक शिक्षा बरला से विकट परिस्थितियों में प्राप्त करते हुए शिक्षा के क्रम को निरन्तर ज़िल्लत, शोषण तथा अर्थाभाव सहन करते हुए जारी रखा। इन्होंने तकनीकी शिक्षा जबलपुर, मुम्बई से ग्रहण की तथा विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए एम.ए. हिन्दी की परीक्षा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर से उत्तीर्ण की।

▶ ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'जूठन' आत्मकथा से दलित जीवन की सच्चाई सामने रखी

ओमप्रकाश वाल्मीकि बचपन से ही अध्ययनशील और चिंतक व्यक्ति रहे। साहित्यिक क्षेत्र में इन्होंने अनेक महत्वपूर्ण कृतियों का सृजन किया। सन् 1997 में प्रकाशित "जूठन' आत्मकथा के माध्यम से ये विशेष रूप से चर्चा में आए। "जूठन' आत्मकथा के माध्यम से लेखक ने दलित जीवन के यथार्थ को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

▶ ओमप्रकाश वाल्मीकि ने जातिगत भेदभाव और अपमान का संघर्ष "जूठन' में व्यक्त किया

ओमप्रकाश वाल्मीकि का बचपन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा। वे समाज के उस वर्ग से थे जिसे "अछूत' कहा जाता था। बचपन में उन्हें स्कूल में जातिगत भेदभाव और अपमान का सामना करना पड़ा। 'जूठन' आत्मकथा में उन्होंने लिखा है कि कैसे उनसे स्कूल में झाड़ू लगवाया जाता था, केवल इस वजह से कि वे दलित थे। ये अनुभव उनके लेखन का मूल आधार बने।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कविता, आत्मकथा, आलोचना, कहानी और नाटक जैसी अनेक विधाओं में लेखन किया। उन्होंने दलित साहित्य को एक नई दिशा और पहचान दी।

प्रमुख कृतियाँ:

आत्मकथा:

जूठन (1997): यह उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। इसमें उन्होंने एक दलित बच्चे के रूप में अपने अपमानजनक अनुभवों को बहुत ही बेबाकी से प्रस्तुत किया।

कविता संग्रह:
सदियों का संताप
बस! बहुत हो चुका
अब और नहीं
शब्द झूठ नहीं बोलते।

कहानी संग्रह:
सलाम
घुसपैठिए
अम्मा एंट अदर स्टोरीस

SGOU

नाटक:

दो चेहरे

उसे वीरचक्र मिला था

आलोचना:

दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र

मुख्य धारा और दलित साहित्य

दलित साहित्य: अनुभव संघर्ष एवं यथार्थ

▶ ओमप्रकाश वाल्मीकि को बचपन से सवर्णों का जातिगत शोषण और अत्याचार सहना पड़ा

दलित समुदाय पर ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक ज़ुल्म और अत्याचार किये जाते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि को बचपन से ही जातिगत विषमता के कारण तिरस्कार और अत्याचारों का सामना करना पड़ा। बरला गाँव में मुसलमान, त्यागी भी काफ़ी अधिक थे। उनका व्यवहार दलितों के प्रति अत्यंत घृणित था। वे उनके ऊपर तरह-तरह की फब्तियाँ किया करते थे। लेखक के स्वयं के शब्दों में, 'ऐसी फब्तियाँ जो बुझे तीर की तरह भीतर तक उतर जाती थी। ऐसा हमेशा होता था। साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर कक्षा में जाओ तो साथ के लड़के कहते, "अबे, चूहड़े का, नए कपड़े पहनकर आया है।" मैले-पुराने कपड़े पहनकर स्कूल जाओ तो कहते, "अबे चूहडे के, दूर हट, बदबू आ रही है।' इससे स्पष्ट होता है जाति का छोटापन लेखक को पल पल छलता रहा। लेखक और उसके समुदाय के लोग इसी प्रकार अनेक बार त्यागियों और उच्च जाति के लोगों के तिरस्कार का शिकार हुए। मास्टर बृजपाल त्यागी के घर में घटी घटना सवर्णों के उच्च संस्कारों की पोल खोल कर रख देती है। ओम प्रकाश अपने सहपाठी के साथ मास्टर बृजपाल के गाँव गेहूँ लेने जाता है। दोनों का खूब आदर सत्कार किया जाता है। इसी दौरान वहाँ पर एक अन्य व्यक्ति आ जाता है। उस व्यक्ति ने बुजुर्ग व्यक्ति से दोनों के विषय में पूछताछ शुरू कर दी। बरला से आए हैं। सुनते ही सवाल पूछा कोण जात से है। इस पर ओम प्रकाश ने जवाब देते हुए कहा, 'चूहड़ा जात हैं। ... बुजुर्ग ने चारपाई के नीचे पड़ी लाठी उठाकर तड़ से मार दी, भिक्खूराम की पीठ पर। ... बुर्जुग के मुँह से अश्लील गालियों की बौछार होने लगी थी। ... कई लोगों की राय थी रस्सी से बाँधकर दोनों को पेड़ से लटका दो।' इस प्रकार पता चलता है कि सवर्ण समाज निम्न जाति के लोगों के साथ कैसा अमानवीय व्यवहार करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जीवन एक दलित व्यक्ति की सामाजिक, मानसिक और शैक्षणिक संघर्षों की कहानी है। बचपन से ही उन्हें स्कूल में जातिगत अपमान झेलना पड़ा, जैसे झाड़ू लगवाना, गालियाँ सुनना और जाति के आधार पर तिरस्कार झेलना। उनकी आत्मकथा 'जूठन' में उन्होंने इन सभी घटनाओं के यथार्थ को ईमानदारी से चित्रण किया है।

उन्होंने कविता, कहानी, आलोचना, नाटक और आत्मकथा जैसी विधाओं में लिखते हुए दलित साहित्य को एक नई पहचान दी। उनका लेखन सिर्फ व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि पूरे दलित समाज की वेदना को स्वर देता है। 'जूठन' में उन्होंने समाज की उस व्यवस्था को उजागर किया है, जिसमें दलितों को इंसान नहीं समझा जाता था।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।
2. 'जूठन' आत्मकथा के मुख्य विषय और उद्देश्य क्या हैं?
3. लेखक को बचपन में किस प्रकार के जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ा?
4. 'जूठन' आत्मकथा में वर्णित मास्टर बृजपाल त्यागी के गाँव की घटना का वर्णन कीजिए।
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
6. ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. शरणकुमार लिम्बाले- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. दुबे, अभय कुमार - आधुनिकता के आइने में दलित - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. भारती, कँवल - दलित विमर्श की भूमिका - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

जूठन - ओमप्रकाश वाल्मीकि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- जूठन के माध्यम से दलित साहित्य के स्वरूप और महत्त्व को समझता है
- ओमप्रकाश वाल्मीकि के जीवन के माध्यम से दलित चेतना की निर्माण-प्रक्रिया समझता है
- दलित चेतना की निर्माण-प्रकिया में आनेवाले पड़ावों को जानता है
- दलित लेखकों की भूमिका और उनके योगदान का विश्लेषण करने में सक्षम होता है
- जूठन की रचना शैली से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

ओमप्रकाश वाल्मीकि (1950–2013) हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध दलित लेखक, कवि और सामाजिक चिंतक थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के मुज़फ्फरनगर ज़िले के बारला गाँव में एक दलित (सफाई कर्मचारी) परिवार में हुआ था। दलित जीवन के कड़वे यथार्थ को उन्होंने साहित्य में स्वर दिया और सामाजिक समानता के लिए आवाज़ उठाई।

'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा है, जो 1997 में प्रकाशित हुई थी। यह हिंदी में लिखी गई पहली प्रमुख दलित आत्मकथाओं में से एक मानी जाती है। इस कृति में लेखक ने अपने जीवन के शुरुआती संघर्षों, सामाजिक भेदभाव, जातीय उत्पीड़न, और दलित समुदाय के दर्द को बेबाकी से सामने रखा है 'जूठन' का शाब्दिक अर्थ होता है बचा हुआ या झूठा खाना, जो दूसरों के खाने के बाद बच जाता है। यह शब्द प्रतीक है उस अपमानजनक स्थिति का जिसमें दलित समुदाय को समाज में रखा गया था उन्हें दूसरों का जूठा खाना तक मजबूरी से खाना पड़ता था। यह नाम ही पूरे दलित अनुभव को बेहद प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

दलित, उत्पीड़न, संघर्ष, भेदभाव, समाज, जातिवाद, मुक्ति

SGOU

Discussion / चर्चा

4.3.1 जूठनः-ओमप्रकाश वाल्मीकि

- जातिगत भेदभाव, संघर्ष और दलित चेतना की कहानी

'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि की बहुचर्चित आत्मकथा है। यह हिन्दी में अब तक लिखित दलित साहित्यकारों में सर्वाधिक सशक्त और कलात्मक आत्मवृत्त है। 'जूठन' के माध्यम से लेखक ने 'भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म और इतिहास में पवित्र तथा उत्कृष्ट समझे जानेवाले तीन प्रतीकों-क्रमशः शिक्षण संस्थान, गुरुयानी शिक्षक एवं पर कड़ा प्रहार किया है तथा यह दिखाने की कोशिश की है कि दलित समाज को अपने व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक विकास की प्रक्रिया में इन तीनों प्रतीकों की नकारात्मक भूमिकाओं का सामना करना पड़ता है। 'जूठन' का नायक मुंशीजी से शिक्षण संस्थानों में मार खाते हुए भी इसलिए पढ़ाई जारी रखता है कि पढ़-लिखकर जाति सुधारनी है 'लेकिन यह जाति क्या सिर्फ पढ़ने-लिखने से सुधर जायेगी? पढ़-लिखकर और नौकरी प्राप्त कर यह जीवन में पद और धन तो जरूर प्राप्त कर लेगा, परन्तु समाज में मान और प्रतिष्ठा कहाँ से मिलेगी?' दलित चेतना का यह सवाल सही है कि इस जाति-व्यवस्था में जब तक दलितों के साथ 'दलित' की पहचान जुड़ी हुई है, उन्हें सामाजिक श्रेष्ठता में शामिल नहीं किया जा सकता। समाज चाहें उन्हें और जिस रूप में पहचान दे दे, विवाह और स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में उनके साथ समानता का व्यवहार करना मुश्किल है। 'जूठन के कुलकर्णी जैसे लोग कितने ही प्रगतिशील क्यों न हो जायें, जब भी प्रेम अथवा विवाह का प्रसंग आएगा, 'जाति' नामक यह ताकतवर दीवार इनके बीच आकर खड़ी हो जायेगी...।' 'जाति उसे हर जगह घेरे खड़ी मिलेगी। पारम्परिक पवित्रता उसे उस दीवार से आगे बढ़ने नहीं देगी। 'जूठन' का यथार्थ यही है।

- दलित पीड़ा, समाज की क्रूरता और आत्मसंघर्ष

सामाजिक संबंधों को उजागर करनेवाली इस 'आत्मकथा' के बारे में ओमप्रकाश वाल्मीकि खुद कहते हैं, 'दलित जीवन की पीड़ाएँ असहनीय और अनुभव-दग्ध हैं। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सके। एक ऐसी समाज-व्यवस्था में हमने साँसे ली हैं, जो बेहद क्रूर और अमानवीय हैं। दलितों के प्रति असंवेदनशील भी...। अपनी व्यथा-कथा को शब्दबद्ध करने का विचार काफी समय से मन में था। लेकिन प्रयास करने के बाद भी सफलता नहीं मिल पा रही थी ।'.....इन अनुभवों को लिखने में कई प्रकार के खतरे थे। एक लम्बी जद्दोजहद के बाद मैंने सिलसिलेवार लिखना शुरू किया। तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताड़नाओं को एक बार फिर जीना पड़ा, उस दौरान गहरी मानसिक यन्त्रणाएँ मैंने भोगीं। स्वयं को परत-दर-परत उघेड़ते हुए कई बार लगा कितना दुःखदायी है यह सब। कुछ लोगों को यह अविश्वसनीय और अतिरंजनापूर्ण लगता है।'

लेखक की आत्मस्वीकृति में सच्चाई है। समाज के सबसे पवित्र और उत्कृष्ट संस्थाएँ

▶ शिक्षकों का पक्षपात, दलित छात्रों की उपेक्षा

स्कूल-कॉलेज-विश्वविद्यालय और उसके पवित्र नियन्ता शिक्षक दलितों के प्रति कितने संवेदनशील और पवित्र हैं, इसे आज भी देखा जा सकता है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर शोध कार्यों तक उनके साथ इन सवर्ण गुरुओं का क्या व्यवहार होता है? इसे एक दलित छात्र ही जानता है। इस पीड़ा को दलित बालक ओमप्रकाश के सन्दर्भ में और भी शिद्दत के साथ देखा जा सकता है। वाल्मीकि के शब्दों में 'अध्यापकों का आदर्श रूप जो मैंने देखा, वह अभी तक मेरी स्मृति से मिटा नहीं है। जब भी कोई आदर्श गुरु की बात करता है, तो मुझे वे तमाम शिक्षक याद आ जाते हैं, जो माँ-बहन की गालियाँ देते थे। सुन्दर लड़कों के गाल सहलाते थे और उन्हें घर बुलाकर उनसे प्यार से व्यवहार करते थे।'

▶ दलित बच्चे पर अत्याचार, शिक्षा में अपमान

चूहड़ा समझकर हेडमास्टर दिन भर लेखक से झाड़ू लगवाता है। लेखक के शब्दों में, 'दूसरे दिन स्कूल पहुँचा। जाते ही हेडमास्टर ने फिर से झाड़ू के काम पर लगा दिया। पूरे दिन झाड़ू देता रहा। मन में एक तसल्ली थी कि कल से कक्षा में बैठ जाऊँगा। तीसरे दिन में कक्षा में जाकर चुपचाप बैठ गया। थोड़ी देर बाद उनकी दहाड़ सुनाई पड़ी, 'अबे, ओ चूहड़े के मादरचोद कहाँ घुस गया..... अपनी माँ....' उनकी दहाड़ सुनकर मैं थर-थर काँपने लगा था। एक त्यागी (सवर्ण) लड़के ने चिल्लाकर कहा, 'मास्साब, वो बैट्ठा है कोणे में।' हेडमास्टर ने लपककर मेरी गर्दन दबोच ली थी। उनकी उँगलियों का दबाव मेरी गर्दन पर बढ़ रहा था। जैसे कोई भेड़िया बकरी के बच्चे को दबोचकर उठा लेता है। कक्षा के बाहर खींचकर उन्होंने मुझे बरामदे में ला पटका। बौखकर बोले, 'जा लगा पूरे मैदान में झाड़ू.... नहीं तो गांड में मिर्ची डाल के स्कूल से बाहर काढ़ (निकाल) दूँगा। 'जूठन' दलित जीवन की मर्मान्तिक पीड़ा का दस्तावज़ है। जीवन की सुख-सुविधा और तमाम नागरिक सहूलियतों से वंचित दलित जीवन की त्रासदी उनके व्यक्तिगत वजूद से लेकर घर-परिवार, बस्ती और पूरी सामाजिक व्यवस्था तक फैली हुई है। दलितों के जीवन यथार्थ को लेखक की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है-

▶ अपमान का विरोध, दलित स्त्री की गरिमा

एक दिन सुखदेव सिंह के घर बेटी का विवाह था। बारातियों के खा लेने के बाद माँ ने भोज के बचे जूठन उठा लिये थे। अन्त में माँ ने सुखदेव सिंह से बच्चों के लिए एक पत्तल खाना माँगा। इस पर सुखदेव सिंह ने टके-सा जवाब दिया 'टोकरा भर जूठन तो लिये जा रही हो, अलग से खाना माँग रही है, चूहड़ी कहीं की। निकल जा मेरे दरवाजे से।' माँ ने भी शेरनी की तरह डटकर जवाब दिया और जूठन से भरे टोकरे को उसकी ओर फेंकती हुई बोली, 'इसे उठा के धर ले, कल नाश्ते में बारातियों को खिला देणा'.... और हम दोनों भाई-बहनों का हाथ पकड़ के तीर की तरह उठकर चल दी थी। सुखदेव सिंह माँ पर हाथ उठाने के लिये झपटा था, लेकिन माँ ने शेरनी की तरह सामना किया था।'

उसके बाद माँ कभी उसके दरवाज़े पर नहीं गयी और तब से लेखक के घर में जूठन उठाने का रिवाज़ ही बन्द हो गया।

'सलाम' बड़ा ही अपमानजनक रिवाज़ था। दलितों में यह प्रथा न जाने कब से चली

आ रही है। शादी के बाद दुल्हा और दुल्हन गाजा बाजों के साथ गाँव के बड़े लोगों के दरवाजे पर जाते और वहाँ उन्हें सलाम करते। बदले में उन्हें कुछ कपड़े-लत्ते, बर्तन या नगद दिये जाते, किन्तु खुशी से कोई कुछ न देता। लड़का या लड़की की माँ को काफी चिरौरी करनी पड़ती। तब जाकर एक-आध रुपये या कुछ फटे-पुराने कपड़े, बर्तन आदि मिल पाते। लेखक को इस 'सलाम' प्रथा का इतना बुरा अनुभव हुआ कि उसने अपने पिताजी से अत्यन्त दुःखी होकर उसका ज़िक्र किया। पिताजी ने तब से इस कुप्रथा को हटाने का बीड़ा ही उठा लिया। शुरुआत उसके अपने घर से ही हुई। न तो लेखक की शादी में और न उसकी बहन की शादी में ही 'सलाम' लिया गया। इस प्रकार लेखक के परिवार और समाज से यह प्रथा खत्म हुई। लेखक की प्रसिद्ध कहानी 'सलाम' इसी घटना की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है।

▶ दलितों की अपमानजनक 'सलाम' प्रथा का विरोध कर खत्म किया गया

किन्तु अभी बहुत सारी बुराइयाँ बाकी थीं, जिसे समाप्त करना लेखक के बूते की बात न थी। शराब पीना, मरे हुए मवेशियों को खोलना और उनका मांस खाना, झाड़-फूँक और देवी-देवताओं के नाम पर सुअर आदि की बलि देना ऐसी ही बुराइयाँ थीं। एक रोज लेखक को भी मरे हुए जानवर की खाल उतारने जाना पड़ा। हुआ यह कि एक तगा का बैल मर गया था। पिताजी या घर के कोई और बड़े सदस्य नहीं थे। माँ ने उस बैल को उठाने के लिए बगल के एक चाचा को कहा। वे इस शर्त पर तैयार हुए कि उनकी मदद करने के लिए एक आदमी और भी जाएगा। और तो कोई था नहीं। इसलिए लेखक को ही स्कूल से बुला लिया गया। न चाहते हुए भी लेखक को चाचा के साथ जाना पड़ा। चाचा बैल की खाल उतारने लगे। एक छूरी लेखक को भी पकड़ा दी, अकेले तो शाम हो जाएगी। लेखक को इसका कोई अनुभव न था। खाल को चाचा ने एक चादर में बाँधा। दो मील की दूरी तय करनी थी। गठरी भारी थी। किसी तरह चाचा उसे ढोते रहे। किन्तु एक-डेढ़ मील के बाद वे थक गये और उसे ढोने के लिए लेखक पर दबाव डालने लगे। लेखक दो कारणों से बचना चाहता था-एक तो वह गठरी उसके वजूद से कहीं भारी थी, दूसरी कोई सहपाठी देख लेगा तो क्या कहेगा? किन्तु लाख मना करने पर भी चाचा ने उससे गठरी ढुलवा ही ली। लेखक की हिम्मत पस्त हो गयी। यही नहीं, अगले दिन हिरम सिंह के साथ उसे चमड़ा बाजार ले जाकर लेखक को बेचना भी पड़ा था। इस घटना से लेखक मर्माहत हो चुका था, किन्तु पारिवारिक पेशे की विवशता और गरीबी के कारण सब कुछ बर्दास्त करना पड़ा।

▶ गरीबी और परंपरा के दबाव में लेखक ने अपमान झेला

इस प्रकार स्कूल मास्टर से लेकर गाँव-घर के सामन्त और सेठ-साहूकार तक और परिवार की गरीबी से लेकर सामाजिक कुप्रथाओं तक सभी दलित जीवन को लीलने के लिए तैयार बैठे थे। यहाँ तक कि सरकारी अफसर और पुलिस-दारोगा भी उन्हीं का शिकार करते थे। लेखक ने दलितों पर दारोगा के जुल्म को अपनी आँखों से देखा था। इस प्रकार की अनेक घटनाएँ हैं, जिन्हें लेखक ने आत्मकथा में चित्रित किया है। कुछ अपनों की, कुछ परायों की। पराये तो पराये अपने 'वाल्मीकि' उपनाम लेकर लीलने को अपनों के बीच भी परेशानियाँ उठानी पड़ी थीं। परिवारवालों ने भी कई बार

▶ जाति, गरीबी और अपनों की उपेक्षा से जीवन दुःखी हुआ

SGOU

उनका नाम शादी विवाह के कार्ड में नहीं छापा था। उन्हें इस नाम से अपरिचितों के बौच जाति खुल जाने का भय था। उनका तर्क था कि जाति का बोल गले में बाँधकर जीवन भर घूमना उचित नहीं है।

'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा है जो दलित शोषण का जीवन्त दस्तावेज है। मेधावी बालक ओमप्रकाश के साथ बचपन से सवर्णों द्वारा दमन का, जो अन्तहीन सिलसिला प्रारंभ होता है और पल-पल अपनी जाति के कारण जो कुछ उन्हें भोगना पड़ता है, उसे पढ़कर उन्हीं की इन पंक्तियों की सार्थकता उजागर होने लगती हैं, 'स्वयं को परत-दर-परत उधेड़ते हुए कई बार लगा कितना दुःखदायी है यह सब कुछ। लोगों को यह अविश्वसनीय और अतिरंजनापूर्ण लगता है। स्कूल में प्रथम आने पर भी ओमप्रकाश को सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग न लेने दिया जाना, अध्यापकों की बर्बर मारपीट, उसे बार-बार अपमानित करना, 'चूहड़ा' कहकर बार-बार उसे दंश देना, त्यागी इंटर कालेज में दलित विद्यार्थियों के साथ बर्बर व्यवहार, अच्छी नौकरी के बावजूद मित्रों के घर दलितों की चाय का कप अलग होना, यहाँ तक कि उनकी प्रेमिका का यह जानते ही कि वे उच्चकुलीन ब्राह्मण नहीं, वरन् दलित हैं उनसे संबंध तोड़ लेना आदि, 'जूठन' में अनेक ऐसे प्रसंग हैं, जिनसे दलित साहित्य को लेकर उठी सहानुभूति की चर्चा पर विश्वास होने लगता है। सचमुच स्वयं उस परिवेश में रहे बिना और उसे भोगे बिना इतना प्रामाणिक लेखन संभव नहीं है।

▶ जातिगत अपमान, सामाजिक बहिष्कार और जीवनभर का दलित संघर्ष

लेखक के शब्दों में, 'जब तक पता नहीं होता कि आप दलित हैं तो सब कुछ ठीक रहता है, जाति मालूम होते ही, सब कुछ बदल जाता है।.... दलित होने की पीड़ा चाकू की तरह नस-नस में उतर जाती है। गरीबी, अशिक्षा, छिन्न-भिन्न दारुण ज़िन्दगी, दरवाज़े के बाहर खड़े रहने की पीड़ा, भला आभिजात्य गुणों से सम्पन्न सवर्ण हिन्दू कैसे जान पाएँगे ?. .... भारतीय समाज में जाति एक महत्त्वपूर्ण यथार्थ है। 'जाति' पैदा होते ही व्यक्ति की नियति तय कर देती है।.... तरह-तरह के मिथक रचे गये वीरता के, आदर्शों के। कुल मिलाकर क्या परिणाम निकले ? पराजय, निराशा, निर्धनता, अज्ञानता, संकीर्णता, कूपमंडूकता, धार्मिक जड़ता, पुरोहितवाद के चंगुल में फँसा एवं कर्मकांड में उलझा समाज, जो टुकड़ों में बँटकर कभी यूनानियों से हारा, कभी शकों से, कभी हूणों से, कभी अफगानों से, कभी मुगलों से, कभी फ्रांसीसियों और अंग्रेज़ों से हारा, फिर भी अपनी वीरता और महानता के नाम पर कमज़ोर और असहायों को पीटते रहे। घर जलाते रहे। इतिहास से सबक न लेना आखिर किस राष्ट्र के निर्माण की कल्पना है ?

▶ जाति आधारित भेदभाव से दलितों को गहरी पीड़ा और अपमान

इस प्रकार 'जूठन' न केवल किसी दलित लेखक की आत्मकथा है बल्कि वह संपूर्ण दलित जीवन का दस्तावेज भी है और सम्पूर्ण भारतीय समाज का दिग्दर्शन भी उसकी असंगति-विसंगतियों का दर्पण भी है और सामाजिक गलीज से मुक्ति का एक लेखकीय प्रयास भी। जूठन की भाषा अत्यन्त सरल और सहज है। इसके पाठन में कहानी और उपन्यास सी रोचकता और कविता की सी तन्मयता है।

▶ 'जूठन' दलित जीवन और समाज की सच्चाई का सशक्त दस्तावेज

SGOU

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

जूठन निश्चय ही एक महत्त्वपूर्ण कृति है। यह दलित चेतना के विकास की कहानी कहने के साथ-साथ उसे आगे भी बढ़ाती है। यह अवश्य है कि लेखक ने आत्मकथा में अपने विवेक से अपनी दृष्टि से, अपने जीवन का वर्णन किया है। तथा शेष समाज के बारे में अपनी दो टूक राय भी व्यक्त की है। चूँकि लेखक की दृष्टि में मौलिकता है, अतः यह आत्मकथा सभी पाठकों के लिए पठनीयता का आनन्द प्रदान करने वाली है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'जूठन' एक आत्मकथा होते हुए भी एक सामाजिक दस्तावेज़ क्यों कही जाती है? उदाहरण सहित समझाइए।
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा "जूठन' में वर्णित जातीय भेदभाव और सामाजिक अन्याय के घटनाओं पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
3. 'जूठन' में लेखक के जीवन में शिक्षा की क्या भूमिका रही है? उनके शैक्षिक संघर्षों का वर्णन कीजिए।
4. 'जूठन' में दलित अस्मिता और आत्मसम्मान की भावना कैसे व्यक्त होती है?
5. 'जूठन' में वर्णित बाल्यकाल के अनुभव किस प्रकार भारतीय समाज की सामाजिक संरचना की सच्चाइयों को उजागर करते हैं?
6. 'जूठन' की रचनाधर्मिता की ईमानदारी पर प्रकाश डालिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. लिम्बाले, शरणकुमार - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र- वाणी प्रकाशन, 2020.
2. वाल्मीकि ,ओमप्रकाश - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र- 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. दुबे,अभय कुमार, - आधुनिकता के आइने में दलित- वाणी प्रकाशन, 2014.
4. भारती, कँवल - दलित विमर्श की भूमिका- इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

दलित जीवन का दस्तावेज़ - जूठन - कथानक, जूठन के नामकरण की यथार्थता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- दलित साहित्य की प्रकृति और उद्देश्य को समझता है
- जातिवाद और सामाजिक असमानता की समस्या का वास्तविक अनुभव आत्मकथात्मक दृष्टिकोण से ग्रहण कर सकता है
- सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका के मूल्यांकन को जानता है
- वर्ण-व्यवस्था की अमानवीयता पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है
- शिक्षा के क्षेत्र में दलितों के प्रति होनेवाले जातीय उत्पीडन का यथार्थ का अनुभव होता है।

Background / पृष्ठभूमि

'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखित एक दलित आत्मकथा है, जो 1997 में प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा केवल एक व्यक्ति की पीड़ा की कथा नहीं है, बल्कि पूरे दलित समुदाय की सामूहिक वेदना और संघर्ष का दस्तावेज़ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म उत्तर प्रदेश के एक छोटे गाँव बारला में चूहड़ा जाति में हुआ था। उनका जीवन अत्यंत गरीबी, अपमान, और सामाजिक बहिष्कार से भरा रहा, जिसका वर्णन उन्होंने 'जूठन' में अत्यंत मार्मिकता और सच्चाई से किया है।

'जूठन' शब्द प्रतीक है उस अपमानजनक भोजन का, जो दलितों को बड़े घरों से बचा-खुचा मिलता था। इस आत्मकथा का उद्देश्य केवल आत्मकथात्मक लेखन नहीं है, बल्कि यह वर्ण व्यवस्था, ब्राह्मणवाद, और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध भी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अन्याय, तिरस्कार, अमानवीयता, जातिगत भेदभाव, अपमान, दलित संघर्ष, शोषण, मानसिक यातना, सामाजिक चेतना।

Discussion / चर्चा

4.4.1 दलित जीवन का दस्तावेज़

दलित आत्मकथा उपन्यास के क्रम में एक विकास है। दलित उपन्यास तथा आत्मकथा दोनों आत्मकथात्मक शैली में होते हैं किन्तु आत्मकथा में संवेदना के व्यापक अवसर होते है। आत्मकथा और उपन्यास दोनों भिन्न साहित्यिक विधाएँ है जिनकी अलग-अलग शैली है। आत्मकथा बुनियादी तौर पर वैयक्तिक जीवन का ईमानदारी से प्रस्तुतीकरण है। हिन्दी में सबसे पहले भगवान दास की आत्मकथा 'मैं भंगी हूँ' प्रकाशित हुई लेकिन यह आत्मकथा वैयक्तिक न होकर आर्थिक सामाजिक योग्य है। हिन्दी में दो महत्वपूर्ण आत्मकथाओं मोहनदास नैमिशराय के "अपने-अपने पिंजरे', तथा ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'जूठन' का दबदबा बढ़ा है। वैसे सृजनात्मक आत्मकथा लेखकों में उपर्युक्त दोनों लेखकों के अतिरिक्त कौशल्या वैसंत्री, श्योराज सिंह बेचैन, कुसुम वियोगी, सूरज पाल चौहान, के नाम उल्लेखनीय हैं। अपनी आत्मकथा 'जूठन' के सृजन प्रक्रिया के बारे में ओमप्रकाश जी कहते है- इन अनुभवों को लिखने में कई प्रकार के खतरे थे। एक लम्बी जद्दोजहद के बाद मैंने सिलसिलेवार लिखना शुरु किया। तमाम, कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताड़नाओं को लेकर एक बार फिर जीना पड़ा, उस दौरान गहरी मानसिक यंत्रणाएँ मैंने भोगी। स्वयं को परत दर परत उधेड़ते हुए कई बार लगा- कितना दुःखदायी है यह सब कुछ लोगों को यह अविश्वसनीय और अतिरंजनापूर्ण लगता है।'

▶ दलित आत्मकथा "जूठन' में लेखक ने अपने दर्द और संघर्ष को ईमानदारी से लिखा

डेढ़ सौ पृष्ठों में वाल्मीकि ने अपने जीवन के करीब चालीस पैंतालीस वर्षो की कथा कही है लेकिन कहने की शैली इतनी मार्मिक और संवेदनशील है कि पाठक के मर्म को सहज ही स्पर्श कर लेती है लेखक की वर्णन क्षमता में अद्भुत आकर्षण है, यद्यपि यह सर्जनात्मकता ज्यादातर जीवन के कुरूप और क्रूर पक्षों का उद्घाटन करती है। 'जूठन' का आरम्भ बरला गाँव की डब्बोवाली जोहड़ी वर्णन से शुरु होता है और यह वर्णन ऐसा है कि कई संभ्रान्त पाठक इस से बिदक सकते हैं। गाँव के चूहड़ों के घर जहाँ बने बनाए गये हैं, उसके पीछे गाँव भर का खुला शौचालय है जिसमें गाँव भर की औरतें नित्य कर्म से खुले में निवृत होती है। 'चारो तरफ' गन्दगी भरी होती थी, दुर्गन्ध ऐसी कि मिनट भर में साँस घुट जाये।

▶ वाल्मीकि ने दलित जीवन की दर्दनाक, संवेदनशील और सजीव कहानी बयां की है

इस प्रतिष्ठित हिन्दी लेखक के बचपन के दिनों का यह पर्यावरण है, जिसके बारे में खुद वाल्मीकि ने लिखा है- इस माहौल में यदि वर्ण व्यवस्था को आदर्श-व्यवस्था कहने वालों को दो चार दिन रहना पड़ जाये तो उनकी राय बदल जायेगी। असल में भारत में ब्राह्मणवादी जाति-व्यवस्था के समर्थक और उसे परिचालित करने वाली सत्तासीन शक्तियाँ ऐसी ढीठ या शातिर है कि उन्हें ऐसी जगहों पर कभी कोई रख नहीं सकेगा। अलवत्ता उनके पास ऐसे माहौल को न्यायोचित 'हराने के लिए मनुस्मृति जैसे

▶ जातिवाद की क्रूरता और असमानता को 'जूठन' प्रामाणिक रूप से दिखाती है

विचारात्मक आधार हैं जिसके बल पर वे शूद्रों की इस दशा को उनके पिछले कर्मों का दण्ड मानकर उसे उचित ही 'हराते हैं। जो लोग सचमुच इन परिस्थितियों से अनजान है उनका मत बदलने के लिए तो जूठन जैसी आत्मकथाएँ भी पर्याप्त हैं। जो लोग संवेदनशील है जिनमें ज़रा सी भी मानवीयता बची है, वे ऐसी आत्मकथाओं की सामायिक यथार्थ के प्रामाणिक दस्तावेज़ के रूप में ग्रहण करेंगे।

▶ दलित बच्चों को जातिगत अपमान और यातनाओं के बीच शिक्षा मिलती है

बरला गाँव त्यागी ज़मींदारों की सामाजिक सत्ता द्वारा परिचालित है जिसमें दलित चूहड़े चमारों के हिस्से में सिवाय अपमान और मेहनत, मजदूरी के और कुछ नहीं है। इसी गाँव में रहते हुए वाल्मीकि के पिता ने वाल्मीकि को स्कूल में दाखिल कराने की हिम्मत की। उसी स्कूल में चमार और झीवर जाति का भी एक लड़का दाखिल था। इन सब बच्चों को स्कूल शिक्षा के दौरान किन-किन यातनाओं से गुजरना पड़ा, उसका जूठन में मार्मिक वर्णन है।

▶ दलितों पर अपमान, बेगार और जूठन के दर्दनाक अनुभव 'जूठन' में दर्शाए गए

ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन' मे गाँव के पूरे जीवन की स्थितियों पर जहाँ दलित बच्चों से यातनादायी व्यवहार होता है, घरो में भी उच्च जाति के ज़मींदार इन दलितों को वर्षों से बेगार करवाने के बाद भी क्या सलूक करते है, इन सबका यथार्थ चित्रण उकेरा है। 'जूठन' शीर्षक इस आत्मकथा को क्यों दिया गया इसका भी मार्मिक वर्णन लेखक ने किया है। बड़े घर के ब्याह शादियो में दलितों द्वारा बेगार लिए जाने के बाद उन्हें समुचित खाना भी न दिया जाता था,बदले वे बारातियों और घरातियों की पत्तलो में छोड़ी 'जूठन' को भी चटखारे से खाते थे। वाल्मीकि की माँ अपमान जनक परिस्थितियों में दी गई जूठन को जमींदार के लाचने फेंक आती है और वह घर जूठन के रिवाज़ से मुक्त हो जाता है।

▶ दलितों के अपमानजनक रीति-रिवाजों का विरोध कर लेखक ने सुधार किया

उत्तर प्रदेश के गाँवों में दलितों का हर स्तर पर अपमान होता है। दलित लड़की ब्याहने आते दामाद को उच्च जाति के परों में घुमाकर उसके लिए शगुन आदि मांगा जाता है और बड़े अपमान जनक ढंग से उच्च जाति के पुरुष और स्त्रियों उसकी झोली में कुछ सिक्का आदि फेंक देते हैं। वाल्मीकि ने संवेदनशील तथा शिक्षा से सजग मन से इस अमानवीय प्रथा का भी अपने परिवार में अन्त करवाया और बाद में पूरे ही गाँव में भी।

▶ वाल्मीकि ने सामाजिक बदलाव और शिक्षा से दलितों की स्थिति सुधार दर्शाई

ओमप्रकाश वाल्मीकि की इस आत्मकथा में केवल परिस्थिसियों के यथार्थ का चित्रण ही नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की जबरदस्त चेतावनी भी है। भले ही अत्यन्त अपमान जनक जीवन झेलकर ही वाल्मीकि या उसके जैसे लोगों को शिक्षा प्राप्त करनी पड़ी लेकिन इसी शिक्षा से उन्हें नौकरी भी मिली। वाल्मीकि ने ऐसी त्यागी चौधरियों का चित्रण किया है जो बचपन में उन्हें चूहड़ा कह अपमानित करते थे। उनसे छूने से घृणा करते थे। वाल्मीकि के नौकरी में अच्छी स्थिति में पहुँचने पर वे उनके घर भी गये और उनके हाथ का खाना खाया। संवेदना की प्रखरता के साथ आत्मकथा की शैली भी आकर्षक है उसमें आत्मकथा जैसा रस है।'

SGOU

'जूठन' में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने वेदना की मर्म भरी परिस्थितियों का ज़िक्र किया है- अस्पृश्यता का ऐसा माहौल कि कुत्ते, बिल्ली, गाय, भैंस को छूना बुरा नहीं था लेकिन यदि चूहड़े का स्पर्श हो जाये तो पाप लग जाता था। सामाजिक स्तर पर इन्सानी दर्जा नहीं था वे सिर्फ ज़रूरत की वस्तु थे, काम पूरा होते ही उपयोग खत्म। इस्तेमाल करो दूर फेंको।'

▶ 'जूठन' में दलितों की स्पृश्यता और अमानवीय अपमान की वेदना दर्शाई गई

ऊपर की पंक्तियों में अपने सामाजिक परिवेश की विडंबना का जो मर्मस्पर्शी चित्र है वह किसी भी पाठक को द्रवित कर देता है। लेखक मौसम की विडंबना का दुःखमय तथा दर्द भरा चित्र भी प्रस्तुत करता है- बरसात के दिन नर्क से कम नहीं थे। गलियों में कीचड़ भर जाता था, जिससे आना-जाना कठिन हो जाता था। कीचड़ में सुअरों की गन्दगी भरी होती थी जो बारिश रुकने के बाद गंधियाने लगती थी मक्खी मच्छर तो ऐसे पनपते थे जैसे टिड्डे दल महीनों रास्तों में कीचड़ और पानी भरा रहता था। पानी से निकलकर स्कूल जाना पड़ता था। हमारी वस्ती के इर्द-गिर्द जोहड़ ज्यादा थे। उनका पानी गलियों में भर जाता था। बरसात के दिनो में लम्बे-लम्बे कीड़े हो जाते थे। उस पानी को पीना मजबूरी थी। तगाओ के कुएँ में से हमें पानी लेने का अधिकार नहीं था।

▶ बारिश में दलितों की जीवन कठिन, गंदगी, कीचड़ और पानी से जुड़ी परेशानियाँ

लेखक का अध्यापक उससे किस प्रकार का व्यवहार करता था इसका भी उदाहरण लेखक ने दिया है-

अबे चूहड़े के मादर चोद कहाँ घुस गया अपनी माँ -जा लगा पूरे मैदान में झाड़ू नहीं तो गांड में मिर्ची डाल के स्कूल के बाहर काढ़ दूँगा - अबे साले चूहड़े की औलाद जब मर जायेगा बता देना। बहुत हीरो चूहड़े के तू द्रोणाचार्य से अपनी बराबरी करे है ले तेरे ऊपर मैं महाकाव्य लिखूँगा

ऊपर की पंक्तियों का स्वर अन्याय तिरस्कार और अमानवीयता को रेखांकित करता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' ने उपन्यासों को जैसे बहिष्कृत सा कर दिया है। यह ऐसी आत्मकथा है जो अपनी शैली से दलित उपन्यासों को पराजित करती है दलित रचनाकारों की रचनात्मकता आत्मकथाओं में उपन्यासों की अपेक्षा व्यापक है। इस व्यापकता का कारण है आत्मकथा में अभिव्यक्ति की छूट और व्यापक अनुभव का यथार्थ।

▶ अत्याचार, तिरस्कार और अमानवीयता की गहन अभिव्यक्ति, दलित आत्मकथा की ताकत।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' उनके बचपन से लेकर नौकरी मिलने तक के जीवन अनुभवों का मार्मिक चित्रण है। इस आत्मकथा में उन्होंने एक दलित बालक के रूप में झेले गए अपमान, जातीय भेदभाव, गरीबी और सामाजिक अन्याय को ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। गाँव में चूहड़ा जाति में जन्म लेने के कारण उन्हें न केवल स्कूल में बल्कि समाज में हर जगह अपमान का सामना करना पड़ा। शिक्षा प्राप्त करना उनके लिए आसान नहीं

था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। 'जूठन' सिर्फ उनके जीवन की कहानी नहीं है, बल्कि पूरे दलित समाज की पीड़ा और संघर्ष की आवाज़ है। इसमें बताया गया है कि कैसे ऊँची जातियाँ दलितों को इंसान नहीं, बल्कि इस्तेमाल की चीज़ उपकरण समझती थीं। यह आत्मकथा सामाजिक असमानता को उजागर करती है और बदलाव की उम्मीद भी जगाती है। सरल, सच्ची और संवेदनशील भाषा में लिखी यह रचना पाठकों को गहराई से झकझोर देती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'जूठन' एक आत्मकथा होते हुए भी सामाजिक परिवर्तन का दस्तावज़ कैसे बनती है? विश्लेषण कीजिए।
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि के जीवन अनुभवों के माध्यम से "जूठन' में वर्ण व्यवस्था की क्रूरता को कैसे चित्रित किया गया है?
3. 'जूठन' के माध्यम से दलित आत्मकथा और दलित उपन्यास में क्या अंतर स्पष्ट होता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. लेखक द्वारा वर्णित शिक्षा, नौकरी और सामाजिक परिवर्तन के माध्यम से दलित समाज की स्थिति में क्या बदलाव दिखता है?
5. आत्मकथा में प्रयुक्त भाषा और शैलीगत विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - शरणकुमार,लिम्बाले - वाणी प्रकाशन, 2020.
2. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - ओमप्रकाश, वाल्मीकि - 11वीं हार्डकवर संस्करण, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.
3. आधुनिकता के आइने में दलित - दुबे, अभय कुमार - वाणी प्रकाशन, 2014.
4. दलित विमर्श की भूमिका - भारती, कँवल - इतिहासबोध प्रकाशन, 2004.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. दलित साहित्य के प्रतिमान - एन सिंह
2. दलित चिंतन के विकास - धर्मवीर
3. यथार्थवाद और हिन्दी दलित साहित्य - सर्वेश्वर कुमार मौर्य
4. दलित कविता के संघर्ष - कंवल भारती
5. साहित्य का नया सौन्दर्यशास्त्र - देवेन्द्र चैबे

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-I

POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS

M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
FOURTH SEMESTER
M23HD05DE
दलित अस्मिता और हिन्दी साहित्य

CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours | Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. 'दलित' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ लिखिए।
2. दलित साहित्य की एक प्रमुख विशेषता बताइए।
3. डॉ. अंबेडकर को 'दलितों का मसीहा' क्यों कहा जाता है?
4. दलित पैंथर आंदोलन की स्थापना कब हुई थी?
5. 'घुसपैठिये' कहानी के लेखक कौन हैं?
6. कविता 'ठाकुर का कुआँ' का मुख्य विषय क्या है?
7. आत्मकथा 'जूठन' का लेखक कौन है?
8. अमेरिकन नीग्रो साहित्य और दलित साहित्य में एक समानता लिखिए। (5×2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. दलित साहित्य के प्रेरणा स्रोतों की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।
10. दलित साहित्य और बौद्ध विचारधारा का संबंध स्पष्ट कीजिए।
11. दलित साहित्य और मार्क्सवादी विचारधारा में अंतर्संबंध बताइए।
12. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सलाम' की संक्षिप्त समीक्षा कीजिए।
13. दलित साहित्य और नीग्रो साहत्य की तुलना कीजिए।।
14. जयप्रकाश कर्दम की कहानी 'नो बार' का सारांश लिखिए।

SGOU

15. श्योराजसिंह बेचैन की कविता 'लड़की ने डरना छोड़ दिया' का आशय लिखिए।

16. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता 'बस्स बहुत हो चुका' में निहित विद्रोही स्वर की चर्चा कीजिए।

17. दलित आत्मकथा 'जूठन' के नामकरण की यथार्थता स्पष्ट कीजिए। (6×5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

18. दलित साहित्य में वेदना, नकार और विद्रोह के स्वर का विस्तार से विवेचन कीजिए।

19. डॉ.बाबा साहेब अंबेडकर के विचार और दलित साहित्य के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालिए।

20. सत्यप्रकाश की कहानी 'दलित-ब्राह्मण' को सामाजिक दृष्टि से विश्लेषित कीजिए।

21. ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' दलित जीवन का दस्तावेज़ है सिद्ध कीजिए।

(2×15 = 30 Marks)

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....

Name : …….....

Model Question Paper- Set-II

POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS

M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
FOURTH SEMESTER
M23HD05DE
दलित अस्मिता और हिन्दी साहित्य

CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours | Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. दलित साहित्य पर लगाया जाने वाला एक प्रमुख आक्षेप लिखिए।
2. दलित साहित्य की भाषा की एक विशेषता बताइए।
3. मार्क्सवाद का संक्षिप्त अर्थ लिखिए।
4. 'आवाज़ें' कहानी के लेखक कौन हैं?
5. कविता 'गूँगा नहीं था मैं' किस कवि की रचना है?
6. आत्मकथा 'जूठन' किस वर्ष प्रकाशित हुई? और रचनाकार कौन है ?
7. दलित साहित्य के प्रमुख लेखकों के नाम लिखिए ।
8. ब्लैक समीक्षा और दलित समीक्षा में एक समानता लिखिए। (5×2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. दलित साहित्य के स्वरूप और लक्ष्य का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
10. डॉ. अंबेडकर और बौद्ध साहित्य का संबंध लिखिए।
11. भारतीय समाज व्यवस्था में मार्क्स की कमियों पर टिप्पणी लिखिए।
12. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'घुसपैठिये' का सारांश लिखिए।
13. जयप्रकाश कर्दम की कविता 'ठाकुर का कुआँ' में अभिव्यक्त दलित समस्या पर टिप्पणी लिखिए ।
14. श्योराजसिंह बेचैन की कविता 'लड़की ने डरना छोड़ दिया' में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता पर विचार कीजिए।

15. मोहनदास नैमिशराय की कविता 'झाड़ू और कलम' का आशय लिखिए।

16. हिन्दी दलित आत्मकथाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

17. दलित साहित्य के सौंदर्य मूल्य के रूप में स्वतंत्रता की भूमिका स्पष्ट कीजिए। (6×5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

18. दलित साहित्य और मार्क्सवाद के अंतर्संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

19. डॉ.अंबेडकर और दलित पैंथर आंदोलन का दलित साहित्य पर प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

20. मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'आवाज़ें' में चित्रित दलित चेतना पर विचार प्रकट कीजिए।

21. दलित कविताओं की विशेषताएं लिखिए । (2×15 = 30 Marks)

SGOU

NO TO DRUGS

തിരിച്ചിറങ്ങാൻ പ്രയാസമാണ്

SGOU

ആരോഗ്യ കുടുംബക്ഷേമ വകുപ്പ്, കേരള സർക്കാർ

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

दलित अस्मिता और हिन्दी साहित्य

Course Code: M23HD05DE

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

ISBN 978-81-990686-5-0

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841